दक्षिण अफ्रीका में धर्मोदय

(द.अ. में आर्य समाज के प्रचार का इतिहास)

Religious Awakenaing in South Africa

लेखक

पं. नरदेव वेदालंकार

(सभापति- हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल)

भूमिका लेखक

पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय, एम.ए.

(मन्त्री- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

प्रकाशक : वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Website : www.thearyasamaj.org
E-mail : aryasabha@yahoo.com

नवीन संस्करण : 2016

मूल्य : 100/-

प्रकाशक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (रजि.)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Website : www.thearyasamaj.org
E-mail : aryasabha@yahoo.com

elibrary.thearyasamaj.org

विषय सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
भूमिका	पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय	3.
प्रस्तावना	मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा नाताल	8.

1. हिन्दुओं की प्रारम्भिक दशा तथा प्रथम संदेशवाहक
   प्रो. भाई परमानन्दजी एम. ए. ....16–22.
2. जागृति के अग्रदूत: स्वामी शंकरानन्द जी ....23–34.
3. स्वामी भवानी दयालजी तथा प्रारम्भ के दूसरे प्रचारक ....35–45.
4. ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी तथा आर्य
   प्रतिनिधि सभा की स्थापना ....46–52.
5. आर्य प्रतिनिधि सभा; परिषदें और सम्मेलन ....53–60.
6. आर्य प्रतिनिधि सभा: वेद मंदिर तथा विविध कार्य.... 61–71.
7. आर्य समाज और हिन्दुओं की धार्मिक तथा
   सामाजिक दशा ....72–78.
8. शिक्षा तथा मातृभाषा ....79–87.
9. पिछले आर्य प्रचारक ....88–105.
10. आर्य युवक सभा तथा आर्य अनाथाश्रम, डरबन ... ...106–118.
11. डरबन की आर्य संस्थाएं ....119–146.
12. नाताल प्रांत की शेष आर्य संस्थाएं ....147–167.
13. आर्य जीवन चरित्रावली ....168–200.
14. उपसंहार ....201–209.

elibrary.thearyasamaj.org

–: विचार :–

''प्राचीन आर्य धर्म को अपनी स्वाभाविक पवित्रता में शुद्ध करने वाली आग की भट्ठी एक थी– वह भट्ठी 'आर्य समाज' कहलायी। वह आग भारत वर्ष के एक परम योगी ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त ऋषि दयानन्द के हृदय में प्रकाशित हुई।''

–एंडरू जेक्सन डेविस– (वियोंड दी वेली पृ. 383)

''महर्षि दयानन्द का लिखा हुआ 'सत्यार्थ प्रकाश' आज शिक्षित और अशिक्षित, नगरवासी या ग्राम निवासी सभी हिन्दुओं की अपनी बाईबिल है।''

– रंगा ऐयर–(फादर इण्डिया पृ. 119)

''जैसे–जैसे मैं प्रगति करता जाता हूं, मुझे ऋषि दयानन्द के चरणारविंद दिखायी देते हैं।''

–महात्मा गांधी

'' यदि यह महर्षि भारत में पैदा न होते तो आज हमें महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय के दर्शन न होते।''

– खदीजा बेगम

''यदि 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति का मूल्य 1000 रुपये होता, तो भी मैं अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर उसे खरीदता। इस ग्रंथ को मैंने ग्यारह बार बड़े ध्यान से पढ़ा है और हरबार मुझे उसमें से नयी प्रेरणा और नये विचार मिले हैं।''

–पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, एम.ए.

elibrary.thearyasamaj.org

–: भूमिका :–

लेखक पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय, एम.ए.

(मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

मेरे लिये यह सौभग्य की बात हुई कि मैं आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की रजत जयंती में, जोकि फरवरी 1950 के मध्यम हो रही है, भाग लेने के लिये डरबन पहुंच गया और प्रतिनिधि सभा की ओर से इस मौके पर प्रकाशित होने वाली दक्षिण अफ्रिका में आर्य धर्म के प्रचार के इतिहास में अपना तुच्छ हिस्सा दे सका। यद्यपि यह प्राक्कथन है परन्तु मैंने इसे पुस्तक के कई मुद्रित पृष्ठ पढ़कर तथा मेरे विद्वान् मित्र पं. नरदेव जी वेदालंकार से कई हस्त लिखित पृष्ठ सुनकर लिखा है।

यह इतिहास सिर्फ सभा के जन्मकाल 1925 के बाद ही प्रवृत्तियों का ही विवरण नहीं है। अपितु उससे भी पूर्व की दो दशाब्दियों का इतिहास इसमें है, जिन दिनों मैं आर्य समाज के प्रारम्भिक प्रचारकों ने यहां प्रशंसनीय कार्य किया है। भाई परमानन्द, स्वामी शंकरानन्द, स्वामी मंगलानंद पुरी, श्री प्रवीण सिंहजी, डॉ. भगतराम सहगल तथा दूसरे कई प्रचारकों ने इस सुदूर प्रदेश में आर्य समाज का बीजारोपण किया था। वे लोग आर्य जगत् के तथा सम्पूर्ण हिन्दू समाज के प्रशंसापात्र हैं। क्योंकि उन्होंने इस प्रदेश के अपने हिन्दू भाईयों की दु:खद् अवस्था पर सबका ध्यान खींचा है और साथ ही उन्हें क्रियाशील भी बनाया है।

इस प्रदेश के प्रथम प्रवासी अशिक्षित मजदूर थे। वे सन् 1860 में 'शर्तबन्ध मजदूर' बनकर यहां पर यूरोपियन लोगों की गन्ने की खेती करने आये थे। ब्रिटिश सरकार को, जिसके अधीन उस समय भारत वर्ष था, यहां के गोरों की ही ज्यादा चिन्ता थी। भारतीय लोग यहां पर सिर्फ विषम परिस्थिति में लाये ही न गये बल्कि इस रूप से रखे गये कि समय गुजरते उनकी बुरी तरह से सामाजिक और नैतिक गिरावट हुई। वे अपना धर्म भूल गये। वे अपने व्रत और त्यौहार भूल गये। अपने सामाजिक रिवाज भूल बैठे और अपनी भाषा भी खो बैठे। वे या तो ईसाईयत या इस्लाम को अंगीकार करने लगे या दु:खद जीवन जीने को छोड़ दिये गये। मातृभूमि से उनका सम्बन्ध टूट गया। उनको यह बताने वाला कोई न था कि भारत में मजदूर वर्ग भी उच्च नैतिकता रखते हैं। इस प्रवासी मजदूरों की संतानें अपने पूर्वजों के धर्म को न जानकर तथा अपने रीतिरिवाजों एवं त्योहारों को भूलकर इस्लाम की ताजिया परस्ती की तरफ और विदेशी संस्कृति के प्रभाव की तरफ धीमे-धीमे झुक गयीं। इस परिस्थिति को सुधारने का काम आर्य समाज के प्रारम्भिक प्रचारकों पर आ पड़ा। उन्होंने यहां पर हिन्दू सभा या आर्य समाज की नींव डाली। परन्तु यहां वास्तविक कार्य तो समाज के उन कार्यकर्ताओं ने किया जो यहां सदा के लिये बस चुके थे। इनमें स्वामी भवानी दयाल जी मुख्य हैं। स्वामी जी दक्षिण अफ्रिका में किये हुए अपने सामाजिक, धार्मिक और भलाई के कामों के लिये भारत वर्ष में भी ख्याति पा चुके हैं इनके अलावा पिछले काल के आर्य प्रचारकों ने भी यहां पर आर्य धर्म को पुनरुजीवित

करने के लिये अच्छा प्रयत्न किया है। जिनमें मुख्य प्रचारकों के नाम ये हैं- प्रो. रलाराम एम.ए., वैदिक मिशनरी जैमिनी मेहता, योगी प्रो. यशपाल, बड़ौदा आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राएं व पं. आनन्दप्रिय, पं. ऋषिराम तथा पं. नरदेव वेदालंकार आदि।

मैं इस देश में अभी नया ही हूं और दो सप्ताह में यहां के विषय में बहुत कम जान सका हूं। फिर भी मैं यह कह सकता हूं कि यहां की आर्य प्रतिनिधि सभा के आधार स्तंभ श्री सत्यदेव हैं। उनके भारी व अनथक परिश्रम का यह फल है कि सभा ने तथा अन्य आर्य संस्थाओं ने इतनी अधिक प्रगति की है। उन्हें आर्य समाज में अपार श्रद्धा है। स्वामी दयानन्द के इस श्रद्धालु भक्त ने समाज की प्रगति के लिये कोई कसर उठा नहीं रखी है। अपनी श्रद्धा और अपने उत्साह से उन्होंने यहां सम्मानास्पद स्थान पर लिया है। इन थोड़े से दिनों में डरबन के आर्य समाज के कुछ ही कार्यकर्ताओं और हितैषियों का परिचय पा सका हूं। पर मैं कह सकता हूं कि दक्षिण अफ्रिका में उनकी कमी नहीं है और आर्य समाज का भविष्य अच्छे हाथों में है। उनमें से कुछ के नाम ये हैं- श्री एस.एल. सिंह, श्री सुखराज छोटई, श्री बी. एम. पटेल, डॉ. एन. पी. देसाई, श्री बी. परमेश्वर, श्री एम. मुन्नू, श्री गोवन भाई मणि भाई, श्री बी. गोविंद, श्री आर. खरपत, पं. नैनाराज आदि। यह नामावली अधूरी है। कई महत्त्व के नाम छूट गये होंगे। उसके लिये मैं उनकी क्षमा चाहता हूं। मैं कई नवयुवकों के परिचय में भी आया हूं। विशेषकर आर्य युवक सभा के सदस्य, जिनसे अच्छी उम्मीद रखी जा सकती है।

भारतवर्ष से योग्य और पूर्ण मार्ग दर्शन बिना, यहां का कार्य जैसे संतोषजनक ढ़ंग से किया जाना चाहिये था वैसा नहीं हो सका है। आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयत्न कर रही है और स्थानीय प्रचारक तैयार करने को उद्यत है, यह आशास्पद चिन्ह है। सभा को ऐसा ही करना चाहिये। इसमें कोई कठिनाई भी नहीं है। सामर्थ्य तो है ही। पद्धति पूर्वक कार्य बढाने की जरूरत है। इसका यह मतलब न लिया जाये कि आर्य जगत् की केन्द्रीय संस्था आर्य सार्वदेशिक सभा, दिल्ली अपने उत्तरदायित्व से मुक्त है। अपने नाम को सार्थक करने के लिये यह तो सभा का परम कर्त्तव्य है कि वह संसार के सभी भागों में वैदिक धर्म का प्रचार कराये। मैं दक्षिण अफ्रिका के अपने मित्रों को विश्वास दिलाता हूं कि सभा अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीन नहीं है। पर उसके मार्ग में मुसीबतें कई हैं। उसके साधन बहुत अल्प हैं और कार्य की जटिलता अपार है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये करने के तात्कालिक कार्य ये हैं:-

(1) विशाल सभा भवन का निर्माण करना।

(2) स्थानीय आवश्यकता के अनुकूल आर्य समाजिक साहित्य का प्रकाशन और उसका प्रचार करना।

(3) जूलू और दूसरे अफ्रिकन लोगों के साथ संसर्ग बढ़ाने के लिये स्थायी समिति बनाना।

(4) हिन्दी के कार्य को वेग देना।

(5) हिन्दू समाज के विभिन्न अंगों में सहयोग पैदा करना।

(6) दलित हिन्दू वर्ग को शिक्षित करके उनके साथ सामाजिक सम्बन्ध जोड़ करके तथा मुसीबत और जरूरत के वक्त उन्हें मदद पहुंचाकरके विधर्मी प्रभाव से बचाना।

(7) शिक्षा और धार्मिक प्रचार के द्वारा हिन्दू जीवन के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाना।

इस समय सभी वर्ग और सभी विभागों के हिन्दुओं में जागृति नज़र आती है और यह आशा है कि आर्य प्रतिनिधि सभा को सबकी तरफ से योग्य मान्यता और आवश्यकता प्रोत्साहन मिलेगा। क्योंकि हिन्दू समाज को जिन अनगिनत सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अवगुणों ने ग्रस लिया है उनका उन्मूलन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार से और स्वामी दयानन्द के निर्दिष्ट कार्यक्रम के द्वारा ही किया जा सकेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा पर परमात्मा की अपार कृपा हो।

डरबन : 18.जनवरी 1950 **गंगा प्रसाद उपाध्याय**

elibrary.thearyamantavya.com

–: प्रस्तावना :–

(मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल का वक्तव्य)

15 फरवरी 1950 के दिन आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की स्थापना के 25 वर्ष समाप्त होते हैं। इस अवसर पर सभा की रजत जयन्ती मनाने के लिये सभा की मुख्य समिति में ता. 29 अगस्त 1949 को निर्णय हुआ। इस शुभ अवसर पर सभा ने निम्नलिखित कार्यो को करने का निश्चय किया :–

1. दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार के इतिहास का प्रकाशन।

2. वेद मन्दिर के निर्माण के लिये 10 हजार पौंड के दान का अभिवचन देने वाले सभा के उदार हृदय प्रधान आर्य सज्जन श्रीमान आर. बोधासिंह के शुभ हस्तों से वेद मन्दिर की आधारशिला रखना।

3. आर्य सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के प्रधान मंत्री पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. को इस शुभ अवसर पर निमंत्रित करना।

4. दक्षिण अफ्रिका की आर्य सामज की समस्त संस्थाओं में जागृति लाना और प्रचार को वेग देना।

5. आर्य वीर दल को संगठित करना और सेवाव्रत का पालन करना।

6. जयंती के महोत्सव पर शानदार जुलूस निकालना, सम्मेलन

elibrary.thearyasamaj.org

और परिषदों का आयोजन तथा महायज्ञ आदि करना।

इनमें प्रथम कार्य आर्य समाज के प्रचार के इस इतिहास को प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष होता है। ऐसा एक इतिहास प्रकाशित करने का एक प्रयत्न सन् 1930 में भी हुआ था। तब इस देश में आर्य समाज के प्रथम सन्देश वाहक भाई परमानन्दजी के शुभागमन को 25 वर्ष होते थे। उसकी स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज के प्रचार का इतिहास छपवाने का निर्णय किया था। जिससे मैंने यह इतिहास लिखकर भारतवर्ष में छपने के लिये आगरा भेज दिया था। वहां वह छपकर तैयार हो गया था और सब पुस्तकें बम्बई आ पहुंची थीं। परन्तु उस समय यहां विदेशी वस्तुओं की होली जलायी जा रही थी। इन पुस्तकों को भी विदेशी के भ्रम में जला दिया गया। सारा प्रयत्न व व्यय निरर्थक गया। इसी से रजत जयन्ती के अवसर पर यह इतिहास फिर से लिखवाकर प्रकाशित किया जा रहा है।

यह सिर्फ आर्य प्रतिनिधि सभा का ही इतिहास नहीं है। प्रतिनिधि सभा की स्थापना, उसके सम्मेलन तथा उसके विविध कार्यों के इतिहास के साथ ही आप इसमें दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के आगमन से लेकर आज तक की धार्मिक, सांस्कृतिक, शिक्षा-विषयक तथा सामाजिक प्रवृत्तियों को देख सकेंगे। यहां पर आये हुए हिन्दुओं की प्रारम्भिक दशा कैसी थी, वे किस रूप में आये। आने के बाद भी ज्ञान, शिक्षा और प्रचार के अभाव में उनकी कैसी दुर्दशा होती गई। फिर उस स्थिति में प्रो. भाई परमानन्दजी, स्वामी शंकरानन्द जी, स्वामी भवानी दयालजी तथा

अन्य प्रचारकों के कार्यों ने कैसा परिवर्तन कर दिया, यह आप इसमें पढ़ सकेंगे।

प्रतिनिधि सभा की स्थापना के बाद उसके अन्तर्गत रहकर प्रचार कार्य करने वाले डॉ. भगतराम सहगल, योगी प्रो. यशपाल तथा आर्य कन्या महाविद्यालय, बड़ौदा की छात्राओं के प्रचार कार्य को एवं साथ ही प्रो. रलाराम, पं. ऋषिराम, पं. जैमिनी मेहता, पं. नरदेव वेदालंकार आदि के प्रचार कार्य को भी आप इसमें पावेंगे। यहां के हिन्दुओं की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति कैसी है; उनके त्योहार,उनके संस्कार, उनकी शिक्षा, उनके मातृभाषा हिन्दी के प्रचार के प्रयत्न, उसमें होने वाले धर्म परिवर्तन आदि के विविध प्रश्नों को आप इस पुस्तक में देख सकेंगे और देख सकेंगे कि इन प्रवृत्तियों के पीछे आर्य समाज का कितना बड़ा हाथ रहा है।

यह सारा कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा तथा उसमें सम्मिलित आर्य संस्थाओं द्वारा हुआ है। उन विभिन्न आर्य संस्थाओं के प्रयत्नों का संक्षिप्त इतिहास भी पृथक् रूप से दिया गया है। साथ ही जिन आर्य सज्जनों ने आर्य समाज के कार्यों में अपनी अमूल्य सेवाएं दी हैं उनकी संक्षिप्त जीवनियां भी इसमें दी गई हैं। जिससे भावी संतति अपने पूर्वजों के जीवन से शिक्षा ग्रहण कर सके।

सबसे अन्त में पुस्तक के विद्वान लेखक पं. नरदेव वेदालंकार ने 'उपसंहार' में अपने विचार प्रकट किये हैं। वे यहां पर दो साल तक रह चुके हैं। इससे उन्होंने आर्य संस्कृति, भारतीय सभ्यता और हिन्दू जीवन परम्परा की रक्षा के लिये एवं प्रगति के लिये जो विचार उपस्थित किये हैं हम उनकी ओर से सभी पाठकों का ध्यान

खींचना चाहते हैं और चाहते हैं कि उन पर शीघ्र से शीघ्र अमल किया जावे। जिससे इस देश में हम अपने धर्म और जाति के गौरव को शीघ्र ही स्थापित कर सकें।

इस इतिहास को जनता के हाथ में रखते हुए हम भी अपने अनुभवों के आधार पर निम्नलिखित बातों की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं:-

(1) प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत एक या दो विद्वान् प्रचारक पुरुष और स्त्री स्थायी रूप से वेतन पर रख जावें। जिसके द्वारा सदा प्रचार कार्य होता रहे।

(2) सभा में सम्मिलित संस्थाओं को पूर्ण सहयोग दिया जाना चाहिये तथा उनका निरीक्षण होना चाहिये। सम्मिलित संस्थाओं को प्रगतिशील और उन्नत बनाना चाहिये। संस्थाओं के कार्यों में स्थानीय जनता कम रस लेती है। कई पाठशालाएं अभी कर्ज से मुक्त नहीं हो सकी हैं। ऐसे प्रयत्न होने चाहिये जिससे लोग उनमें अधिक रस लेने लगें और उनका अच्छा सहयोग प्राप्त हो सके।

(3) सम्मिलित संस्थाओं की उन्नति के लिये स्त्री समाज, स्त्री पाठशाला, भजन मंडल, वीर दल आदि स्थापित करके कार्य को व्यापक बनाना चाहिये।

(4) षोडश संस्कारों के प्रचार और त्योहारों के मनाने पर जोर दिया जाना चाहिये।

(5) दोनों समय पारिवारिक संध्या, हवन तथा साप्ताहिक सत्संग पर सभी आर्यों को ध्यान देना चाहिये। संध्या के संस्कृत मंत्रों के अर्थ विभिन्न भाषाओं में हों। इस प्रकार संध्या के द्वारा

विश्व के आर्यों का संगठन हो सकेगा।

(6) भारतीय शिष्टाचार और रीति रिवाजों पर सबका ध्यान आकर्षित करना चाहिये। हमारे रहने, उठने, बैठने तथा मिलने के व्यवहारों में भारतीय रीतियों का अवलम्बन करना चाहिये। बहुधा देखा गया है कि लोग गुडमोर्निंग, शेकहेंड या सलाम करने में नहीं हिचकते पर दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करने में झिझकते हैं। हमें अपनी भारतीय जीवन परम्पराएं, कायम चाहिये।

(7) अपने धर्म, संस्कृति और जातीयता को अटल रखने के लिये सभी भारतीयों को मातृभाषा की पढ़ाई पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिये। सिर्फ अंग्रेजी शिक्षा का कैसा बुरा प्रभाव हमारे जीवन पर हो रहा है यह प्रत्यक्ष है। विधर्म और विदेशी सभ्यता से बचने के लिये मातृभाषा की शिक्षा परम आवश्यक है।

(8) प्रचार के लिये धार्मिक पुस्तिकाओं और अन्य प्रचार साहित्य की अत्यन्त आवश्यकता है। प्रतिनिधि सभा अपने प्रेस और पत्र के लिये कोशिश करती रही है पर धनाभाव क कारण कार्य शिथिल रहा है।

उपरोक्त बातों पर यदि ध्यान दिया जावे और उसके अनुकूल कदम उठाये जावें तो अवश्य ही हमारी प्रगति होगी और हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे।

इस इतिहास को लिखने के लिये सभा ने पं. नरदेव जी वेदालंकार से प्रार्थना की थी जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। पंडितजी गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं। आप इस प्रदेश में दो वर्ष से आये हुए हैं। जबसे आप यहां आये हैं, सभा के एवं

वैदिक धर्म के प्रत्येक कार्य में सहयोग दे रहे हैं। आप अपने विनम्र और उत्साही स्वभाव से खूब लोकप्रिय हो रहे हैं। पंडित जी के परामर्श से सभा द्वारा हिन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ था। जिसमें हिन्दी प्रचार के लिये हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल की स्थापना हुई थी। पंडित जी इस संघ के सभापति हैं। आपने इस संघ के द्वारा हिन्दी प्रचार को नया जीवन दे दिया है। पं. नरदेवजी वेदालंकार को यहां बुलाने के लिये सभा तथा सभी भारतीय डरबन की सूरत हिन्दू एजुकेशनल सोसायटी की चिर ऋणी रहेंगे।

इस इतिहास को लिखने में पंडितजी ने बड़ा श्रम लिया है। सभा के सभी कागजात आदि की जांच करके तथ्यों को निकाल कर आपने यह इतिहास लिखा है। इसे लिखने में आपको सभा द्वारा प्रकाशित आर्य समाज के इतिहास की प्रूफ कॉपी से, 'प्रवासी भारतीय' से तथा स्वामी भवानी दयालजी लिखित 'स्वामी शंकरानंद संदर्शन' एवं 'प्रवासी की आत्मकथा' नामक पुस्तकों से अच्छी मदद मिली है। पंडितजी ने इस पुस्तक के लिखने में जो श्रम उठाया है उसके लिये सभा उनकी अत्यन्त कृतज्ञ है।

इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद हमारे सहायक मंत्री श्री सुखराज छोटई ने किया है। आप अंग्रेजी विद्या के स्नातक हैं। आपकी ओर से सदा ही सभा को पूर्ण सहयोग मिलता रहा है। एक सहोदर की भांति वे हर एक कार्य में मदद दे रहे हैं। सभा द्वारा आयोजित परिषदों और सम्मेलनों में अंग्रेजी अनुवाद का कार्य आपने बड़ी योग्यता से निभाया है। आपकी सेवा और परिश्रम सराहनीय है।

आर्य सार्वदेशिक सभा के प्रधान मंत्री मान्यवर पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय एम.ए. सभा का निमंत्रण स्वीकार करके सभा की रजत जयंती के शुभ अवसर पर यहां पधारे हैं। आपने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर हमें अनुगृहीत किया है। हमें पूर्ण विश्वास हैं कि आपके शुभागमन से रजत जयन्ती महोत्सव पूर्ण सफल होगा तथा वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में बड़ी प्रगति हो सकेगी। इस इतिहास के लिये भूमिका लिखने की हमारी विनती को स्वीकार करके उपाध्याजी ने हमें बहुत आभारी किया है। आपकी भूमिका से इस पुस्तक का महत्व बढ़ गया है।

विगत 15 वर्षों से सभा अपना कार्य करती रही है। सभा के अधिकारियों,सदस्यों और आर्य जनता के सहयोग और प्रेम से मैं 24 वर्षों से सभा के मंत्रीत्व का भार निवाह सका हूं। इसका श्रेय उन सभी महानुभावों को ही है। सभा की स्थापना से लेकर आज तक श्रीमान् एस.एल. सिंह सभी कार्यों में सहयोग देते आये हैं। वे ही सभा के सब सरकारी पत्रों को लिखते रहे हैं। सभा की आपने अमूल्य सेवा की है। यहां के आर्यों में आप एक रत्न हैं। इसी तरह सभा के कोषाध्यक्ष श्रीमान् एम.मुन्नू गत 20 वर्षों से सभा के इस उत्तरदायित्व पूर्ण पद पर हैं। वे अपनी शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद सभा को पूर्ण सहयोग देते रहे हैं। सभा इन दोनों आर्य सज्जनों की चिर ऋणी रहेगी।

सभा का आज तक का सारा कार्य अवैतनिक सेवाभावी अधिकारियों के द्वारा हुआ है। यहां तक कि वे अपने निजी खर्च से भी सभा का कार्य करते रहे हैं। इस जयंती के शुभ अवसर पर मैं

सभा की तरफ से अपने वर्तमान तथा भूतपूर्व सभी सहयोगी अधिकारियों, प्रतिनिधियों, सहायकों, दाताओं और आर्य जनता की अन्त:करण पूर्वक कृतज्ञता मानता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी इन सबका हार्दिक सहयोग मिलता रहेगा।

आर्य जाति की सेवा करते हुए मेरे जीवन की एक चिर अभिलाषा रही है। वह है वेद मंदिर और भवन के निर्माण की। परमात्मा की परम कृपा से वह कामना भी पूर्ण होने का अवसर आया है। उसका नक्शा तैयार हो गया है। हमारे प्रधान श्रीमान् आर. बोधासिंह के उदार दान से सभा का यह महाकार्य पूर्ण होने जा रहा है। हमारी संस्कृति में दान की विशेष महिमा है। प्रभु ने श्री बोधासिंह परिवार पर बड़ी कृपा की है और उसका सुफल हमारी जाति को मिल रहा है। श्रीमान् आर. बोधासिंह जैसे उदार दाताओं के द्वारा ही समाज का कार्य आगे बढ़ सकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती के महोत्सव पर सभा के प्रधान के शुभ कर कमलों से वेद मंदिर की नींव रखी जा रही है। आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार की यह दृढ़ नींव बने यही प्रभु प्रार्थना है।

अन्त में सभा के सभी सहायकों को धन्यवाद देता हुआ–

आपका अनुचर,

सत्यदेव

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल

अध्याय पहला

हिन्दुओं की प्रारम्भिक दशा
तथा
प्रथम सन्देश वाहक
प्रो. भाई परमानन्दजी एम.ए.

elibrary.thearyasamaj.org

मजदूरी प्रथा का प्रारम्भ

यूरोपीय जातियों में जब जागृति प्रारम्भ हुई तो उनमें धनका लोभ और साम्राज्य बढ़ाने की इच्छा प्रबल हो उठी। इस कारण उन्होंने दुनिया भर में नये प्रदेशों की खोज की। इस तरह उन्हें कई नये प्रदेश हाथ लगे। इन प्रदेशों को आबाद करने के लिये दास प्रथा का सहारा लिया गया। हजारों हवशी गुलाम बनाकर बेचे जाने लगे। मानवता का अपमान करने वाली इस दास प्रथा के विरुद्ध आंदोलन हुए, जिसके फलस्वरूप भिन्न-भिन्न देशों ने दास प्रथा को कानून द्वारा बंद कर दिया। इंग्लैंड ने सन् 1833 में दास प्रथा को गैर कानूनी ठहराया।

इस दास प्रथा के बंद हो जाने से उपनिवेशों की यूरोपीय बस्तियों पर बड़ी आफत आयी। उनकी खेतियां गुलाम मजदूरों के बिना सूखने लगीं, दूसरे भी काम बंद रहने लगे। उन लोगों का जीना मुश्किल हो गया। इस गम्भीर प्रश्न को सुलझाने के लिए शीघ्र ही

'शर्तबन्दी मजदूर प्रथा' का श्री गणेश हुआ।

इस प्रथा के अनुसार इन नयी यूरोपियन बस्तियों के लिए भारत तथा चीन से मजदूर पाने की योजना बनायी गयी। इन देशों से लोगों को बहकाकर भिन्न-भिन्न उपनिवेशों में मजदूरी करने के लिए भेजा जाने लगा। इन मजदूरों से 5 वर्ष की गुलामी लिखवा ली जाती थी।

सन् 1834 का वर्ष भारतवासियों के लिए बड़े दुर्भाग्यका था जबकि भारतीय ऋषि संतान सर्व प्रथम अर्ध दास बनाकर मोरिशस टापू में भेजी गयी। उस साल 7000 मजदूर कलकत्ते से मोरिशस को भेजे गये।

दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों का आगमन

मोरिशस के बाद भारतीय मजदूर फीजी, जमैका, ब्रिटिश गायना, ट्रिनीदाद आदि कई उपनिवेशों में भेजे जाने लगे। उस समय तक दक्षिण अफ्रीका के नाताल प्रदेश में भी अंग्रेज लोग आकर बस चुके थे। यहां पर गन्ने की खेती के लिए उनको मजदूरों की जरूरत हुई। इसके लिये भारत से 'शर्तबंदी मजदूर प्रथा' के अनुसार मजदूर बुलाये गये। सर्वप्रथम मद्रास प्रांत से कैरो जहाज द्वारा 17 नवम्बर 1860 के दिन भारतीय लोग 5 वर्ष की गुलामी लिखाकर इस देश में आये। फिर तो यहां पर संयुक्त प्रांत, बिहार, पंजाब आदि प्रांतों से भी मजदूर आने लगे। कुछ वर्षों के बाद बम्बई प्रांत के कई गुजराती, मुसलमान और हिन्दू भी स्वतंत्र रूप से इस प्रदेश में व्यापार करने के लिये आने लगे। शर्तबंदी मजदूर प्रथा के विरुद्ध भारतवर्ष में घोर आंदोलन उठा। जिससे सन् 1917 में भारतीयों को

मजदूर के रूप में बाहर भेजा जाना बंद हो गया।

हिन्दुओं की प्रारम्भिक दशा

भारत से जो भी मजदूर बाहर भेजे गये प्राय: वे सब अनपढ़ और ग्रामीण थे। ऐसे ही लोग दक्षिण अफ्रीका में भी आये। सन् 1860 से भारतीय लोग यहां आने लगे। यह वह समय था जब कि धार्मिक व राजनीतिक दृष्टि से स्वयं भारत देश प्रगाढ़ निद्रा में सोया हुआ था। 1857 के स्वातंत्रय संग्राम को बुरी तरह से कुचल दिया गया था। भारत वर्ष को गहरी नींद से जगाने वाले युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अभी आर्य समाज की स्थापना भी नहीं की थी। ऐसे समय में यहां पर जो मजदूर आये उनकी स्थिति की कल्पना करना सहज है। धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इनमें नये युगका कोई चिन्ह न था। पुराने रूढ़िवाद में, अन्धविश्वासों और वहमों में, जादू टोने और धागे तावीजों में तथा जातपांत के, ऊंच-नीच के भेदभावों में ये लोग पूरी तरह से डूबे हुए थे।

सबसे बुरी बात यह हुई कि जिस परिस्थितियों में ये यहां आये और इनके साथ गोरे मालिकों का जो दुर्व्यवहार होता था उसने इनकी धार्मिक एवं सामाजिक प्रथाओं को एकदम मेट दिया था। रूढ़िवाद के अनुसार इनके लिए समुद्र पार करना ही अधर्म था, इसलिए जो हिन्दू देश छोड़कर निकले उन्होंने तबसे अपने धर्म को नष्ट समझ लिया। उस समय सारा धर्म छुआछूत और चौके में सीमित था। जब इन प्रवासी हिन्दुओं ने देखा कि जहाजों में न कोई अपनी जाति-बिरादरी रख सकता है, न चौके चूल्हे की रक्षा कर सकता है तो उन्होंने अपने को सर्वथा पतित समझ लिया। लोगों ने

जनेऊ और चोटी काटकर गंगाजी में बहा दी। मानों धर्म की मर्यादा से छुट्टी पाली।

फिर भी इन भारतीयों में धर्म और जातीयता के अंकुर छिपे हुए थे। इनके मन पर भी सहस्रों वर्ष से धर्म और संस्कृति की छाप थी। मौका पाते ही ये अंकुर फूट पड़े। जब ये मजदूर अपनी शर्तबंदी की अवधि से मुक्त हुए, तब वे खेती बारी और छोटा मोटा व्यापार करने लगे। जिन मजदूरों को मासिक 8–10 रुपये मिलते थे, उन्होंने भी पाई–पाई जोड़कर अपने धार्मिक कार्य चालू रखे। ऐसी विषम परिस्थिति में भी उनके धार्मिक विश्वासों ने ही उन्हें हिन्दू बना रहने दिया।

उस समय के इन हिन्दुओं के धर्म का स्वरूप पुराना था। ये अंधविश्वास और वहमों से भरे हुए थे। मद्रास प्रांत के तमिल भाषी लोग गोवर्धन, माता भाई और मारीमा की पूजा किया करते थे। वे भारत से वारसे में पशुबलि की प्रथा भी लाये थे। प्रतिवर्ष सैकड़ों प्राणियों की बलि चढ़ाते थे। हिन्दी भाषी लोग भी काली की पूजा में पशुबलि देते थे। वे हनुमान जी का झन्डा उड़ाते, उन पर तेल चढाते और हनुमान चालीसा तथा सत्यनारायण की कथा के पाठ को ही धर्म–कार्य समझते थे।

सर्व प्रथम हिन्दुओं ने धर्म प्रचारार्थ डरबन में एक मंदिर और धर्मशाला 'श्री ठाकुरद्वारा और धर्मशाला के नाम से बनवायी। इसके बाद बेरुलम टोंगाट, सीकाउलेक, क्लेरबुड, इर्स्पींगो, सिडनम, मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ आदि स्थानों पर भी मंदिर बनने लगे। तमिल भाषियों ने भी अपने मंदिर डरबन, माउन्टएजकोम्ब, न्यूलेन्ड, इर्स्पींगो,

केटो मेनर, क्लेरेस्टेट आदि जगहों पर बनाये।

प्रो. भाई परमानन्दजी का शुभागमन

जब हिन्दू लोग इस तरह से अपना जीवन निर्वाह करते और अपने विश्वासों के अनुसार पूजा पाठ किया करते थे, तब भारतवर्ष में महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने प्राचीन वैदिक धर्म का उद्धार करना प्रारम्भ कर दिया था। उस आर्य समाज में दीक्षित कुछ सज्जन पूर्व अफ्रीका और दक्षिण अफ्रीका भी पहुंच गये थे। यहां की हिन्दू सन्तानों की घोर अवस्था पर उन्हें महा खेद हुआ। यहां के कुछ आर्य सज्जनों ने, जिनमें लाला मोहकमचन्द वर्मन का नाम विशेष उल्लेखनीय है, लाहौर कॉलेज के प्रिंसपल महात्मा हंसराज जी से किसी प्रचारक को भेजने के लिए प्रार्थना की। महात्मा हंसराजी ने इस प्रार्थना पर ध्यान देकर भाई श्री परमानन्दजी को यहां भेजा। 5 अगस्त 1905 का वह दिन बड़ा शुभ था जबकि आर्य संस्कृति के प्रथम सन्देश वाहक प्रो. भाई परमानन्दजी ने दक्षिण अफ्रीका में पदार्पण किया। भारतीयों के इस देश में आगमन के 45 वर्ष के पश्चात् सर्वप्रथम एक भारतीय विद्वान् इस देश में आया।

भाई परमानन्दजी के स्वागत के लिये एक स्वागत समिति बन गयी। जिस के प्रधान श्री रामचन्द्र जी थे। मंत्री श्री बी.ए. मेघराज और श्री एस.डी. मोडली तथा कोषाध्यक्ष श्री सी. दोरास्वामी पिल्ले थे। इस समिति ने भाईजी के व्याख्यानों का भी प्रबंध किया। भाईजी हिन्दी तथा अंग्रेजी के अच्छे विद्वान थे। उनके प्रचार का अच्छा प्रभाव होने लगा। उस समय यहां के हिन्दुओं में विभिन्न

समुदाय तथा मतमतान्तर जारी थे इसलिए आर्य समाज की स्थापना करना कठिन मालूम हुआ। तात्कालिक आवश्यकता यह थी कि किसी भी तरह हिन्दुओं में नयी जागृति पैदा हो, उनमें अपने धर्म और जाति के प्रति सम्मान जागे। भाईजी ने सर्व प्रथम 'हिन्दू सुधार सभा' की स्थापना की।

हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशन

हिन्दू युवकों के उत्थान के लिए भाईजी ने स्थान-स्थान पर 'हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशन' की स्थापना शुरू की। डरबन में भाईजी के कई जगह व्याख्यान हुए। इसके बाद आप नाताल प्रांत की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग गये। यहां पर भी आपका खूब स्वागत हुआ और प्रचार की धूम मच गयी। यहां पर भाईजी ने अक्टूबर 1905 में हिन्दू यंग मेन्स एसोसिएशन की स्थापना की। इस संस्था के प्रति तमिल भाषी लोग खूब आकर्षित हुए। वे इसमें सम्मिलित होकर कार्य करने लगे। आज भाईजी की स्थापित की हुई अन्य संस्थाएं लुप्त हो गयी हैं परन्तु मेरित्सबर्ग की इस संस्था ने खूब तरक्की की है। यह आज भी भाईजी के नाम की स्मृति को कायम किये हुए है। मेरित्सबर्ग में भाईजी को एक मानपत्र देकर उनका सम्मान किया गया था।

यहां से भाईजी सारे दक्षिण अफ्रीका के प्रचार के लिए निकल पड़े। पहले वे लेडीस्मिथ और डंडी गये। इन स्थलों के भारतीय मजदूरों की दुर्दशा देखकर आप बड़े दु:खी हुए थे। यहां से भाईजी जोहानिसबर्ग पहुंचे। इस शहर में भी भाईजी का खूब स्वागत हुआ। यहां की स्वागत समिति के अध्यक्ष महात्मा गांधीजी

थे। इसके पचात् भाईजी ने प्रीटोरिया और केपटाउन में जाकर हिन्दी व अंग्रेजी में कई प्रभावशाली व्याख्यान दिए। इस प्रकार अपनी अल्पकालीन यात्रा को समाप्त कर भाई परमानंद जी दिसम्बर 1905 में यहां से इंग्लैंड के लिए रवाना हो गये।

भाई परमानन्दजी के प्रचार का प्रभाव

भाई परमानन्दजी यहां 4-5 मास ही ठहर सके, इससे वे जमकर कार्य नहीं कर सके; परन्तु इस छोटे से काल में भी आपने यहां पर वैदिक धर्म की ज्योति जला दी। 27 वर्ष की छोटी उम्र के इस नवयुवक को धर्म, संस्कृति और दर्शन पर अंग्रेजी में अद्‌भुत छटा से व्याख्यान देते हुए, देखकर यहां के गोरे भी आश्चर्य मुग्ध हो उठते थे। उस समय तो इस देश के गोरों में भी अंग्रेजी की इतनी उच्च योग्यता रखने वाले बहुत कम थे। भाईजी के शुभागमन से हिन्दू जाति ने नये प्रकाश के दर्शन किये। अब वे इसे पाने के लिए लालायित रहने लगे। आज भी यहां की हिन्दू जनता आर्य संस्कृति के इस प्रथम सन्देश वाहक को बड़ी श्रद्धा से स्मरण करती है और सच्चे अर्थों में उन्हें देवता स्वरूप मानती है।

elibrary.thearyasamaj.com

अध्याय दूसरा

जागृति के अग्रदूत स्वामी शंकरानन्दजी

शुभागमन

भाई परमानन्दजी यहां से चले तो गये परन्तु अपने पीछे धार्मिक प्यास छोड़ गये। उनके जाने पर यहां के आर्यजन किसी दूसरे प्रचारक को बुलाने के लिए प्रयत्न करने लगे। सौभाग्य से उन्हें इसमें सफलता मिली। स्वामी शंकरानन्दजी यहां आने के लिए तैयार हुए। वे उन दिनों इंग्लैंड में प्रचार कार्य कर रहे थे।

4 अक्टूबर 1908 के दिन डरबन बन्दरगाह पर भारतीयों की अपार भीड़ लगी हुई थी। उन सबकी आंखें जहाज की ओर बड़ी श्रद्धा और उत्सुकता से टकटकी लगाये हुए थीं। प्रथम बार हिन्दुओं का धर्मगुरु दक्षिण अफ्रीका के तट पर उतर रहा था। ठीक एक बजे भगवे कपड़ों में सजे एक भव्य मूर्ति ने इस प्रदेश के तट पर पदार्पण किया। हाथ में दण्ड धारण किये हुए, तेजस्वी मुद्रा वाले, प्रशस्त ललाट वाले, दीर्घकाय भव्य संन्यासी को देखकर जनता जय-जयकार कर उठी। मानों उसी क्षण से इस प्रदेश में चैतन्य की लहर फैलने लगी। यह भव्य सन्यासी जागृति के अग्रदूत स्वामी

शंकरानन्द जी महाराज थे।

कार्य का प्रारम्भ

स्वामीजी का कार्य स्वागत समारोहों से चालू हो गया। सबसे पहले 8 अक्टूबर को नाताल इन्डियन कॉंग्रेस के हॉल में आपका सार्वजनिक स्वागत हुआ। इसके बाद कई स्वागत सभाओं में स्वामीजी के व्याख्यान होने लगे। स्वामीजी की अमृतमयी वाणी सुनने के लिए जनता उत्सुक रहने लगी। डरबन शहर में तथा आसपास कई जगहों पर आप के भाषणों की व्यवस्था की गई। स्वामीजी ने इन सभाओं में संस्कृति, धर्म, भारतीय सभ्यता, ईश्वर-विश्वास, यज्ञ की महत्ता, मातृभाषा आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण व्याख्यान दिये।

स्वामी जी के इन व्याख्यानों का प्रभाव भी खूब पड़ने लगा। रूढ़िवाद और अन्धविश्वासों से युक्त हिन्दू धर्म के स्वरूप के कारण स्वयं हिन्दू नवयुवक अपने धर्म को हीन समझने लग गये थे। वे ईसाइयत और मुस्लिम धर्म की शरण ले रहे थे। स्वामी जी के भाषणों ने ऐसे नवयुवकों की आंखें खोल दीं। अब हिन्दुओं को अपने धर्म और अपनी जाति पर गौरव होने लगा।

श्री शंकरानन्दजी यहां के हिन्दुओं की स्थिति देखकर बड़े दु:खी हुए। आपने हिन्दू जाति को जागृत करने का संकल्प कर लिया। जाति के इस वैद्य ने उसकी नाड़ी को पकड़ कर रोग को ठीक तरह से परख लिया था। इसका इलाज करने के लिए उन्होंने व्याख्यानों और उपदेशों, त्योहारों और संस्कारों के प्रचलन का तथा मातृभाषा की शिक्षा का विविध कार्यक्रम रचा और नि:सन्देह

जाति का यह वैद्य अपने निदान और चिकित्सा में सफलता पाने लगा।

उत्सव और संस्कार : दीपावली

यहां पर 50 वर्षों से हिन्दू रहते थे। इस बीच वे अपने त्योहारों और संस्कारों को सर्वथा भूल चुके थे। जो कुछ बचा था वह स्वयं उन्हें लज्जित करने वाला था। हिन्दुओं का सर्व प्रधान त्योहार मुहर्रम बन गया था। ताजिया बनाकर और मर्सिया गा गाकर के फूले न समाते थे। श्री शंकरानन्दजी का इस पतन की ओर शीघ्र ही ध्यान गया और उन्होंने इसके विरुद्ध हिन्दुओं को दीपावली का त्योहार मनाने का आदेश दिया। तदनुसार अक्टूबर 1908 की दीपावली का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। तब से दीपावली यहां का सर्वप्रधान त्योहार बन गया है।

दीपावली के इस प्रकार के प्रचार का यह प्रभाव हुआ कि अबतक रेलवे और म्युनिसपालिटी में हिन्दू कर्मचारियों को मुहर्रम पर छुट्टी मिलती थी उस के बदले अब दीपावली की सार्वजनिक छुट्टी होने लगी। दीपावली के अतिरिक्त रामनवमी और जन्माष्टमी के पर्व भी मनाये जाने लगे। त्योहारों के साथ ही उन्होंने जगह-जगह यज्ञ करवाये और संस्कारों की महत्ता समझाकर वैदिक संस्कारों का प्रचलन शुरू किया।

रामरथ

ताजिये परस्ती से सर्वथा मुक्ति दिलाने के लिए श्री शंकरानन्दजी ने हिन्दू मानस को परखकर रामरथ निकालने की योजना तैयार की। इसके लिए 1910 में 'डरबन रथ कमेटी' का

निर्माण हुआ। उसकी तरफ से राम नवमी के शुभ पर्व पर बड़े समारोह पूर्वक रामरथ निकालने की तैयारी होने लगी। हिन्दुओं में उस अवसर पर अपूर्व उत्साह उमड़ आया। पहली बार हजारों हिन्दुओं ने मिलकर अपना धार्मिक जुलूस निकाला। रामरथ की यह सवारी डरबन की ग्रे स्ट्रीट में से होकर जाने वाली थी। यहां मुसलमानों की बड़ी मस्जिद स्थित है। इससे मुसलमानों में भी जोश उमड़ आया। वे इस रामरथ को रोकने के लिए दंगा करने को भी उतारू हो गये। ता. 18 अप्रैल को बड़ी धूम-धाम से बाजे-गाजे के साथ सवारी निकली। निर्भीक संन्यासी शंकरानन्दजी के हाथ में उसका नेतृत्व था। सबसे आगे वे चल रहे थे। ग्रे स्ट्रीट पर जब रथ पहुंचा तो किसी की शरारत करने की हिम्मत नहीं हुई। पुलिस ने दंगे की सम्भावना से रथ को रोकना चाहा पर श्री शंकरानन्दजी का ऐसा प्रभाव था कि पुलिस के कर्मचारी नागरिकता के इस सर्वमान्य हक से इन्कार न कर सके रामरथ शांतिपूर्वक निकल गया और तबसे मस्जिद के सामने बाजा बजाने का सवाल भी सदा के लिए इस देश में हल हो गया।

प्रचार की धूम

अब तो सारे नाताल प्रांत में श्री शंकराचार्यजी ने प्रचार की धूम मचा दी। जगह-जगह पर उनके व्याख्यान होने लगे। वे प्रखर वक्ता थे। उनकी वाणी मेघ के समान गंभीर और बलवती थी। उनकी भाषा भी बड़ी ओजस्वी होती थी। इससे श्रोतागण उनके व्याख्यानों से बहुत प्रभावित होते थे। आपने डरबन की हिन्दू सुधार सभा, अमगेनी की हिन्दू प्रोग्रेसिव सोसाईटी तथा स्टेंगर, इस्पींगो

आदि स्थानों की कई सभाओं में व्याख्यान दिये। बेलफोर्ट में आपने यज्ञ करवाया। प्रांत के अन्य नगर मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ, न्यूकासिल आदि में भी व्याख्यान होने लगे। वे अंग्रेजी के भी प्रभावशाली वक्ता थे, इससे आपके व्याख्यानों में गोरे लोग भी अच्छी संख्या में हाजिर होते थे और उच्च कोटि के ध्यार्मिक व्याख्यान सुनकर अपना अहोभाग्य समझते थे थियोसीफीकल सोसायटी में आपने 'मानव आत्मा' पर जो आध्यात्मिक व्याख्यान दिया उसे सुनकर उस सभा के अध्यक्ष श्री हरबर्ट प्राइज़ ने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में तत्वज्ञान पर ऐसा महत्त्वपूर्ण व्याख्यान पहली बार सुना है।

वेद धर्म सभा

स्वामी शंकरानन्दजी ने प्रचार कार्य को दृढ़ करने के लिए जगह-जगह संस्थाएं खोलना प्रारम्भ किया। ये संस्थाएं वेद धर्म सभा के नाम से मशहूर हुई। इन सभाओं के उद्देश्य तथा नियमादि आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल ही थे। स्वामीजी ने पहली वेद धर्म सभा डरबन में बिट्रेस स्ट्रीट में स्थापित की। इसके बाद क्लेरे टेटमें भी एक सभा कायम की। इसी तरह आपने सिडनम में हिन्दू यंग मेन्स सोसायटी एवं डरबन में यंग मेन्स वैदिक सोसायटी खोली। इनमें प्राय: तमिल भाषी लोगों ने साथ दिया। इनमें मुख्यरूप से त्योहारों के मनाने का, मातृभाषा की पढ़ाई का तथा धार्मिक प्रवचन का कार्य होने लगा।

स्वामीजी जब नाताल प्रांत की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग गये तो वहां भी खूब जोरों से प्रचार प्रारम्भ हुआ। कई प्रभावशाली व्याख्यान हुए। यहां पर 10अप्रैल 1909 को उनके करकमलों से

वेद धर्म सभा की नींव पड़ी। उनके द्वारा संस्थापित संस्थाओं में यह मुख्य है। प्राय: अन्य सब संस्थाएं मृत हो चुकी हैं परन्तु मेरित्सबर्ग की यह सभा आज भी बड़े उत्साह से कार्य कर रही है। (इस संस्था की कार्य प्रवृत्ति अध्याय 12 में देखिये)

स्वदेश गमन और पुनरागमन

स्वामीजी जब इस प्रकार अपने प्रचार कार्य द्वारा यहां की हिन्दू जनता में नवजीवन ला रहे थे तब उन को खबर मिली कि उनके गुरु श्री आत्मानन्दजी महाराज बहुत बीमार हैं। इसलिए उन्होंने गुरुजी के दर्शन के लिए भारत जाने का निश्चय किया। स्वदेश गमन के इस अवसर पर अनेक संस्थाओं ने उन्हें अभिनन्दन पत्र दिये और यात्रा के लिए शुभ कामना की। सरकार के मुख्य सेकेट्री श्री वर्ड ने भी इस अवसर पर पत्र लिखा कि 'मेरी आपके चरणों में प्रणाम करने की इच्छा थी पर वह पूर्ण न हो सकी।' इस तरह मंगल कामनाओं के साथ स्वामीजी 1911 के प्रारम्भ में भारत गये और वहां अपने गुरुजी के स्वास्थ्य के सुधरने पर वर्ष के अन्त में पुन: दक्षिण अफ्रीका आ पहुंचे। इस बार भी आपका पहले की तरह ही खूब जोरों से स्वागत हुआ।

दक्षिण अफ्रीका हिन्दू महासभा की स्थापना

स्वामीजी इस बार जब भारत लौटे तो उनका ध्यान यहां के समस्त हिन्दुओं के संगठन की ओर गया। इसके लिए डरबन में 31 मई 1912 को 'साउथ अफ्रीका हिन्दू कॉन्फ्रेंस' बुलाई गई। ऐसी परिषद यहां के हिन्दुओं के लिए पहली बार हो रही थी। सारे दक्षिण अफ्रीका से इसमें करीब 300 प्रतिनिधि इकट्ठे हुए। सहस्रों

दर्शकों की उपस्थिति हुई। स्वामीजी इस परिषद के प्रधान थे। स्वागताध्यक्ष श्री आर. बी. चेटी एवं मंत्री श्री एस. आर पत्तर थे। इस परिषद में उन्होंने हिन्दुओं को जाग्रत करने वाला ऐतिहासिक व्याख्यान दिया। तत्पश्चात् कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। जिनमें सबसे मुख्य हिन्दू महासभा की स्थापना का था। भारत की हिन्दू महासभा से भी तीन साल पहले यहां इस संस्था की स्थापना हुई। इसके प्रधान श्री सी.वी. पिल्ले मंत्री श्री एस.आर. पत्तर तथा कोषाध्यक्ष श्री टी.वी. पत्तर चुने गये। दूसरे वर्ष भी इसी तरह महासभाका अधिवेशन हुआ। परन्तु स्वामी जी ने जिस महान् उद्देश्य को लेकर इस महासभा की स्थापना की थी उसे इसके संचालक पूर्ण न कर सके। उनके स्वदेश गमन के पीछे यह महासभा निष्क्रिय और मृत प्राय: बनी रही।

ट्रांसवाल और केप प्रांत में प्रचार

नाताल प्रांत में प्रचार करके स्वामी शंकरानन्द जी ट्रांस्वाल में गये। वहां के मुख्य शहर जोहानिसबर्ग में उनका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। शहर के मेयर श्री जी.डी. एलिस खुद इस स्वागतसभा के प्रधान थे। इस शहर के मेसोनिक हॉल में उनके 15-20 व्याख्यान अंग्रेजी में हुए। ये व्याख्यान इतने प्रभावशाली थे कि उन्हें सुनने के लिए गोरे श्रोताओं की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती गई। उनके व्याख्यानों से वैदिक धर्मकी श्रेष्ठता का गोरों में ऐसा सिक्का बैठ गया कि पादरी उनसे जलने लगे। वहां के गोरे पत्रों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। ट्रांसवाल प्रांत में घूम-घूमकर उन्होंने प्रिटोरिया, जर्मिस्टन, बोक्सवर्ग बेनोनी, रुडीपोर्ट, क्रूगर्सड्रोप आदि जगहों पर

व्याख्यान दिये। जब वे ट्रांसवाल से जाने लगे तो उन्हें यूरोपियनों और भारतीयों की ओर से प्रीतिभोज दिया गया। जिसमें यूरोपियन महिलाओं ने भी भारतीयों के साथ बैठकर प्रीतिपूर्वक भोजन किया था।

स्वदेश गमन

ट्रांसवालसे स्वामीजी केप प्रांत के पोर्ट एलिजाबेथ, यूटेनहेग और केप टाउन में प्रचार करने गए। इन जगहों पर प्रचार का गहरा प्रभाव हुआ। केपटाउन से लौटकर वे डरबन आये, यहां से यकायक 17 मई 1913 को स्वदेश के लिए रवाना हो गये। ऋणानुरागी हिन्दू जनता आपको विदायमान भी न देने पायी।

महात्मा गांधीजी और स्वामी शंकरानन्दजी

स्वामी शंकरानन्दजी जब दक्षिण अफ्रीका में धर्म प्रचार करने आये थे, उससे कई वर्ष पहले ही सन् 1893 में महात्मा गांधीजी (तबके वेरिस्टर मोहनदास कर्मचंद गांधी) इस देश में पहुंच चुके थे। गांधीजी के जीवन का यह परिक्षणात्मक काल था। अभी उनका निर्माण हो रहा था इसलिए हम देखते हैं कि गांधीजी सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से यहां के हिन्दुओं में विशेष उत्थान नहीं कर सके। धर्म के सम्बन्ध में तो वे अभी खोज और अध्ययन के मार्ग पर ही थे। स्वामी शंकरानन्दजी की प्रेरणा से ही उनको आर्य समाज और महर्षि दयानन्द का परिचय हुआ था। इस समय तक गांधीजी का अक्टूबर 1913 का प्रसिद्ध सत्याग्रह भी शुरू नहीं हुआ था। यह कहा जा सकता है कि स्वामीजी के व्यापक प्रचार ने हिन्दू जाति में जो आत्म गौरव जाग्रत कर दिया था और उन को जो

नयी चेतना मिल रही थी, उसने प्रत्यक्ष नहीं तो परोक्ष रूप से भी गांधीजी के कार्य में मदद पहुंचायी थी। सत्याग्रह संग्राम का व्यापक रूप से सूत्रपात करने वालों में से एक श्री स्वामी भवानी दयाल जी तथा उनकी पत्नी श्री जगरानी देवी तो स्पष्ट रूप से ही ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से आत्मगौरव और राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ चुके थे। दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों में राजनीतिक जागृति और राष्ट्रीयता का भाव भरने का श्रेय जहां महात्मा गांधीजी को है, वहां उनमें सांस्कृतिक और जातीयता का अभिमान पैदा करने के श्रेय भागी स्वामी शंकरानन्दजी महाराज थे।

महात्मा गांधीजी और स्वामी शंकरानन्दजी में सबसे बड़ा मतभेद हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर था। महात्माजी की उदारता तो जगप्रसिद्ध है। मुसलमानों को नाराज न करने के उनकी नीति व्यवहारिक धर्म से ऊपर उठकर आध्यात्मिक तत्व तक पहुंच जाती थी। उनको इस नीति से कई कटु फल भी भोगने पड़े थे।

स्वामी शंकरानन्दजी का मुसलमानों से कोई विरोध न था। वे तो हिन्दुओं को जाग्रत करना चाहते थे। यदि वे निर्भीकता से इस ओर न बढ़ते थे, हिन्दू जाति का अपने रूप में जीवित रहना अशक्य था। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि मुसलमान उनसे जलने लगे; जैसाकि उनके वारे में सर्वत्र देखा गया है। उनकी इस नाराज़गी की परवाह न करके उनको अपना कार्य करना ही था। मुसलमानों के विरुद्ध हिन्दुओं को उभाड़ने का दोष उन पर कोई नहीं लगा सकता।

स्वामीजी के प्रचार का प्रभाव

स्वामी शंकरानन्दजी के प्रचार ने 50 साल से सोयी हुई हिंदू

जाति में संजीवनी बूटी का काम किया। उनके कार्य पर स्वामी भवानी दयालजी संन्यासी लिखते हैं, ''यद्यपि मैंने (द. आफ्रिका में) श्री शंकरानन्दजी को नहीं देखा तो भी नाताल पहुंचते ही उनके प्रचार का फल देख लिया। जो हिन्दू लावारिस मालकी तरह इधर-उधर भटक रहे थे उनमें वैदिक धर्म पर भक्ति, आर्य संस्कृति पर श्रद्धा, सन्ध्या हवन में अनुराग, त्योहारों पर अभिमान, परस्पर नमस्ते का व्यवहार, मातृभाषा की ओर रुचि, सभा समितियों के संचालन का ज्ञान, कुरूढ़ियों से घृणा, स्वदेश के प्रति सम्मान और आर्य जाति के उज्जवल भविष्य में विश्वास उत्पन्न कर देना किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं हो सकता।''[1]

स्वामीजी के प्रचार का प्रभाव यूरोपियन जातियों पर भी खूब हुआ। आज तक उन्होंने भारतीय लोगों को कुली-मजदूर के रूप में ही देखा था, पर स्वामीजी के विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों ने उनकी विचारधारा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन कर दिया था। कई यूरोपियन तो उनके भक्त बन गये थे। तत्कालीन नाताल प्रांत के गवर्नर सर मेथ्यु नेथन तो उन पर मुग्ध थे वे भारतीयों के सम्बन्ध में प्रायः स्वामीजी की सलाह से काम किया करते थे। स्वामीजी के प्रचार का यह भी फल हुआ कि बहुत से हिन्दू नवयुवक जो ईसाई और मुसलमान होते जाते थे, रुक गये। उन्हें अपने धर्म के प्रति श्रद्धा पैदा हो गयी। इस कारण से और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता प्रमाणित होने से कई पादरी स्वामीजी से जलने लगे थे। स्वामीजी के व्याख्यानों से प्रभावित होकर प्रसिद्ध विद्वान विलियम होसकेन ने यह मंजूर

1. स्वामी शंकरानन्द संदर्शन पृष्ठ 16

किया कि, ''यह तो सिद्ध हो चुका है कि पूर्व ही धर्म, दर्शन और आध्यात्मिक ज्ञानका भंडार है और आज उसी पूर्वीय देश के साधु (स्वामी शंकरानन्दजी) के दर्शनों से हम लोग कृत कृत्य हैं।''[1] इसी तरह जोहानिसवर्ग के प्रीतिभोज के अवसर पर उस उत्सव के अध्यक्ष श्री वेबर्ग ने कहा, ''स्वामिन् आपको मैं विश्वास दिलाता हूं कि इधर बीस वर्ष के अन्दर किसी भी वक्ता और दार्शनिक का ऐसा शानदार स्वागत नहीं हुआ, जैसा इस नगर में आपका हुआ है।''[2] 'संडे पोस्ट' पत्र ने लिखा था,- ''पश्चिम के किसी भी दार्शनिक विद्वान से वे पंचगुणा विद्वान हैं।''[3]

स्वामीजी की सफलता मुख्यतया उनके व्यक्तित्व पर आश्रित थी। उनके दर्शन से ही सामने वालों पर उनके व्यक्तित्व का सिक्का जम जाता था। वे उच्च कोटि के विद्वान थे। उनके ओज से भरे हुए व्याख्यान शक्ति उत्पन्न करने वाले थे। उनका वार्तालाप और व्यवहार आकर्षक और मधुर था। उनकी वाणी सचमुच अमृत वर्षिणी थी। निर्भयता तो स्वामीजी का अपना गुण था। दक्षिण आफ्रिका के भारतीयों के उत्थान के प्रारम्भ काल में उनके जैसा निडर और तेजस्वी नेता मिल जाना हिन्दुओं के परम सौभाग्य का चिन्ह था।

स्वामी शंकरानंदजी ने यहां के हिन्दुओं को जाग्रत कर एकता के सूत्र में बांधा। इसके लिए हिन्दू महासभा की स्थापना की। उनकी स्मृति में हिन्दू महासभा ने 'श्री स्वामी शंकरानन्द स्मारक

1,2,3: स्वामी शंकरानन्द संदर्शन पृष्ठ 350, 363, 353

(क्रमशः)

भवन' के नाम से बड़ा भवन बनाने का निश्चय किया है। सचमुच वे यहाँ के भारतीयों की जागृति के अग्रदूत थे।

elibrary.thearyasamaj.org

अध्याय तीसरा

श्री स्वामी भवानी दयालजी तथा प्रारम्भ के दूसरे प्रचारक

स्वामी भवानी दयालजी संन्यासी

स्वामी शंकरानन्दजी के भारत गमन के बाद दक्षिण आफ्रिका में भारतियों को एक ऐसा और व्यक्ति मिल गया जिसने यहाँ पर आर्य ज्योति का प्रकाश फैलाना चालू रखा। यह व्यक्ति पं. भवानी दयालजी थे। जो बाद में स्वामी भवानी दयाल संन्यासी के नाम से मशहूर हुए। पं. भवानी दयालजी का जीवनकार्य विविध क्षेत्रों में व्याप्त रहा है। सबसे बड़ी खूबी तो यह है कि वे प्रथम प्रवासी भारतीय हैं जो अपनी साधना से इतने ऊँचे उठ सके हैं। उनका जीवन स्वनिर्माण की एक कहानी है।

बचपन भवानी दयालजी बालकपन से ही मुसीबतों के शिकार हो गये थे। बचपन में जब वे अपने पिता के साथ भारत गये तो उन्होंने प्रथम बार उस ऋषि भूमि के दर्शन किये थे। बिरादरी वालों के दबाव में आकर 12 वर्ष की उम्र में ही पिताजी ने उन्हें त्याग दिया। तब 12 वर्ष का बालक भवानी दयाल संकटों का सामना करता हुआ अपने जीवनपथ पर आगे बढ़ने लगा। मुसीबतों ने उसके जीवन को चमका दिया। धीमे-धीमे वह बालक साहसी,

निडर और नेतृत्व करने वाला युवक बन गया। इस समय भवानी दयालजी ने तीन बातें पायीं; जिनके आधार पर उनके जीवन का निर्माण हुआ (1) आर्य समाज का संदेश, (2) हिन्दी की शिक्षा, (3) राष्ट्रीय भावना।

दक्षिण अफ्रिका में पं. भवानी दयालजी 12 वर्ष की अवस्था में भारत पहुंचे थे। वहां से 22 दिसम्बर 1912 को नाताल लौटे। अब यह 20 वर्ष का नवयुवक पूरी तरह से बदल चुका था। उसमें उत्साह और उमंगे थीं। दक्षिण अफ्रीका में पहुंच कर भवानी दयालजी महात्मा गांधीजी के संसर्ग में आये और सत्याग्रह संग्राम में दाखिल हो गये। उनकी पत्नी जगरानी देवी ने भी इसमें सहयोग दिया। इस दम्पत्ति ने 10 अक्टूबर 1913 के दिन गांधीजी के प्रसिद्ध सत्याग्रह का विशुद्ध रूप में सूत्रपात किया। ये दोनों कारावास में बंदी हो गये।

हिन्दी के उद्धारक सत्याग्रह से छुट्टी पाकर भवानी दयालजी ने सार्वजनिक कार्य प्रारम्भ किया। वे नाताल और ट्रांसवाल में घूम घूमकर धर्म प्रचार करने लगे। इस प्रचार के साथ-साथ वे मातृभाषा हिन्दी के प्रचार का कार्य भी जोरों से करने लगे। दक्षिणी आफ्रिका में अब तक पं. भवानी दयाल जी से बढ़कर किसी ने हिन्दी की सेवा नहीं की है। उन्होंने स्थान-स्थान पर मातृभाषा की शिक्षा के लिए व्याख्यान दिये तथा हिन्दी प्रचारिणी सभाएँ एवं पाठशालाएँ स्थापित करना शुरु कर दिया। उन्होंने वेरुलम, चार्ल्सटाउन, न्यूकासिल, ग्लेंको, लेडीस्मिथ, डरबन आदि शहरों में हिन्दी प्रचार किया तथा हिन्दी पाठशालाएँ चालू कीं।

पंडितजी ने क्लेरेस्टेट में एक हिन्दी आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम में हिन्दी पाठशाला और पुस्तकालय खोला गया। इस व्यापक प्रचार कार्य के बाद उन्होंने सन् 1916 में लेडीस्मिथ में सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया। (विवरण देखिये अध्याय 8)। इसके बाद पंडितजी आर. जी. भल्ला के पत्र 'धर्मवीर' का सम्पादन बड़ी योग्यतापूर्वक करने लगे। पंडितजी का हिन्दी प्रचार में सबसे महत्वपूर्ण कार्य 'हिन्दी' साप्ताहिक का प्रकाशन था। इन सब कार्यो से दक्षिण आफ्रिका में वे हिन्दी के उद्धारक कहलाये।

पं. भवानी दयालजी इस समय में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए भी निरंतर प्रयत्न करते रहे। उनकी हिन्दी प्रचारिणी सभाएँ आर्य समाज के उद्देश्यों पर ही चलती थीं और वैदिक धर्म का प्रचार भी करती थीं। पंडितजी ने वैदिक विवाह, उपनयन आदि संस्कारों का भी क्रियात्मक प्रचार किया। अन्त्येष्टि संस्कार और शवों को जलाने की प्रथा चालू करने के लिए भी इन्होंने बहुत श्रम किया। 1916 में श्री जयनारायण जी की सहायता से दो जन्मजात मुसलमानों की शुद्धि भी करवायी। जिससे यहां की मुस्लिम जनता पंडित जी पर बहुत रुष्ट हो गई थी।

पं भवानी दयालजी के प्रचार कार्य का यह फल हुआ कि जब 1925 में दक्षिण आफ्रिका में ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाने का निश्चय हुआ तो शताब्दी महोत्सव समिति के सभापति पंडितजी चुने गये। पंडितजी ने इस महोत्सव के लिए बहुत प्रयत्न किया। अपने साप्ताहिक 'हिन्दी' के द्वारा भी आन्दोलन करते रहे।

पंडितजी के सदुद्योग से जन्म शताब्दी बड़ी सफलता से मनायी गयी। इस जन्म शताब्दी के सुअवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की स्थापना हुई। पं. भवानी दयालजी इसके प्रथम प्रधान निर्वाचित हुए। प्रतिनिधि सभा के संगठन के लिए पंडितजी ने काफी परिश्रम किया।

सन्यासाश्रम में प्रवेश

पं. भवानी दयालजी विविध कामों से दो तीन बार भारत गये। सन् 1922 में उनकी पत्नी श्रीमती जगरानी देवी का स्वर्गवास हो गया। इससे उन पर पुनर्विवाह के लिए बारम्बार दबाव होने लगा। इस जंजाल से छूटने के लिए तथा सेवा में जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से भवानी दयालजी ने भारतवर्ष में ता. 10 अप्रैल 1927 के दिन सन्यास आश्रम में प्रवेश किया। स्वामी भवानी दयालजी दक्षिण आफ्रिका में उत्पन्न प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने सन्यास ग्रहण किया है।

सन्यासी बनकर सन् 1927 में वे आर्य सार्वदेशिक सभा, देहली की ओर से प्रचारक बनकर यहां आये। इस समय प्रचार के लिए उन्होंने सारे दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया। तथा 'सार्वदेशिक' मासिक में कई लेख लिखे। सन् 1933 में स्वामी भवानी दयालजी पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। इस समय स्वामीजी ने ईस्ट लंडन जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया। वहां 20 भाषण दिये, 15 यज्ञ तथा 12 शुद्धियां करवायीं। इसी तरह नॉर्दन डिस्ट्रिक्ट की प्रचार यात्रा में 22 व्याख्यान, 13 यज्ञ और वैदिक कथाएँ

करवायीं। उधर 3 मास तक प्रचार करते रहे।

पोर्चुगीज़ ईस्ट आफ्रिका में प्रचार

स्वामी भवानी दयाल जी अपने कार्यों में दक्षिण आफ्रिका और भारत में तो प्रसिद्धि पा ही चुके थे परन्तु दूसरे भारतीय उपनिवेशों में भी उनकी ख्याति फैल चुकी थी। दक्षिण आफ्रिका से लगा हुआ पोर्चुगीज़ पूर्व अफ्रीका (मोज़ाम्बिक) देश है। वहां पर भी कई सहस्त्र भारतवासी जा बसे हैं। यहाँ सन् 1932 में आर्य समाज के सिद्धान्तों पर भारत समाज की स्थापना हुई। इसके निमन्त्रण से स्वामीजी हर साल एक मास यहाँ प्रचार कार्य के लिए जाने लगे। आपने वहां पर हबशी औरतों से पैदा हुई हिन्दुस्तानियों की सन्तानों की शुद्धि का कार्य शुरु किया। इससे पूर्व ऐसी सन्तान प्रायः ईसाई या मुसलमानों के हाथों में चली जाती थीं। स्वामी जी के प्रयत्नों से भारत समाज ने वेद मंदिर का निर्माण किया। सन् 1937 में स्वामी जी के करकमलों से ही इसकी नींव रखी गयी। आज वहां बड़ा अच्छा कार्य हो रहा है।

राजनीति में स्वामी भवानी दयालजी ने आर्य समाज के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है। पर दक्षिण आफ्रिका के भारतियों में इनकी राजनीतिक सेवाएं भी किसी से कम महत्व नहीं रखतीं। वे कई बार यहां की काँग्रेस के प्रतिनिधि बनकर भारत गये हैं। सन् 1938 में स्वामी जी नाताल इन्डियन काँग्रेस के सभापति भी निर्वाचित हुए। काँग्रेस के 45 साल के इतिहास में यह पहला अवसर था जब कोई हिन्दू उसका सभापति बना। स्वामीजी की राजनीतिक सेवाओं का उल्लेख करना इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है। वैसे उनकी

सेवाएं अवर्णनीय एवं अमूल्य हैं।

स्वामी मंगलानन्दजी पुरी

सन् 1913 में स्वामी मंगलानन्दजी पुरी ट्रांसवाल से नाताल में आये। आर्य युवक सभा की तरफ से वे नाताल में कार्य करते रहे। वे हिन्दी के अच्छे वक्ता थे। इससे हिन्दी भाषी भाइयों के ऊपर स्वामीजी का अच्छा प्रभाव रहा। स्वामीजी के व्याख्यानों ने कई युवकों को आकर्षित किया और वे आर्यसमाजी बने। इनको यहां का मौसम अनुकूल नहीं आया। इससे वे कुछ मास में ही भारत लौट गये।

पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार का शुभागमन

पं. ईश्वरदत्तजी प्रचार के लिए पूर्व अफ्रीका आये हुए थे। वहां से निमंत्रित होकर वे ट्रांसवाल प्रान्त में आये। वहां से आर्य युवक सभा ने पंडित जी को नाताल आने के लिए निमंत्रित किया। पं. ईश्वरदत्तजी गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक थे जिनका यहां पर शुभागमन हुआ। ता. 22 अक्टूबर 1921 को वे यहां पधारे। आर्य युवक सभा ने पंडितजी का शानदार स्वागत किया।

पंडितजी का प्रचार कार्य विद्वत्तापूर्ण और रोचक व्याख्यानों से चालू हो गया। आपके भाषण इतने प्रभावशाली होते थे कि श्रोता लोग मंत्रमुग्ध होकर तीन-तीन घंटे तक लगातार बैठकर पंडितजी की वाग्धारा का पान किया करते थे। ये व्याख्यान साम्प्रदायिक विद्वेष से रहित थे। इनको सुनने के लिए हिन्दू, मुसलमान, पारसी सब इकट्ठे हो जाते थे। पंडितजी के व्याख्यान के प्रभाव का एक उदाहरण यह था कि जब वे पूर्व अफ्रीका में

प्रचार कर रहे थे तब लाला साईदास जी अपनी 250/– मासिक की नौकरी छोड़कर पंडितजी के शिष्य बनकर उनके साथ ही घूमने लगे। यह बड़े खेद की बात हुई कि जब साईदासजी पंडितजी के साथ अमेरिका गये हुए थे तो उनका वहां अकाल अवसान हो गया।

पं ईश्वरदत्तजी ने व्याख्यानों के साथ शुद्ध स्वरूप में यज्ञ और संस्कार करना भी सिखाया। उन्होंने प्रतिदिन रामायण की कथा करना भी शुरू किया। यह कथा बड़ी रोचक होती थी। उसे सुनने को सैकड़ों लोग रोज इकट्ठे होते थे। इस रामायण कथा का नैतिक प्रभाव भी अच्छा हुआ।

पं. ईश्वरदत्तजी धनुर्विद्या में भी कुशल थे। वे सर्वप्रथम थे जिन्होंने धनुर्विद्या के खेल इस देश में बड़ी कुशलता पूर्वक कर दिखाये। उन खेलों को देखकर लोग दंग रह जाते थे। प्राणायाम और योग साधना के प्रयोग भी पंडितजी ने कर दिखाये। उनका शरीर दुबला पतला था फिर भी वे प्राणायाम के बल पर मनों बोझवाला पत्थर छाती पर रखवाकर तुडवाते थे। वे चलती मोटर को भी रोक लेते थे। जो खेल राममूर्ति कर दिखाते थे वे खेल पंडितजी भी बड़ी आसानी से कर लेते थे। इस तरह अपने कार्यों का सिक्का जमाकर पंडितजी 16 दिसम्बर 1921 को इंग्लैंड के लिए प्रस्थान कर गये।

संगीत प्रवीण पं. प्रवीण सिंहजी

पं. प्रवीण सिंहजी भी पूर्व अफ्रीका में प्रचार के लिए आये हुए थे। श्री जी. बी. रघुवीर के प्रयत्नों से 23 फरवरी 1922 वे दक्षिण अफ्रीका भी आये। यहां उनका अच्छा स्वागत हुआ। वे

संगीत में निपुण थे इससे उन्हें आम लोगों में प्रचार करने का अच्छा मौका मिला। वे वृद्ध थे फिर भी उत्साह से प्रचार करते रहे। पंडितजी के भजनों और उपदेशों को जनता बड़ी रुचि से सुनती थी। 5-6 मास रहकर वे स्वदेश चले गये।

सन् 1927 में ओवरपोर्ट की 'श्री रामायण सभा' ने पं. प्रवीण सिंह जी को अपनी हिन्दी पाठशाला के अध्यापक के रूप में फिर से यहां पर बुलाया। वे दो साल तक हिन्दी पढ़ाते रहे। साथ-साथ प्रचार कार्य भी चालू रहा। पंडित जी ने संस्कृत पढ़ाने के लिए एक रात्री पाठशाला भी खोली। इन्होंने कन्याओं को भी हिन्दी की शिक्षा दी। डरबन के सूरत हिन्दू एसोसियेशन में भी वे कुछ काल तक अध्यापन कार्य करते रहे। डॉ. भगत राम सहगल जब यहां पर आये तो उनके साथ मिलकर भी प्रवीण सिंह जी अच्छा प्रचार कार्य करते रहे। आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा की तरफ से भी कुछ मास तक अवैतनिक प्रचार कार्य किया। फिर वे स्वदेश लौट गये।

पं. कर्मचन्दजी

खदियाना डी. ए. वी. स्कूल के लिए चंदा करने के लिए पं. कर्मचन्दजी पूर्व अफ्रीका में पहुंचे थे। वहां से वे 1 जून 1927 के दिन दक्षिण आफ्रिका में भी आये। यहां पर प्रचार के साथ उन्होंने चंदा भी इकट्ठा किया। 3 मास के पश्चात् स्वदेश वापस गये। विदाई के समय वे कह गये कि जिस प्रदेश में एक भी आर्य मंदिर नहीं है, न कोई आर्य विद्यालय या गुरुकुल है वहां से स्वदेश के लिए चंदा इकट्ठा नहीं किया जाना चाहिए और उस जगह का द्रव्य वहीं के प्रचार कार्य में व्यय होना चाहिए। यह एक सच्चा अनुभव था।

आर्य समाजों के संस्थापक डॉ. भगतराम सहगल

अन्य प्रचारकों की तरह डॉ. भगतराम सहगल भी पूर्व अफ्रीका में प्रचारार्थ आये हुए थे। तब तक दक्षिण अफ्रीका में आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की स्थापना हो चुकी थी। सभा को ज्ञात हुआ कि निमंत्रण मिलने पर डॉक्टर भगत रामजी दक्षिण अफ्रीका भी आने को तैयार हैं। इससे प्रतिनिधि सभा ने डॉक्टरजी को यहां बुलाने का प्रबंध किया और वे सपत्नीक ता. 3 फरवरी 1929 को यहां पधारे।

आर्यसमाजों की स्थापना

यहां पहुंचते ही डॉ भगतराम जी ने नाताल भ्रमण का कार्यक्रम बना लिया। वे शहर-शहर जाकर प्रचार करने लगे। डॉक्टर जी के आने से पूर्व यहां आर्यसमाज का प्रचार हो चुका था। कई संस्थाएँ भी बन गयी थीं। पर बहुत सी आर्य समाज के नाम से नहीं बनीं थी। डॉक्टरजी जहां-जहां जाते, आर्यों को संगठन का महत्व समझाते। तथा उन्हें 'आर्यसमाज' स्थापित करने की प्रेरणा देते। इसके फल स्वरूप डॉक्टर भगतरामजी ने मेरित्सबर्ग, न्यूकासिल, सदरलेंड, पोर्ट शेप्सटन, स्टेंगर तथा पेंट्रीच आदि में नये आर्य समाजों की स्थापना की। इसी तरह उन्होंने केटो मेनस्की ''सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा'' एवं प्लेसिसलेयर की ''नागरी हितैषिणी सभा'' को आर्य समाज के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस तरह डॉक्टरजी ने दक्षिण अफ्रीका में जितने आर्य समाज स्थापित किये उतने और किसी ने नहीं किये परन्तु जिस बड़े परिमाण पर उन्होंने यह प्रचार कार्य शुरू किया था वह सुचारु रूप से नहीं चल सका। वे यहां छः

मास ही रह सके। इस काल में उन्होंने संस्थाएं तो कई स्थापित कर दीं परन्तु उनके यहां से जाने पर वे या बंद हो गयीं, या मृत प्राय: अवस्था में रहीं। डॉक्टरजी जहां जाते, शुद्धि, संस्कार तथा यज्ञ भी करवाते।

स्त्री समाज की स्थापना

डॉ. भगत रामजी पहले प्रचारक थे जो परिवार सहित यहां आये थे। उनकी धर्मपत्नी भी विदुषी थीं। इस कारण स्त्रियों में वैदिक धर्म के प्रचार का अच्छा मौका मिला। डॉक्टर जी श्री एम. मुन्नू के घर पर रहते थे। यह परिवार सुसंस्कृत था। श्री मुन्नू की पत्नी, पुत्र तथा पुत्र वधू डॉक्टरजी की धर्मपत्नी के सहयोग में कार्य करने लगीं। इस तरह ता. 25 मई 1929 को दक्षिण अफ्रीका में प्रथम स्त्री आर्य समाज की स्थापना हुई।

संघर्ष

डॉ. भगत रामजी ने आर्यसमाज की नींव को दृढ़ करना शुरू किया और इसीलिए जगह –जगह आर्य समाजों की स्थापना की थी। जब वे यहां प्रचार कार्य कर रहे थे तब मॉरिशस से सनातन धर्म का प्रचार करते हुए पं. राम गोविंद त्रिवेदी भी इस देश में आ पहुंचे। आर्य प्रतिनिधि सभा ने उनका सर्वप्रथम स्वागत किया तथा कई बार अपने यहां निमंत्रित भी किया। इस देश में सहयोग से भारतीय संस्कृति के प्रचार की महत्ता को वे समझ न सके। वे सहयोग के लिए तत्पर नहीं हुए। उन्हें सनातन धर्म महामंडल बनाने की चिन्ता थी। इस तरह दो प्रकार के प्रचार से जनता दुविधा में पड़ गयी। कई प्रसंग पर जोश भी फैल जाता था। आखिर समय पूरा

होने पर त्रिवेदी जी स्वदेश लौट गये। डॉ. भगत रामजी भी यहां से 7 जुलाई को इंग्लैंड के लिए रवाना हो गये। आर्य प्रतिनिधि सभा ने बड़े सम्मान से डॉक्टरजी को विदाई दी।

elibrary.thearyasamaj.org

अध्याय चौथा

ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी
-तथा-
आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

eLibrary.thearyasamaj.org

सन् 1925 फरवरी में भारतवर्ष में महर्षि दयानंद की जन्म शताब्दी का महोत्सव मथुरा में मनाया गया। उसके साथ ही विदेशों में भी इस महोत्सव के लिए योजनाएँ होने लगीं। दक्षिण अफ्रीका में भी इस शुभ अवसर को बड़े समारोह से मनाने का निर्णय हुआ।

डरबन की आर्य युवक सभा के प्रधान श्रीमान् सत्यदेवजी ने इसके लिए सर्वप्रथम आवाज़ उठायी। इस समय तक यह सभा अपने कार्यों से काफी ख्याति पा चुकी थी। ता. 2 नवम्बर 1924 को आर्य युवक सभा की तरफ से नाताल के वैदिक धर्मावलम्बियों का एक विराट अधिवेशन बुलाया गया। जिसमें प्रांत की 10-10 आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा अनेक आर्य सज्जन उपस्थित हुए। इस अधिवेशन में सभापति पद से श्री सत्यदेवजी ने ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाने का विचार पेश किया। पं. भवानी दयालजी तथा संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने इस विचार का सहर्ष स्वागत किया और इसके लिए 'दक्षिण अफ्रीका ऋषि दयानन्द

जन्म शताब्दी महोत्सव समिति का निर्माण हुआ। जिसके सभापति पं. भवानी दयालजी, मंत्री श्री सत्यदेवजी एवं कोषाध्यक्ष श्री बी.ए. मेघराजजी निर्वाचित हुए।

इस समिति के बन जाने से जन्म शताब्दी महोत्सव को धूम–धाम से मनाने के लिए तैयारियां होने लगीं। पं. भवानी दयालजी ने अपने साप्ताहिक पत्र 'हिन्दी' द्वारा इसके लिए आन्दोलन किया। कार्य को सुगठित करने के लिए कई उप–समितियां बन गईं। जिनके महोत्सव तक 29 अधिवेशन हुए।

जन्म शताब्दी महोत्सव

ता. 16 फरवरी से ता. 22 तक एक सप्ताह पर्यन्त ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव मनाया गया। यह महोत्सव डरबन में तमिल इंस्टीट्यूट के भवन में होता था। इस अवसर पर एक महायज्ञ किया गया। प्रतिदिन डेढ़ घण्टे तक यह महायज्ञ होता था। जिसमें यजुर्वेद के 20 अध्यायों से आहुति दी गयीं। इस प्रदेश मे ऐसा महायज्ञ यह प्रथम ही था। पं. नैना राजजी ने इस महायज्ञ में पुरोहित का कार्य बड़ी योग्यतापूर्वक किया। इस बृहत् यज्ञ का सम्पूर्ण व्यय लेडीस्मिथ के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता बाबू रघुनाथ सिंह ने दिया था।

शताब्दी महोत्सव प्रतिदिन शाम के 6 बजे से रात को 9 बजे तक होता था। उत्सव में विद्वानों के भाषण व निबन्ध पढ़े गये थे। संगीत का कार्यक्रम भी रखा गया था। भाषण ऋषि दयानन्दजी की जीवनी, आर्य सिद्धान्त, संस्कृति, मातृभाषा आदि पर हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में होते थे। वक्ताओं में मुख्यतया निम्नलिखित

विद्वान थे – पं. भवानी दयालजी, श्री पी. आर.पत्तर, श्री एस.एन रिचार्ड, श्री एफ, रामलगन, श्री एस. एल. सिंह, श्री एस. भगवानदीन, श्री सत्यदेवजी, श्री आर. एम. नायडू, श्री मोहकमचन्दजी, श्री टी. एम. नायकर आदि। श्री एस. एन. रिचार्ड एक ईसाई युवक थे पर उन्होंने स्वामी दयान्द के प्रति गहरी श्रद्धा और भक्ति व्यक्त की थी। जन्म शताब्दी समिति के सभापति पं. भवानी दयालजी ने इन उत्सवों का अध्यक्ष पद बड़ी योग्यता पूर्वक निभाया। उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों का प्रभाव बहुत अच्छा होता था।

विद्यार्थी सम्मेलन

इस महोत्सव पर आर्य विद्यार्थियों के एक सम्मेलन की भी योजना की गयी थी। जिसमें कई हिन्दी पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। विद्यार्थियों की भाषण प्रतिस्पर्धा, संगीत, भजन आदि के कार्यक्रम हुए थे। महोत्सव में भी विद्यार्थी बालक बालिकाओं ने अच्छा भाग लिया था। खासकर कुमारी धर्मदेवी, कुमारी कनकपति एवं कुमार तिलक ने अपने व्याख्यानों तथा भजनों से श्रोताओं को मुग्ध कर लिया था। इन विद्यार्थियों को पुरस्कार भी दिये गये थे।

जुलूस

21 फरवरी के दिन इस शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में एक बड़ा जुलूस भी निकाला गया। आर्य लोगों का अपना यह प्रथम बड़ा जुलूस था। उसमें आर्य संस्थाएं बैण्ड और बाजे के साथ भाग ले रही थीं। ओ३म् की पताकाओं से जुलूस सुशोभित था। वैदिक धर्म की जय के नारों तथा भजनों से आकाश गूंज उठता था।

आर्य नरनारियों का उत्साह देखने योग्य था। डरबन की विक्टोरिया स्ट्रीट के बायो हॉल से यह जुलूस निकलकर विभिन्न मार्गो पर घूमता हुआ। तमिल इन्स्टीट्यूट के भवन पर महोत्सव की सभा के रूप में समाप्त हुआ था।

प्रथम वैदिक परिषद्

इस शताब्दी महोत्सव का सबसे प्रधान कार्य प्रथम वैदिक परिषद का आयोजन था। इस परिषद में नाताल की विभिन्न आर्य संस्थाओं के 136 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था तथा हजार से अधिक श्रोताजन उपस्थित थे। यह उपस्थिति यहां के लिये एक बड़ी संख्या है। इस परिषद में पारसी, मुसलमान और ईसाई बंधु भी उपस्थित होते थे। सन् 1912 में स्वामी शंकरानन्दजी महाराज ने जो हिन्दू कॉन्फ्रेंस बुलायी थी उससे इस परिषद की तुलना की जा सकती थी।

इस वैदिक परिषद के स्वागताध्यक्ष डरबन के प्रसिद्ध उत्साही कार्यकर्ता श्रीमान् आर.के. कैपिटन थे। उनके ही प्रयत्नों से प्रतिनिधियों का सुयोग्य स्वागत प्रबंध हो सका था। परिषद के अध्यक्ष लेडीस्मिथ निवासी आर्य सज्जन बाबू रघुनाथ सिंह निर्वाचित हुए थे।

ता. 21 फरवरी 1935 को दोपहर को ढाई बजे डरबन के विक्टोरिया स्ट्रीट के रावत बायो हॉल में परिषद का बड़े समारोह से प्रारम्भ हुआ। स्वागताध्यक्ष एवं प्रधान के भाषणों और संगीत आदि के कार्यक्रम पश्चात् यह परिषद दूसरे दिन के लिए स्थगित हो गई। दूसरे दिन पुनः 10.30बजे से परिषद चालू हुई। इस दिन महिलाओं

की संख्या ध्यान खींचने वाली थी। श्रीमती कुसुमी, श्रीमती आर. एम. नायडू तथा श्रीमती एम. भगवानदीन आदि महिलाओं ने स्त्री शिक्षा, परदा प्रथा आदि विषयों पर महत्वपूर्ण निबन्ध पढ़े।

इस प्रथम वैदिक परिषद में सात प्रस्ताव स्वीकृत हुए। जिनमें हिन्दू जनता का ध्यान निम्न बातों की ओर खीचा गया था : मादक द्रव्यों के सेवन को रोका जाय, सब आर्य षोडश संस्कारों पर अमल करें, प्रतिदिन संध्या हवन आदि नित्य कर्म किये जायें, गरीब और दलित वर्ग को भाई समझकर, जातपात के भेदों को भुलाकर उनकी उन्नति के प्रयत्न किये जावें, हर एक संस्था मात्भाषा और स्त्री शिक्षा को योग्य प्रबन्ध करे।

इस वैदिक परिषद में नाताल प्रांत की निम्नलिखित संस्थाएं, सम्मिलित हुई थीं। आर्य युवक सभा, डरबन; हिन्दी आर्य आश्रम, लेक्रेस्टेट; सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा, केटो मेनर; हिन्दी प्रचारिणी सभा, क्लेरेस्टेट; आर्य समाज, लेडीस्मिथ; हिन्दू यंग मेन्स एसोसियेशन, न्यूकासिल; हिन्दी प्रचारिणी सभा, न्यूकासिल, हिन्दू यंग मेन्स एसोसियेशन, मेरित्सबर्ग; विद्या प्रचारिणी सभा, मेरित्सबर्ग; वेद धर्म सभा, मेरित्सबर्ग; विद्या प्रचारिणी सभा, रायकोपिस; यंग मेन्स सोसायटी, पोइन्ट; नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड; आर्य युवक मंडल,सीकाउलेक; पोइन्ट; नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड; आर्य युवक मंडल, सीकाउलेक; वैदिक सन्मार्ग सोसायटी, अमगेनी; नागरी प्रचारिणी सभा, केम्प ड्रीफ्ट।

यहां की समिति की तरफ से मथुरा में होने वाली जन्म शताब्दी के लिए पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार, श्री देवी दयालजी तथा सी.वी.

पिल्ले प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। डरबन शहर के अतिरिक्त लेडीस्मिथ, पीटर मेरित्सबर्ग आदि स्थानों पर भी शताब्दी उत्सव मनाया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी तथा उसकी प्रथम वैदिक परिषद में सब से महत्त्वपूर्ण कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना का हुआ। इस प्रदेश में स्वामी श्री शंकरानन्दजी, पं. भवानी दयालजी तथा अन्य प्रचारकों के कारण आर्य समाज के विचारों का प्रचार खूब बढ़ गया था। प्रांत भर में कई आर्य संस्थाएं भी स्थापित हो चुकी थीं। परन्तु अभी तक इन संस्थाओं का कोई केन्द्रीय संगठन न था। सभी हिन्दुओं का दृढ़ संगठन करने वाली भी कोई संस्था न थी। स्वामी शंकरान्दजी द्वारा स्थापित हिन्दू महासभा मृत प्रायः हो चुकी थी। उसे जिलाने के प्रयत्न आपसी मतभेदों के कारण व्यर्थ हो रहे थे।

इस जन्म शताब्दी महोत्सव का विचार जब श्री सत्यदेवजी ने रखा तभी उनका यह भी ख्याल था कि इस शुभ अवसर का लाभ उठाकर आर्य संस्थाओं का एक दृढ़ केन्द्रीय संगठन किया जावे। इस महोत्सव में भाग लेने वाली संस्थाओं ने इस विचार को प्रीतिपूर्वक अपना लिया।

ता. 22 फरवरी 1925 को शिवरात्रि के दिन प्रथम वैदिक परिषद में श्री आर. एम. नायडू ने तीसरा प्रस्ताव रखा कि ''दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए 'केन्द्र आर्य वैदिक सभा' की रचना की जाये।'' इस प्रस्ताव के संशोधन में पं. भवानी

दयालजी ने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा ''ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी पर इस सम्मेलन में पधारे हुए लोग निश्चय करते है। कि एक 'आर्य प्रतिनिधि सभा' की स्थापना हो तथा उसके द्वारा दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म का प्रचार हो।'' प्रस्तावक ने इस संशोधन को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सर्व सम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा का केन्द्र-स्थल डरबन में रखने का निश्चय हुआ। इस सभा के सर्व प्रथम प्रधान पं. भवानी दयालजी निर्वाचित हुए। मंत्री और उपमंत्री के पदों पर श्री बी.ए. मेघराज तथा श्री पी. आर. पत्तर चुने गये। कोषाध्यक्ष श्री आर. के. केपिटन बने। प्रतिनिधि सभा के सर्व प्रथम मंत्री और उपमंत्री अपने कार्य भार को निभाने में असमर्थ रहे। एक मास के बाद ही उन्होंने त्याग पत्र दे दिया। जिससे श्री बी. उदित नये मंत्री चुने गये दूसरे वर्ष श्री सत्यदेवजी सभा के मंत्री निर्वाचित हुए। तबसे आज तक उन्होंने बड़ी योग्यता पूर्वक मंत्री पदके इस उत्तरदायित्व को निभाया है और उनके इस 24 वर्ष के अनथक परिश्रम का ही फल है कि सभा अपनी रजत जयन्ती मना रही है।

सार्वदेशिक सभा, देहली में सम्मिलित

आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की स्थापना हो जाने पर यह भी विचार हुआ कि इस प्रतिनिधि सभा को देहली की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित हो जाना चाहिए। जिससे संसार की सभी आर्य संस्थाओं का एक सुदृढ़ संगठन हो सके। इस विचार के अनुसार ता. 23 अक्टूबर 1927 को यह प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा में सम्मिलित हो गई।

अध्याय पाँचवाँ

आर्य प्रतिनिधि सभा परिषदें और सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा अपनी स्थापना के बाद दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुओं की उन्नति के लिए, विविध कार्य करने लगी। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य परिषदों और सम्मेलनों के आयोजनों का है। हिन्दू-आर्य जनता में जागृति पैदा करने के लिए और उनमें धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना लाने के लिए समय-समय विविध सम्मेलन किये गये। इन सम्मेलनों के द्वारा ही हिन्दू महासभा को पुनरुज्जीवित किया गया है, हिन्दी शिक्षा संघ की स्थापना की गई है तथा दूसरे महत्त्वपूर्ण निश्चय हुए हैं। यहां पर महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों तथा परिषदों का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है:-

वैदिक परिषदें

सभा ने अपने 25 वर्ष के जीवन में 6 महत्त्वपूर्ण वैदिक परिषदों का आयोजन किया है। जो निम्न प्रकार है:-

पहली वैदिक परिषद

यह वैदिक परिषद ता. 16 फरवरी 1925 को हुई। इसी परिषद में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई थी। (विवरण देखिये अध्याय 4)

elibrary.thearyasamaj.org

दूसरी वैदिक परिषद

यह परिषद ता. 3 अक्टूबर 1925 को लेडीस्मिथ नगर में प्रतिनिधि सभा की तरफ से हुई। परिषद में प्रांत भर की आर्य संस्थाएं सम्मिलित हुई। परिषद के सभापति पं. भवानी दयालजी निवाचित हुए। स्वागताध्यक्ष श्री रामसुंदर पाठक थे। इस परिषद के लिए श्री सत्यदेवजी तथा श्री आर. एम. नायडू विषेष मंत्री नियुक्त हुए। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभा के नियम-उपनियम आदि स्वीकृत किये गये। लेडी स्मिथ के उदार आर्य सज्जन बाबू रघुनाथ सिंह के उत्साह से यह परिषद सफल हो सकी। उन्होंने इस परिषद के लिए अत्यधिक परिश्रम किया एवं भोजन, मंडप आदि की व्यवस्था भी अपने व्यय से की थी। परिषद के मंत्री श्री सत्यदेवजी की छोटी लड़की करुणा अकस्मात् से दो दिन पूर्व ही जल गई। फिर भी वे निष्ठा से परिषद का कार्य करते रहे। परिषद के दिन वे लेडी स्मिथ पहुंचे ही थे कि डरबन से लड़की के अकाल अवसान का दु:खद समाचार पहुंचा और उन्हें पुन: डरबन के लिए रवाना होना पड़ा था।

तीसरी वैदिक परिषद

यह परिषद नाताल की राजधानी पीटर मेरित्सबर्ग नगर में ता. 31 जुलाई तथा 1 अगस्त 1926 को हुई। इस परिषद के सभापति आर्य विद्वान पं. आर. बी. महाराज थे। स्वागताध्यक्ष श्री गाही सिंह थे। इस परिषद में कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए जिनमें दो महत्त्वपूर्ण थे। एक में कहा गया था कि नाताल की सभी हिन्दू संस्थाओं की गोल मेज परिषद बुलाकर हिन्दुओं का संगठन किया जावे। इस प्रस्ताव के अनुसार जब कार्य करने को उद्यत हुए तो कई संस्थाएं इसके

लिए तैयार नहीं हुई। इस समय सनातन धर्म के प्रचारक पं. राम गोविंद त्रिवेदी यहां आये हुए थे। इन के साथ भी इस प्रश्न पर चर्चा हुई। पर वे इस संगठन के विरुद्ध थे। स्वामी शंकरानन्दजी द्वारा संस्थापित हिन्दू महासभा को पुनः जीवित करने के प्रयत्न भी व्यर्थ गये। श्री राम गोविन्द त्रिवेदी ने सनातन धर्म महामंडल की स्थापना की। यह संस्था भी कुछ काम न कर सकी। न इसके कारण कोई संगठन हो सका।

दूसरा प्रस्ताव इस परिषद में मातृभाषा के सम्बन्ध में स्वीकृत हुआ। जिस में कहा गया था कि प्रतिनिधि सभा तथा सम्मिलित संस्थाएं अपनी सारी कार्यवाही मातृभाषा हिन्दी में करें। इस प्रस्ताव के अनुसार आज भी प्रतिनिधि सभा का सारा कार्य हिन्दी में होता है। इस देश में बहुत कम संस्थाएं हैं जो अपनी सारी कार्यवाही मातृभाषा में करती हों।

चौथी वैदिक परिषद

यह परिषद ता. 11 और 12 मार्च 1939 को डरबन के तामिल इन्स्टीट्यूट, डरबन के हॉल में हुई। इस परिषद के अध्यक्ष श्री बी. बोधा सिंह थे। स्वागताध्यक्ष श्री एस.एल. सिंह थे। परिषद का उद्घाटन श्री के. बैजनाथ ने किया। इस परिषद में श्री टी. एम. नायकर ने धर्म पर, श्री बी. एम. पटेल ने संस्कृति पर तथा पं. अवध बिहारी ने मातृभाषा पर निबन्ध पढ़े। हर एक संस्था ने मातृभाषा पढ़ाने की व्यवस्था करने का आग्रह किया गया।

पांचवीं वैदिक परिषद

यह परिषद ता. 14–15 फरवरी 1942 को शिवरात्री के शुभ

अवसर पर डरबन में हुई। परिषद के सभापति श्री आर. बोधासिंह, उद्घाटनकर्ता श्री बाबू पद्म सिंह तथा स्वागताध्यक्ष श्री एस.एल. सिंह थे। इस परिषद में भी कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए। पं. आर. बी. महाराज ने धर्म पर, पं. तुलसीराम जी ने संस्कारों पर तथा श्रीमती ए. पी. सिंह ने स्त्री शिक्षा पर निबन्ध पढ़े। स्त्रियों को हिन्दी पढ़ाने, पुरुषों के समान हक देने और स्त्री उन्नति के विषयों पर प्रस्ताव हुए।

छठी वैदिक परिषद

यह परिषद डरबन में 19 जुलाई 1947 के दिन सभा के भवन में हुई। इस परिषद में काठियावाड हिन्दू सेवा समाज के अध्यापक पं. धनशंकरजी शास्त्री ने धर्म पर, सूरत हिन्दू एसोसियेशन के महाराज श्री केशवराम त्रिवेदी ने मातृभाषा पर निबन्ध पढ़े। इस वर्ष भारतवर्ष में हुए हिन्दू-मुस्लिम दंगों के लिए भी निन्दात्मक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

शिवरात्रि महोत्सव (ऋषि बोधोत्सव)

यहां पर भारतीय त्योहार और आर्य पर्व हर एक स्थानीय संस्था मनाती है जबकि शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव) का पर्व खुद आर्य प्रतिनिधि सभा मनाती है। सन् 1928 में शिवरात्रि सप्ताह मनाया गया। इसमें स्वामी भवानी दयालजी, पं. प्रवीण सिंहजी, श्री बी. एम. पटेल तथा श्री सत्यदेवजी आदि के व्याख्यान हुए थे। संगीत आदि का कार्यक्रम भी हुआ था। 1929 में पुनः शिवरात्रि सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष देश के विद्वान प्रचारक डॉ. भगतराम, पं. प्रवीण सिंहजी तथा स्वामी भवानी दयालजी उपस्थित थे। इन्होंने विविध

विषयों पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये। सन् 1932, 1942 और 1944 में भी शिवरात्रि सप्ताह मनाया गया। 1942 में इस मौके पर विद्यार्थी सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन तथा पांचवीं वैदिक परिषद भी हुई थी। शेष वर्षो में ऋषि बोधोत्सव दिन मनाया गया।

विद्यार्थी सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सम्मिलित संस्थाओं में से कई हिन्दी पाठशालाएं भी चलाती हैं। इन पाठशालाओं के विद्यार्थियों में हिन्दी के प्रति प्रेम तथा उत्साह बढ़े, वे वैदिक धर्म और आर्य समाज से परिचित हों तथा जनता भी इन विद्यार्थियों के कार्यो को देख सके, इस उद्देश्य से प्रतिनिधि सभा के द्वारा समय-समय पर विद्यार्थी सम्मेलन भी होते हैं। जिनमें बहुत सी संस्थाओं के विद्यार्थी लड़के और लड़कियां भाग लेती हैं वे हिन्दी में भाषण, गीत, कवितापाठ, संवाद, अभिनय आदि के कार्यक्रम कुशलता से कर दिखाते हैं। प्रतियोगिता में पहले, दूसरे आने वाले विद्यार्थियों को सभा की ओर से पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

आर्य महासम्मेलन

सन् 1932 में शिवारात्रि के अवसर पर 5 मार्च को आर्य महासम्मेलन हुआ। जिसमें आर्य सज्जनों में धार्मिक भाव जागृत करने और तदनुकूल आचरण करने पर जोर दिया गया। सभी आर्यो से दैनिक संध्या, हवन आदि नित्य कर्म करने के लिए अनुरोध किया गया। आर्य सदस्य बढ़ाने और वेद मंदिर बनाने के सम्बन्ध में प्रस्ताव हुए।

ऋषि दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी

सन् 1933 में भारत वर्ष में ऋषि दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी अजमेर में मनायी गयी। इस अवसर पर यहां पर भी निर्वाण अर्ध शताब्दी मनाने की योजना हुई। 16 अक्टूबर से 23 अक्टूबर तक निर्वाण सप्ताह मनाया गया। केटो मेनर, क्लेरवुड, गांधी लायब्रेरी, तामिल इंस्टीट्यूट आदि में प्रचार सभाएं हुई। इस अवसर पर सभा के प्रधान स्वामी भवानी दयालजी तथा दूसरे वक्ताओं ने ऋषि दयानन्द की जीवनी पर तथा सिद्धान्तों पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिये। इस अवसर पर विद्यार्थी सम्मेलन भी हुआ था।

हिन्दू परिषद

दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी के सुअवसर पर हिन्दुओं को संगठित करने के लिए हिन्दू परिषद का आयोजन किया गया। स्वामी शंकरानन्दजी द्वारा संस्थापित हिन्दू महासभा मृत प्रायः हो गई थी। हिन्दुओं के संगठन के लिए इसे पुनरुज्जीवित करना बहुत जरूरी था। आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसके लिए अपनी तीसरी वैदिक परिषद में प्रस्ताव करके तदनुसार प्रयत्न भी किया था। वह विफल हुआ था। निर्वाण शताब्दी पर इसके लिए फिर प्रयास किया गया और एक हिन्दू परिषद की आयोजना हुई। इस परिषद में 80 हिन्दू संस्थाओं ने भाग लिया और एक प्रस्ताव से हिन्दू महासभा को पुनः जाग्रत किया गया और हिन्दुओं का संगठन हो सका। तबसे हिन्दू महासभा का कार्य हिन्दुओं के हित की दृष्टि से आज तक चालू है।

पुरोहित सम्मेलन

इस प्रदेश में वैदिक पद्धति से विवाह का प्रचार बढ़ने लगा। परन्तु पुरोहित लोग संस्कार विधि के ठीक अनुकूल विधि नहीं करवाते

थे। वे व्यक्तिगत रूप से कुछ न कुछ घटा-बढ़ा दिया करते थे। इस अव्यवस्था को दूर करने के लिए ता. 1, 2 जुलाई 1944 को प्रतिनिधि सभा के भवन में एक पुरोहित सम्मेलन रखा गया। इस सम्मेलन के सभापति पं. अवधबिहारी थे। इस अवसर पर जोहानिसबर्ग की गुजराती संस्था के अध्यापक, गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पं. सुधीर कुमारजी विद्यालंकार भी उपस्थित थे और मार्ग दर्शन करते रहे। इस सम्मेलन में पुरोहितों की पोशाक से लेकर आशीर्वाद में वर-वधू पर फूल या चावल डाले जायें आदि छोटी-बड़ी सभी बातों पर चर्चा हुई थी तथा प्रायः संस्कार विधि की पद्धति के अनुकूल प्रत्येक क्रिया करने का निश्चय हुआ था।

आवश्यक महाधिवेशन

सम्मिलित संस्थाओं के लिए साप्ताहिक सत्संग, हिन्दी पाठ विधि तथा यहां के आर्यों की जन गणना करने के लिए प्रतिनिधि सभा का एक महाअधिवेशन 17,18 नवम्बर 1945 को हुआ। इसके सभापति पं. अवधबिहारी थे। इसमें साप्ताहिक सत्संग का सामान्य क्रम तय किया गया। पाठशालाओं की बाल वर्ग से आठवें दर्जे तक की सम्पूर्ण पाठ विधि निश्चित की गई तथा आर्यों की जन गणना करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। व्यवहारिक कठिनाईयों के कारण यह जन गणना नहीं हो सकी थी।

हिन्दी सम्मेलन

नाताल प्रांत की समस्त हिन्दी पाठशालाओं को संगठित करने के उद्‌उेश्य से गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पं. नरदेव वेदालंकार की प्रेरणा से यह हिन्दी सम्मेलन ता. 24, 25 अप्रैल 1948 को हुआ।

इसमें 'हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल' नाम की स्वतंत्र संस्था की स्थापना की गई। (विवरण देखिये अध्याय 8)

प्रथम आर्य युवक परिषद

प्रतिनिधि सभा ने 31 जुलाई 1948 के दिन प्रथम आर्य युवक परिषद का आयोजन किया। इस परिषद में धर्म और संस्कृति पर पं. नरदेव वेदालंकार, आरोग्य और दीर्घायु पर डॉ. एन. पी. देसाई, व्यायाम पर श्री सनी मोदली तथा संगीत विषय पर श्री हर सिंह मुख्य वक्ता थे। अन्य वक्ताओं के भी भाषण हुए। इन चारों विषयों पर प्रस्ताव भी स्वीकृत हुए।

इस तरह से विविध सम्मेलन और परिषदें प्रतिनिधि सभा की ओर से होती रहीं। जहां तक हो सका इनके प्रस्तावों को कार्य रूप में रखने का प्रयत्न हुआ है।

elibrary.thearyasamaj.org

अध्याय छठा

आर्य प्रतिनिधि सभा

–+ –

वेद मंदिर का निर्माण

तथा

विविध कार्य

elibrary.thearyasamaj.org

भूमि का खरीदना

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना के दिन से ही आर्यों के दिल में यह महती इच्छा थी कि प्रतिनिधि सभा का अपना भवन बने। इस विषय पर बार–बार चर्चाएं एवं विचार हुए। पर यह कार्य सहज न था। सामान्य रूप से आर्य समाजी जनता इस प्रदेश में अधिक गरीब है। इस से भवन के लिए पैसे इकट्ठे करना बड़ा मुश्किल रहा है। सभा 10 वर्ष के बाद इस कार्य में पहला कदम बढ़ा सकी। सभा के उत्साही एवं उदार प्रधान श्री आर. के. केपिटन के प्रयत्नों से 1 अप्रैल 1936 में कार्लाइल स्ट्रीट, डरबन में 2000 पौंड के ऋण से भवन के लिए भूमि खरीदी गई। प्रधान जी ने 100 पौंड सर्वप्रथम दिये तभी यह भूमि सभा के कब्जे में आयी।

भूमि का उऋणोत्सव

सभा के पास जमीन हो गई, पर उसे कर्ज से मुक्त करना था। इस कार्य के लिए एक उप समिति बनायी गयी। वह चंदा इकट्ठा करने का कार्य करने लगी। इस कार्य में तन,मन और धन से सहयोग देने वाले सज्जन श्री बी. बोधा सिंह, श्री आर. बोधा सिंह, श्री एम.एल. सिंह श्री सत्यदेवजी, श्री जी.मेदई और श्री एम. मुन्नू थे। इनके प्रयत्नों से सभा 1941 में भूमि के ऋण से मुक्त हो सकी। इसके उपलक्ष्य में ता. 7 दिसम्बर 1941 को सभा ने अपनी भूमि पर उऋणोत्सव मनाया।

भवन प्रवेद यज्ञ

सभा ने वेद मंदिर के लिए भूमि तो खरीद ली थी पर वहां जो मकान थे वे इस लायक न थे कि उसमें सभा आदि हो सके। बड़ा भवन बनाना भी मुश्किल था। सो सभा ने निश्चय किया कि थोड़ा खर्च करके एक छोटा हॉल तैयार किया जावे; क्योंकि अब तक सभा को अपने कार्यों के लिए दूसरी संस्थाओं पर आश्रित रहना पड़ता था। इससे एक तात्कालिक काम चलाऊ भवन तैयार किया गया। उसमें कार्य चालू करने के लिये ता. 4 फरवरी 1943 के दिन भवन प्रवेश यज्ञ किया गया। तबसे सभा के छोटे बड़े सभी कार्य इसी भवन में होते रहे हैं।

श्रीमान आर. बोधा सिंह के उदार दान की घोषणा

सभा को अब भी एक विशाल वेद मंदिर बनाने का कार्य बड़ा दुष्कर प्रतीत होता था। उसके लिए काफी धनराशि की जरूरत थी। परम कृपालु परमात्मा की कृपा से सभा को एक उदार हृदय

दानवीर आर्य सज्जन का सहयोग प्राप्त हुआ। इसका शुभ नाम है श्रीमान आर. बोधा सिंह। श्री बोधा सिंह स्टेंगर के निवासी हैं। वहां उनकी गन्ने की अच्छी खेती है। श्री आर. बोधा सिंह सन् 1940 से प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं। उन्होंने तो. 22 फरवरी 1944 को शिवरात्रि के शुभ पर्व पर वेद मंदिर के लिए सभा को 10,000 पौंड (लगभग 132,000 रुपया) दान देने की उदार घोषणा की। इस घोषणा से सभा क हिम्मत खूब बढ़ गई और उसने वेद मंदिर का नक्शा तैयार करवा लिया है तथा सभा की रजत जयंती के शुभ अवसर पर वेद मंदिर की आधार शिला रखी जा रही है। चिर प्रतीक्षा के बाद आर्यों की अभिलाषा पूर्ण हो रही है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक तथा ट्रस्टीगण

आर्य प्रतिनिधि सभा को सहायता देने वाले अनेक आर्य सज्जन हैं, जिन्होंने अपने तन, मन और धन से इसकी सहायता की है। जो सज्जन सभा को 150 पौंड दान में देते हैं वे सभा के आजीवन ट्रस्टी बन जाते हैं। सभा को सेवा देने वाले कई सज्जन निर्वाचित ट्रस्टी भी हैं। मुख दाताओं के शुभ नाम ये हैं:-

250 पौंड स्व. बी. बोधा सिंह, 150 पौंड स्व. जे.बी. डेनियल. 110 पौंड स्व. बी. सुखदेव सिंह, 105 पौंड श्री आर. बोधा सिंह, 101 पौंड श्री बी. एम. पटेल, 100 पौंड स्व. आर. के केपिटन, 75 पौंड स्व. के. बैजनाथ, 60 पौंड श्री जी. मेदई, 52 पौंड 10 शि. श्री आर्य संगीत मंडल।

50 पौंड देने वाले सज्जन : श्री एम. मुन्नू, श्री बी.ए. मेघराज, स्व. एल. बोधासिंह, श्री चुनीलाल ब्रदर्स, स्व. एस. बद्री, 32 पौंड

10 शि. श्री के. आर दीवान एण्ड सन्स।

25 पौंड देने वाले सज्जन : श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री आर. देवा ब्रदर्स, श्री बी. एम. मिस्त्री, श्री जे. मगनलाल, श्री पी. सीब्रन एंड रघु ब्रदर्स, श्री गांधी एंड कम्पनी, सी. एन. राणा, श्री आर. बी. चेटी, श्री विक्टोरिया प्रोडयूस कम्पनी, श्री जे. रामप्रसाद, स्व. एल. राज कुमार, स्व. बी. बेचू, श्री बी. जे. मिस्त्री ब्रदर्स, स्व. राम गुलाम, श्री जी. राम प्रसाद, स्व. बी.बी. महाराज, स्व. एम. बोधा सिंह।

25 पौंड से कम रकम देने वाले अन्य अनेक सज्जन हैं।

माननीय ट्रस्टी

श्री बी.ए. मेघराज, श्री बी.एम. पटेल, श्री आर. बी. महाराज. श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री आर. बोधा सिंह, श्री एम मुन्नू, श्री एस. एल. सिंह, श्री बी. सी नैनाराज, श्री पी.बी. सिंह, श्री जी. मेदई, श्री एच. बोधा सिंह।

elibrary.thanvesanai.org

प्रतिनिधि सभा के विविध कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने सम्मेलनों और परिषदों द्वारा तथा प्रचारकों और सम्मिलित संस्थाओं द्वारा इस प्रदेश में बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य किये है। जिनकी वजह से इस सुदूर प्रदेश में भी आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यता जीती जागती रही है। परन्तु उन बड़े-बड़े कार्यों के अतिरिक्त भी प्रतिनिधि सभा ने छोटे-मोटे कार्यों में बड़ी दिलचस्पी और जागरूकता दिखलाई है। जिससे आर्य जीवन की जड़ें मजबूत रहें और उनमें घुन न लगने पाये। ऐसे कुछ कार्यों का संक्षेप में यहां उल्लेख किया जाता है:-

जेलों में तथा अस्पतालों में प्रचार

नाताल प्रांत की जेलों में भारतीय कैदियों को धार्मिक उपदेश और प्रचार करने के लिए रविवार को सुविधा दी जावे; इसके लिए सभा ने यूनियन सरकार से अनुमति मांगी थी। हर्ष है कि सरकार ने यह अनुमति दी है और आज 25 वर्षों से डरबन, मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ और स्टेंगरकी जेलों में सभा के प्रचारकों की ओर से उपासना और धार्मिक प्रचार किया जाता है। इस प्रचार का कैदियों पर प्रभाव होते भी देखा गया है और कई मौके पर पश्चाताप से कैदियों ने आंसू भी बहाये हैं तथा जेल से बाहर आकर अपने जीवन को सुध ारा है। जेलों में जाकर प्रचार करने वाले मुख्य सज्जनों के नाम ये हैं:- श्री सत्यदेवजी, पं. नैनाराज, पं. जगमोहनजी, पं. आर.बी. महाराज, पं. आर. बनवारी, पं. लक्ष्मी नारायणजी, पं. रामसुन्दर पाठक तथा स्व. बाबू रघुनाथ सिंहजी।

इसी तरह से यहां के अस्पतालों में भी प्रचार करने की सुविधा मिली है। अस्पतालों में मृत्यु पाने वाले हिन्दुओं के शवों को अग्नि दाह देने के लिये भी सभा ने प्रार्थना की थी। उसका खर्च देना अस्पतालों के अधिकारियों के मंजूर न करने से वैसा नहीं हो सका है। अस्पतालों में हर एक दर्दी के पास जाकर स्वास्थ्य और शांति की प्रार्थना करने वाले सेवाभावी पुरोहितों की बड़ी आवश्यकता है। ईसाई मिशन के कार्यकर्ता हर एक धर्म के रोगी के पास जाकर ऐसी प्रार्थना करते हैं। इसका मानसिक प्रभाव बहुत होता है।

(2) ईसाइयत की शिक्षा का विरोध

सरकारी सहायता से संचालित तथा ईसाई मिशन की अंग्रेजी पाठशालाओं में हिन्दू बच्चों को भी बाइबिल से प्रार्थना करनी पड़ती थी। सभा ने इसका विरोध किया। इसी तरह मिशन से चलने वाले विद्यालयों में ईसाइयत की शिक्षा हिन्दू बच्चों को भी दी जाती थी। इसके विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा ने ता. 15 फरवरी 1942 की वैदिक परिषद में घोर विरोध जाहिर किया और प्रस्ताव भी किया गया। जिसके परिणामस्वरूप यहां के शिक्षा विभाग ने यह मान लिया है कि जिन माता-पिताओं को इस बात का विरोध उनके बच्चों को ईसाई धर्म की शिक्षा से मुक्ति दी जावे। अब तो भारतीयों की पाठशालाओं में अपनी प्रार्थना होती है।

(3) ''इण्डियन व्यूज़'' का गंदा प्रचार तथा पादरी की कृष्ण निन्दा

डरबन के मुस्लिम साप्ताहिक पत्र 'इण्डियन व्यूज़' ने अपने ता.2 सितम्बर 1927 के अंक में हिन्दू देव-देवियों के लिए

अपमानजनक शब्दों और गालियों का प्रयोग किया था। उसके विरुद्ध सभा ने ता. 12 सितम्बर 1927 की अपनी सभा में घोर विरोध प्रस्ताव पास किया था। वह प्रस्ताव कांग्रेस आदि संस्थाओं को भी भेजा गया था और निवेदन किया गया था कि ऐसा प्रचार झगड़े का कारण हो सकता है।

इसी तरह डरबन के हिन्दुस्तानियों में ईसाई मिशन के मुख्य प्रचारक पादरी पास्टर रोलेन्ड ने अपने मासिक 'मूविंग वोटर' के अक्टूबर 1941 के अंक में भगवान श्री कृष्ण और ईसामसीह की तुलना करके श्री कृष्ण को नीचा दिखाने की कोशिश की थी। इसके विरुद्ध भी प्रतिनिधि सभा ने सख्त विरोध का प्रस्ताव किया था। इस सम्बन्ध में डरबन के मेयर को भी लिखा गया था। आखिर पादी महोदय को अपने लेख के लिए क्षमा मांगनी पड़ी थी।

(4) सर सैयद रजा अली का विवाह

भारत सरकार के दक्षिण अफ्रीका के राजदूत सर सैयद रजा अली ने जनवरी 1936 मास में किम्बर्ली की एक हिन्दू कन्या कु. सामी से विवाह करना तय किया। इस कारण से हिन्दू समाज में घोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। इस विरोध का सूत्रपात प्रतिनिधि सभा ने किया। इस विवाह के विरुद्ध 19 जनवरी 1936 के दिन सभा ने समस्त हिन्दुओं का एक विराट् अधिवेशन बुलाया, जिसमें सहस्रों हिन्दू उपस्थित थे। इसमें उक्त विवाह का घोर विरोध हुआ और बड़े गरमागरम भाषण हुए। सभा की प्रेरणा से कई संस्थाओं ने उग्र विरोध के प्रस्ताव पास किये। हर एक हिन्दू संस्था को श्री सैयद

रजा अली से असहयोग करने के लिए प्रार्थना की गई। इस तरह इस विवाह के विरुद्ध सारे दक्षिण अफ्रीका में उग्र विरोध जाग उठा। इसके परिणाम स्वरूप सर सैयद रजा अली ने रजिस्ट्रेशन द्वारा विवाह किया और मृत्यु पर्यन्त कु. सामी का धर्म परिवर्तन नहीं हो सका।

(5) हैदराबाद सत्याग्रह तथा सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती

यह प्रतिनिधि सभा सार्वदेशिक सभा, देहली के साथ सम्मिलित है। उसके आदेशों और आदर्शों के अनुकूल कार्य करती है। हैदराबाद की निजाम सरकार ने अपने राज्य में हिन्दुओं तथा आर्यों पर जो धार्मिक प्रतिबन्ध लगाये थे उसके विरुद्ध भारत में 1939 में आर्य समाजियों ने सत्याग्रह किया। उसके प्रति इस सभा की पूर्ण सहानुभूति रही तथा उस परिस्थिति से बड़ी चिन्तित रही। उस समय सभा ने सहायतार्थ चन्दा भी करके भेजा। इसी प्रकार सिंध की मुस्लिम लीग सरकार ने, सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास के छापने पर प्रतिबन्ध लगाया था। उसका विरोध और निन्दा करने वाला प्रस्ताव भी सभा ने किया था।

(6) प्रकाशन : आर्य समाज के प्रचार का इतिहास

इस देश में भाई परमानन्दजी सर्वप्रथम आर्य समाज का संदेश लेकर पहुंचे थे। 5 अगस्त 1930 को इस देश में आर्य समाज के प्रथम सन्देश को पहुंचे 25 वर्ष होते थे। इस अवसर पर प्रतिनिधि सभा ने इन 25 वर्षों के प्रचार का इतिहास छपवाने का निर्णय किया। सभा के मंत्री श्री सत्यदेवजी ने बहुत परिश्रम उठाकर यह इतिहास तैयार किया। इसमें देश के पधारे हुए सभी आर्य

प्रचारकों का कार्य वृत्तांत, प्रतिनिधि सभा का प्रारम्भिक इतिहास, सम्मिलित संस्थाओं का कार्य विवरण एवं मुख्य कार्य कर्ताओं की जीवनी लिखी गयी थी, जिसके साथ दर्जनों चित्र भी रखे गये थे। यह इतिहास आर्य भास्कर प्रेस आगरा में छपने के लिए भेजा गया था। इसके लिए देश में सभा के प्रधान श्री आर. के. केपिटल तथा स्वामी भवानी दयालजी ने बहुत श्रम लिया। जब इतिहास छपकर बम्बई पहुंच गया तो उस समय 1932 में देश में सत्याग्रह का आन्दोलन चल रहा था तथा विदेशी माल के बहिष्कार का आन्दोलन उग्र था और उसकी होली जला दी जाती थी। दुर्भाग्य से सभा का यह इतिहास जहां पर रखा गया था वहां पर भी ऐसी आग लगा दी गई और सबकी सब नकलें उसी में स्वाहा हो गई। परिश्रम और व्यय से तैयार किया गया कार्य भस्मीभूत हो गया।

सभा आर्थिक अभाव के कारण दूसरे प्रकाशन नहीं करवा सकी है। 1933 में दयानन्द निर्वाण अर्ध शताब्दी के अवसर पर सभा की तरफ से ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी अंग्रेजी में छापी गई थी। इसी तरह म. नारण जी ने सभा द्वारा गुजराती संध्या भी छपवायी थी।

(7) संस्कृत पाठशाला

सभा के एक मुख्य कार्यकर्ता श्री जी, मेढ़ई ने अपना सुपुत्र श्री हरिशंकर गुरुकुल कांगड़ी में भेजा था। 1943 में श्री हरिशंकर आयुर्वेदालंकार बनकर यहां पर आये। सभा ने उनका स्वागत किया। श्री हरिशंकरजी के आने से संस्कृत का वर्ग चलाना सहज हो गया। वे जनवरी 1944 से संस्कृत की शिक्षा देने लगे। प्रारम्भ में कई

युवक इस वर्ग में प्रविष्ट हुए थे, पर धीमे-धीमे यह संख्या घट गई थी। बाद में तो हरिशंकरजी भारत चले गये और यह पढ़ाई अधूरी ही रह गई।

(8) राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग

सभा का कार्य धार्मिक तथा सामाजिक रहा है। परन्तु भारत में चलने वाले स्वातंत्रय संग्राम के प्रति सभा की सदा सहानुभूति रही है। सत्याग्रह के समय, महात्मा गांधीजी के उपवासों के समय तथा अन्य अवसरों पर सभा ने तदनुकूल प्रस्ताव करके भेजे हैं। इसी तरह 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिलने पर प्रधान मंत्री के नाम बधाई का तार भेजा था। स्वराज्य प्राप्ति पर देश में जो घोर खून खराबियां हुई उनके विरुद्ध निन्दा के प्रस्ताव पास हुए तथा उन दंगों के लिए चन्दा इकट्ठा करके सहायता दी गई थी।

(9) शोक सभाएं तथा प्रार्थना सभा

समय-समय पर सभा ने आर्य विद्वानों तथा देश के नेताओं के निधन पर शोक सभाएं तथा शांति की प्रार्थनाएं की हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी के खून तथा महात्मा गांधीजी की नृशंस हत्या पर सभा ने विशेष रूप से सभाएं बुलाकर ऐसे कार्यों के निन्दात्मक प्रस्ताव किये तथा खेद जाहिर कर स्वर्गीय आत्माओं के प्रति शांति की प्रार्थना की थी। इसी तरह स्व. लाला लाजपतराय, पं. नाथूराम शंकरजी शर्मा, महात्मा नारायण स्वामी आदि के निधन पर शोक प्रस्ताव किये हैं। जनवरी 1949 में यहां पर हुए अफ्रीकन-भारतीय भीषण दंगों के समय शांति के लिए खास प्रार्थना सभा रखी गयी थी। जिसमें पं. नरदेव वेदालंकार ने विविध वेद मंत्रों से शांति के

लिए प्रार्थना की थी।

(10) अन्य कार्य

ऐसे ही अन्य कई विविध कार्यों में प्रतिनिधि सभा ने दिलचस्पी दिखाई है। जैसे कि द्वितीय महायुद्ध के दिनों में रात्रि के समय पूरा ब्लैक आउट रहता था। उन वर्षों में सभा ने सरकार से लिखा–पढ़ी करके दीपावली के दिनों रोशनी करने की छूट हिन्दुओं को दिलाई थी। 1945 दिसम्बर में सूखा पड़ने के कारण सभा ने अपनी सम्मिलित संस्थाओं के द्वारा जगह–जगह महायज्ञ करवाये थे। इसी तरह शव को ले जाने वाली गाड़ियों के मालिकों ने रविवार के दिन अपना कार्य बंद रखने का निश्चय किया था। सभा ने उनसे पत्र व्यवहार करके ऐसा नहीं होने दिया।

इस तरह के छोटे मोटे कार्यों के प्रति सभा सदा जागृत रही है और आर्य संस्कृति की रक्षा के तथा हिन्दुओं के धार्मिक हितों के कार्यों को पूरा करने को सभा हमेशा तत्पर रही है।

elibrary.thearyasamaj.org

अध्याय सातवां

आर्य समाज
और
हिन्दुओं की धार्मिक तथा सामाजिक दशा

aryasamaj.org

विदेशों में आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यता की रक्षा का गौरव आर्य समाज को है। सिर्फ दक्षिण अफ्रीका ही नहीं अपितु अन्यत्र भी जहां भारतीय लोग बसे हुए हैं, उन उपनिवेशों में भारतीय संस्कृति की ज्योत जीवित रखने का श्रेय आर्य समाज और ऋषि दयानन्द की विचार धारा को ही है। परदेशों में अनेक विधर्मों, संस्कृतियों और जातियों के संघर्ष में रहना होता है, उसमें हिन्दू धर्म का पुराना रूढ़िवाद टिक नहीं सकता। महर्षि दयानन्द ने विज्ञान सम्मत बुद्धिवादी विचारधारा के अनुकूल जिस प्राचीन वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया वही आज हिन्दू धर्म के लिए भारत में और परदेश में गौरव का कारण है। यही वजह है कि विदेशों में बसे हुए भारतीयों में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए, जो व्यक्ति आर्य समाजी

नहीं थे, उन्होंने भी आर्य समाज के प्रचार को तथा सत्यार्थ प्रकाश को महत्ता दी। इस सम्बन्ध में साधुवर श्री सी.एफ. एंडरूज की सम्मति बहुत महत्त्व रखती है। वे लिखते हैं:-

''विदेशों में प्रवासी भारतीयों के कल्याण के लिए आर्य समाज जो कुछ कर रहा है, उससे मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो मातृभूमि या भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की और पुरातन आर्य संस्कृति की रक्षा पर विशेष ध्यान रखती है।.....भारत के जो समाज प्रवासी भारतीयों की सेवाकर सकते हैं, उनमें आर्य समाज ने बढ़कर क्रियाशील शक्तिशाली और उत्साही दूसरा कोई नहीं है।''

दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार का यही महत्त्व रहा है। इसके प्रचारकों ने, कार्यकर्ताओं ने तथा इसकी संस्थाओं और पाठशालाओं ने यहां के हिन्दू मानस को ही बदल दिया है। 50 वर्ष तक जो हिन्दू भूले-भटके हुए थे, वे आज आर्य समाज के प्रचार से भारतीय सभ्यता और आर्य धर्म को समझ कर कार्य कर रहे हैं। यहां के हिन्दुओं की धार्मिक और सामाजिक दशाओं में आर्य समाज के प्रचार से कैसा परिवर्तन हुआ और आज उनकी क्या स्थिति है इसका संक्षेप में यहां वर्णन देते हैं:-

उत्सव और त्योहार

किसी समाज, जाति और संस्कृति को जीवित रखने वाली मुख्य वस्तु धार्मिक उत्सव और महापुरुषों की जयंतियां हैं। यहां के हिन्दू स्वामी शंकरानन्दजी के आने से पूर्व अपने त्योहारों को एकदम भूल गये थे। उनके त्योहारों में मुहर्रम और होली का गंदा स्वरूप ही

मुख्य था। स्वामीजी ने दीपावली को फिर से जारी करवाया। आज यहां के हिन्दुओं का सबसे बड़ा त्योहार दीपावली हो गया है। इस दिन भारतीयों की पाठशालाएं तथा हिन्दुओं की तमाम दुकानें भी बंद रहती हैं। दिनोंदिन यह त्योहार महत्ता प्राप्त करता जाता है और जातीय पर्व के रूप में बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। परस्पर दीपावली की शुभ कामना व अभिनन्दन के कार्ड भेजे जाते हैं। रामनवमी तथा जन्माष्टमी दूसरे प्रधान त्योहार हैं। जिन्हें प्रायः सभी हिन्दू संस्थाएं मनाती हैं। 15 अगस्त का स्वतंत्रता दिन भी भारतीयों का महत्व पूर्ण त्योहार बन चुका है। आर्य प्रतिनिधि सभा की तरह से ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) का त्योहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। ये ही यहां के प्रधान त्योहार हैं। मद्रासी तथा गुजराती लोग अपने कुछ स्थानीय त्योहार भी मनाते हैं। इनके अतिरिक्त रक्षा बंधन, विजयादशमी और गांधी जयन्ती को जातीय त्योहार के रूप में चालू किया जाना चाहिए।

संस्कार

हिन्दुओं में मुख्यतया विवाह संस्कार ही चालू हैं। उस की पुरानी विधि हास्यास्पद थी। वरबधू की पोशाक भी बड़ी विचित्र होती थी। कपड़ों की लपेटनों में वधू को तो बंद कर दिया जाता था। अब तो युवकों में विवाह की वैदिक पद्धति अधिक प्रचार प्राप्त करती जाती है। सनातनी कुटुम्बों में भी अब वैदिक लग्न चालू हो गये हैं। विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकर्म, नामकरण संस्कार भी होते हैं। शेष संस्कार नहीं के बराबर होते हैं। अंत्येष्टि संस्कार तो यहां के हिन्दू परिस्थितियों के कारण छोड़ चुके थे। सभी हिन्दू

अपने शवों को गाड़ते थे। स्वामी शंकरानन्दजी और स्वामी भवानी दयालजी ने मृत दाह की प्रथा का अच्छा प्रचार किया। अब तो अधिकतर हिन्दू अपने शवों को अग्निदाह देने लगे हैं। कई जगह अच्छे नवीन ढंग के श्मशान बन गये हैं। उनमें गोरे भी शवों को जलाने लगे हैं। परन्तु श्मशान भूमि के लिए बड़ी कठिनाई होती है। कब्रस्तान प्रायः सर्वत्र हैं पर शवों को जलाने के लिए श्मशान बनाने को भूमि नहीं मिलती। जनता में धार्मिक भावनाएं जागृत रखने के लिए संस्कारों को अधिक व्यापक रूप से चालू करने की आवश्यकता है।

विवाह का रजिस्ट्रेशन

यहां की यूनियन सरकार के कानून के अनुसार कोई भी विवाह सरकारी दफ्तर में रजिस्ट्री कराये बिना मान्य नहीं होता। इसलिए हिन्दू लोग अपनी धार्मिक विधि से जो विवाह करवाते हैं, वे सरकार में मान्य नहीं होते। जब तक कि उनकी रजिस्ट्री नहीं करवायी जाये। इस कारण कई स्त्रियों को विवाह के बाद बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं। कई मूर्ख और असंस्कारी युवक अपनी जिम्मेदारी न समझकर अपनी स्त्री को त्याग देते हैं। ऐसी स्त्री को फिर किसी तरह का हक नहीं रहता; क्योंकि उन की शादी धार्मिक विधि से होने पर भी वह सरकार में मान्य नहीं है। यहां पर ईसाई और मुस्लिम विधि से विवाह कराने वाले पादरियों और मौलवियों को हक है कि वे जो शादी करावें उसका प्रमाण पत्र देकर उसे खुद सरकार में रजिस्ट्री करा देवे। पर यह हक हिन्दू पुरोहितों को नहीं है। यह हक उन्हें मिले इसके लिए कई प्रयत्न भी किये गये। ता. 15 फरवरी

1942 की प्रतिनिधि सभा की वैदिक परिषद में इसके लिए एक प्रस्ताव भी स्वीकृत किया गया था पर सरकारी कानून अभी तक नहीं बदला है। यहां की हिन्दू महासभा भी इसके लिए प्रयत्न कर रही है। अभी इसके लिए जोरों से आन्दोलन करने की जरूरत है।

जातपात

प्रारम्भ में यहां पर जातपात का प्रश्न हिन्दुस्तान जैसा ही जटिल था। परन्तु यहां की परिस्थिति एकदम विभिन्न होने से यह प्रश्न बहुत कुछ सुलझ गया है। लोग ऊंच-नीच का भेदभाव भूल रहे हैं। शादी-विवाह भी जातपात का ख्याल रखे बिना होने लगे हैं। कुछ पुरानी पीड़ी के लोग अभी इसका ख्याल रखते हैं बाकी यह प्रश्न अब हल हो गया है। मद्रासी और गुजरातियों के कुछ वर्गो के लोग अभी इस प्रथा से चिपके हुए हैं। सदियों का मानसिक विकार दूर नहीं हो पाता।

धर्म के प्रति श्रद्धा

पुराने लोगों में रूढ़िवाद के प्रति श्रद्धा थी।आर्य समाज के प्रचार ने वैदिक सिद्धान्तों के प्रति श्रद्धा बढ़ायी है। अभी लोग अज्ञान दशा में हैं। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों में अपने धर्म के प्रति श्रद्धा कम है। पर आज का सामान्य युवक अपनी जाति और धर्म के गौरव को समझने लगा है। अब हवन और यज्ञ की प्रथा बढ़ रही है। उपनिषद की कथाओं का प्रचार भी बढ़ रहा है। गीता सप्ताह के मनाने और गीता के सिद्धान्तों को समझने की कोशिश होती है। धार्मिक प्रवचन कर सकने वाले स्वाध्यायशील उपदेशकों और विद्वानों की बहुत कमी है। इसी तरह धार्मिक साहित्य की पुस्तिकाएं

भी नहीं है। उसके होने से धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। नित्य प्रति संध्या हवन भी नहीं है। उनके होने से धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी। नित्य प्रति संध्या हवन करने का प्रचार कम है। साप्ताहिक सत्संग में उपस्थिति बहुत थोड़ी होती है।

वहम और अन्धश्रद्धा

सामान्य जनता में अभी तक अंधश्रद्धा और वहम बहुत घुसे हैं। लोग अभी तक जादू-टोने, तागे और ताबीजों के अंधविश्वासों को छोड़ नहीं सके हैं। बीमारी और मुसीबतों में अभी इन बातों पर लोग झुक जाते हैं। इसी तरह के दूसरे भी कई वहम चालू हैं। कुछ वर्ष पर यहां के वेरुलम स्थान में एक व्यक्ति ने अपने को कृष्णा का अवतार घोषित किया। लोग भेड़ों की तरह उधर झुक पड़े। सहस्रों की संख्या में प्रति-दिन नरनारी उसके दर्शन और आशीर्वाद पाने वहां पहुंचते थे। दु:खी, बीमार, अपंग, अंधे उसके आशीर्वाद से चंगा होने की आशा रखते थे। पर वह पोप लीला अधिक न चल सकी। कई मंदिरों में पहले पशु बलि भी बहुत होती थी। अब कम हो गई है। पर अब भी इस जमाने में धर्म के नाम पर कुछ मंदिरों में पशुबलि होती है।

व्यसन

यहां के लोगों का व्यसनों ने बुरी तरह पीछा पकड़ा हुआ है। सबसे भयंकर और बरबादी करने वाला व्यसन मद्यपान है। शायद ही 10 प्रतिशत पुरुष इससे मुक्त हों। इसी तरह घुड़दौड़ और जुए का चस्का भी जोरों से चालू है। इससे लोगों का आत्मिक और आर्थिक पतन हो रहा है। इन व्यसनों के विरुद्ध बहुत कम और मन्द

आवाज उठती है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी परिषदों और सम्मेलनों में इनके विरुद्ध आवाज उठायी है, पर उसका असर न के बराबर है।

धर्मपरिवर्तन और शुद्धि

प्रारम्भ में हिन्दुओं के अज्ञान का तथा संगठन के अभाव का लाभ उठाकर बहुत से लोग ईसाई या मुसलमान बना लिये जाते थे। अब उस तादाद में धर्मपरिवर्तन नहीं होता फिर भी मुसलमान और ईसाई बनने वालों की संख्या अधिक है। गरीब हिन्दू परवश बनकर विधर्मियों के जाल में फंस जाते हैं। बहुत से नवयुवक खासकर अंग्रेजी शिक्षा पाये और मातृभाषा के ज्ञान से वंचित युवक शादीआदि के लोभ में ईसाई बन जाते थे। पहले हिन्दूधर्म के सच्चे स्वरूप का ज्ञान न होने से अश्रद्धा से भी कई लोग हिन्दू धर्म छोड़ देते थे। परन्तु प्रचारकों और विद्वानों के आते रहने से यह अश्रद्धा निकल गई है। लोगों में स्वधर्म और स्वजाति का अभिमान पैदा होने लगा है। स्वामी शंकरानंद जी तथा स्वामी भवानी दयालजी एवं दूसरे प्रचारकों ने यहां पर कई ईसाई और मुसलमानों को शुद्ध करके आर्य बनाया हैं इस दिशा में आर्य युवक सभा, डरबन भी बहुत सजग रही है। शुद्धि के इस कार्य को और अधिक वेग देने की आवश्यकता है। हिन्दू महासभा भी अब हिन्दुओं के धर्मपरिवर्तन को रोकने के लिए प्रयत्नशील रहती है। अभी वह दिन तो दूर है जब यहां के मूल निवासियों में आर्य धर्म का प्रचार किया जावेगा।

अध्याय आठवां

शिक्षा तथा मातृभाषा

शिक्षा की प्रारम्भिक दशा

इस प्रदेश में भारतीय लोग मजदूर रूप में आकर कई वर्षो से बस गये थे। परन्तु उनके बच्चों की शिक्षा का कोई प्रबंध न था। ईसाई मिशन द्वारा कुछ पाठशालाएं चलायी जाती थीं। उनका ध्यान अपने धर्म के प्रचार की तरफ ज्यादा रहता था। इसका असर भारतीय बच्चों पर बुरा पड़ता था। जब स्वामी शंकरानन्दजी का आगमन इस देश में हुआ तो उनका ध्यान शिक्षा की ओर गया। सन् 1909 में नाताल सरकार की तरफ से एक शिक्षा कमीशन बैठा। स्वामी शंकरानन्द जी ने इसके सामने महत्त्वपूर्ण बयान दिया। जिससे सबका ध्यान भारतीय लोगों की शिक्षा की तरफ गया। इस सम्बन्ध में स्वामीजी ने गवर्नर सर मेथ्यू नेथन से भी मिले। उन्होंने जोर दिया कि हिन्दुस्तानियों की शिक्षा नि:शुल्क हो और साथ ही अनिवार्य भी कर दी जावे। इस समय भारतीय बच्चे 14 वर्ष की उम्र तक ही शिक्षा पा सकते थे। इसके बाद वे कानून से शिक्षा पाने से रोके जाते थे। स्वामी जी ने इस उम्र की कैद को हटाने के लिए बहुत प्रयत्न किया और इसमें वे सफल हुए। इस तरह स्वामी शंकरानन्दजीने अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्यो के साथ ही शिक्षा के प्रश्न को भी सुलझाया था।

श्री श्रीनिवास शास्त्रीजी के प्रयत्न

अब भी भारतीयों की शिक्षा का प्रश्न उपेक्षित ही रहता था। सरकार इस ओर कुछ ध्यान नहीं देती थी। हजारों बच्चे आवारा की तरह इधर-उधर घूमते-फिरते थे। सन् 1927 में शास्त्रीजी हिन्दू सरकार के राजदूत बनकर इस देश में आये। इनके समय में शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। नाताल सरकार की तरफ से एक जांच कमीशन बैठा। इसमें भारत सरकार ने भी अपने दो विशेषज्ञ भेजे नाताल इण्डियन कांग्रेस ने इस कमीशन के समक्ष अपना बयान दिया। इस कमीशन का फल अच्छा हुआ। तबसे सरकार ने भारतीय बच्चों की शिक्षा की तरफ ज्यादा ध्यान दिया। शिक्षा के लिए अच्छी रकम खर्च करने को निकाली। भारतीय लोगों ने भी अपनी शिक्षा के लिए अच्छा प्रयास किया। पाठशाला के मकानों के लिए सरकार की तरफ से खर्च की आधी या तिहाई रकम मिलने लगी। इससे भारतीयों ने स्थान-स्थान पर चंदा इकट्ठा करके पाठशाला के मकान बनाये। सरकारी सहायता से वे पाठशालाएं चलने लगीं। आर्य समाज की संस्थाओं की तरफ से भी कई सरकारी सहायता प्राप्त अंग्रेजी पाठशालाएं चल रही हैं। भारतीय विद्यार्थियों को मैट्रिक तक का ज्ञान मिले इसके लिए 'शास्त्री कॉलेज' के नाम से विद्यालय खोला गया। जिसके लिए बीस हजार पौंड भारतीयों ने इकट्ठे किये थे। यह विद्यालय सरकार चलाती है। इसके बन जाने से भारतीय युवक ऊंची शिक्षा पाने लगे। उनमे अब तक कई स्नातक भी बन चुके हैं। वे अच्छे अध्यापक बनने लगे हैं।

मातृभाषा की शिक्षा का गंभीर प्रश्न

श्री श्रीनिवास शास्त्रीजी ने अंग्रेजी शिक्षा का प्रश्न तो हल कर दिया पर मातृभाषा का प्रश्न शास्त्री जी ने बिगाड़ दिया और यहां के भारतीयों का बड़ा अहित किया। शिक्षा का जो जांच कमीशन सरकार ने बिठाया था उसमें बयान देने के सम्बन्ध में विचार करने को साऊथ अफ्रीकन इण्डियन कांग्रेस ने किम्बर्ली में एक परिषद बुलायी। जिसमें पाठशालाओं में मातृभाषा का क्या स्थान हो इस प्रश्न पर विचार होने वाला था।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारतीय मातृभाषाओं को स्थान देने के लिए प्रस्ताव किये तथा कई अन्य संस्थाओं द्वारा ऐसे प्रस्ताव करवाये। इस परिषद में स्वामी भवानी दयालजी भी उपस्थित थे। शास्त्रीजी ने इस परिषद में मातृभाषा को पाठ्यक्रम में स्थान देने के विरुद्ध भाषण दिया। परिषद का बहुमत उनके साथ हो गया। परन्तु श्री स्वामी भवानी दयालजी, श्री सोराबजी रुस्तमजी आदि ने इस प्रश्न को पुनः विचारार्थ उपस्थित करवाया। इस बार शास्त्रीजी के देखते-देखते परिषद का मत बदल गया। बहुत बड़ी संख्या मातृभाषा को स्थान देने के पक्ष में हो गई। इस प्रश्न पर जनता में शास्त्रीजी का तीव्र विरोध हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा ने उग्र विरोध के प्रस्ताव कर के सर्वत्र प्रचारार्थ बांटे। उसके तीन प्रतिनिधि श्री एस.एल. सिंह,श्री बी. एम. पटेल तथा श्री सत्यदेवजी कांग्रेस की शिक्षा उपसमिति में भेजे गये। वहां पर उन्होंने शास्त्रीजी का घोर विरोध किया। यह तो वह जमाना था जब शास्त्रीजी जैसे विद्वान् हिन्दुस्तान के लिए भी राष्ट्रभाषा के रूप में किसी देशी भाषा के होने का

स्वप्न नहीं देख सकते थे। शास्त्रीजी की शिक्षा-दीक्षा अंग्रेजी में ही हुई थी, इससे वे अंग्रेजी की मोहिनी में मातृभाषा के महत्त्व को ठीक तरह से समझ नहीं सके थे। जनता की तीव्र मांग होने पर भी शास्त्रीजी का बल पाकर यहां की सरकार ने मातृभाषा की शिक्षा के सवाल को ठुकरा दिया। उसका फल आज तक भोगना पड़ रहा है। इसका नतीजा यह हुआ कि भारतीय भाषाओं को सिखाने का सारा बोझ जनता पर है। जिसके खर्च को उठाना बहुत कठिन है। इसी से भारतीय भाषाएं मृत प्रायः हो रही हैं। सरकारी पाठ्यक्रम में स्थान न होने से मातृभाषाओं को सीखना अनिवार्य नहीं है। अतः इसके बिना भारतीय संस्कृति का लोप हो रहा है। अंग्रेजी के असर से पाश्चात्य संस्कृति, रीति-रिवाज तथा ईसाई धर्म भारतीय घरों में तीव्र गति से घुस रहा है।

भारतीयों की भाषाएं

यहां पर आने वाले भारतीयों की भाषाएं अलग-अलग हैं। तमिल, हिन्दी, गुजराती और तेलगू बोलने वाले लोग यहां आये हैं। मुसमान लोग प्रायः गुजरात से आये हैं, वे गुजराती बोलते है।। पर आज अपनी जवान उर्दू बतलाते हैं। इस तरह कई भाषा बोलने वाले यहां आये। वे अनपढ़ थे। उनमें कोई अंग्रेजी जानता न था। न वे एक दूसरे प्रांतवालों की बोली समझ सकते थे। उस समय हिन्दी ने अपनी सहज सरलता के कारण एक भाषा के रूप में यहां स्थान पा लिया था। परन्तु जैसे-जैसे अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार बढ़ता गया तथा देश से आने वाली पीढ़ी का स्थान यहां की पैदा हुई संतानें लेने लगीं, हिन्दी तथा दूसरी तथा दूसरी मातृभाषाएं पिछड़ गई। अंग्रेजी

महत्ता बढ़ती चली गई। आज 3-4 पीढ़ी के बाद यह अवस्था है कि बहुत से नवयुवक हिन्दी बोल नहीं सकते। हिन्दी भाषियों में से शुद्ध हिन्दी जानने वाले नहीं के बराबर हैं। छोटे लड़के-लड़कियां और स्त्रियां घर में अक्सर अंग्रेजी में बोलने लगीं हैं। ऐसी ही हालत रही तो हिन्दी तथा दूसरी भारतीय भाषाएं और एक दो पीढ़ी के बाद समाप्त हो जावेगी। आज हिन्दी आदि का जो प्रचार होता है वह मुकाबिले में बहुत ही कम है।

हिन्दी का प्रारम्भिक प्रचार : पं. भवानी दयालजी

मातृभाषा प्रचार की तरफ सबसे पहला ध्यान श्री स्वामी शंकरानन्दजी ने खींचा। आपने मातृभाषा की शिक्षा के महत्त्व पर कई प्रभावशाली व्याख्यान दिये। जिसके फलस्वरूप हिन्दी की कुछ पाठशालाएं चालू की गयी थीं।

हिन्दी प्रचार में महत्त्वपूर्ण कार्य पं. भवानी दयालजी ने किया। वे बचपन में देश से हिन्दी का अच्छा ज्ञान पाकर आये थे। यहां पर आकर उन्होंने स्थान-स्थान पर घूमकर हिन्दी के लिए व्याख्यान दिये। कई हिन्दी प्रचारिणी सभाओं की स्थापना की। एक हिन्दी आश्रम खोला। सन् 1916 में पंडितजी के प्रयत्नों से सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन लेडीस्मिथ नगर में हुआ। पंडितजी इसके मंत्री थे। बाबू रघुनाथ सिंह प्रधान और आर. जी. भल्ला स्वागताध्यक्ष थे। दूसरा सम्मेलन 1917 में पीटर मेरित्सबर्ग में हुआ। जिस के अध्यक्ष बाबू हरदेव सिंहजी तथा स्वागताध्यक्ष श्री डी.के. सोनी थे। पं. भवानी दयालजी ने दोनों सम्मेलनों की सफलता के लिए बहुत परिश्रम किया था। इस व्यापक प्रचार से हिन्दी की जड़

जग गई। पंडितजी ने आर. जी. भल्ला के 'धर्मवीर' साप्ताहिक का सम्पादन भी किया। परन्तु उससे भी महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने 'हिन्दी' नामक साप्ताहिक के प्रकाशन का किया। पंडितजी तथा उनकी पत्नी श्रीमती जगरानी देवी ने इस पत्र को चालू करने के लिए अत्यधिक श्रम लिया। इस पत्र का प्रथम अंक प्रकाशित होने से पूर्व ही जगरानीजी का देहान्त हो गया। पंडितजी ने चार वर्षों तक 'हिन्दी' का अच्छी तरह सम्पादन किया और वह यहां पर तथा अन्य उपनिवेशों में भी प्रसिद्ध हो गया था। स्वामी भवानी दयालजी का पिछला जीवन अधिकतर राजनीतिक कार्यों में गुजरा। इससे हिन्दी प्रचार का कार्य कुछ पिछड़ गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के हिन्दी प्रचारक प्रयत्न

प्रतिनिधि सभाके कार्यों में एक प्रधान कार्य मातृभाषा हिन्दी के प्रचार का भी रहा है। इससे इसके उत्सवों तथा परिषदों में हमें हमेशा मातृभाषा के प्रचार के लिए प्रस्ताव मिलते हैं। प्रतिनिधि सभा ने आग्रह रखा है कि उसकी सभी कार्यवाही हिन्दी में हो। इसी तरह उसने अपनी सम्मिलित संस्थाओं द्वारा हिन्दी पाठशालाएं चलाने पर खास जोर दिया है। आज प्रांत भर में जितनी हिन्दी पाठशालाओं में एक पाठविधि रहे, इसके लिए भी प्रतिनिधि सभा ने प्रयत्न किया है। ता. 18 नवम्बर 1945 के दिन आवश्यक महाधिवेशन बुलवाकर एक प्रकार की पाठविधि तय की गयी थी।

पं. नरदेव जी वेदालंकार हिन्दी शिक्षा संघ की स्थापना

सन् 1947 के आखिर में पं. नरदेवजी वेदालंकार का इस देश में शुभागमन हुआ। पंडितजी इस देश में आने से पूर्व भारत में (सूरत में) हिन्दी प्रचार का ही कार्य करते थे। पं. नरदेवजी यहां गुजराती अध्यापक के तौर पर आये हैं फिर भी हिन्दी के प्रचार के लिए प्रयत्नशील हैं। उन्होंने यहां की परिस्थिति समझ कर हिन्दी प्रचार की एक स्वतंत्र संस्था की स्थापना के लिए संमति दी। आर्य प्रतिनिधि सभा ने पंडितजी की सलाह से 24, 25 अप्रैल 1948 को एक हिन्दी सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में हिन्दी प्रचार करने वाली सभी संस्थाओं को निमंत्रित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन पं. नरदेवजी के शुभहस्तों से हुआ। इस सम्मेलन में हिन्दी प्रचार करने के लिए 'हिन्दी शिक्षा संघ नाताल' नाम की स्वतंत्र संस्था की स्थापना हुई। मतमतान्तरों के भेदभावों को छोड़कर इसमें सबका सहयोग लिया गया। इस सम्मेलन में 'हिन्दी शिक्षा संघ' की नीति के रूप में मुख्यतया तीन बातें स्वीकार की गयीं।

(1) नाताल की सभी हिन्दी पाठशालाओं को संघ में सम्मिलित किया जावे।

(2) सभी पाठशालाओं में एक जैसी पाठविधि और परीक्षा प्रणाली

चालू की जावे।

(3) हिन्दी भाषा की शिक्षा के अतिरिक्त हिन्दी में भारतवर्ष का इतिहास, भूगोल, धर्मशिक्षा तथा सामान्य गणित भी सिखाया जावे। संघ के सभापति नं.नरदेव जी वेदालंकार तथा संयुक्त मंत्री श्री सुखराज छोटई (सहायक मंत्री आ. प्र. सभा) और पं. बी. जे. महाराज निर्वाचित हुए।

हिन्दी शिक्षा संघ ने अपनी नियमावली बनाकर अपना कार्य चालू कर दिया है। जनवरी 1949 में संघ के सभापति तथा मंत्री ने सारे नाताल प्रांत में हिन्दी प्रचार यात्रा का कार्यक्रम बनाया था। परन्तु उन्हीं दिनों में भीषण अफ्रीकन-भारतीय दंगों के कारण वह बीच में से छोड़ देना पड़ा था। संस्था के प्रारम्भकाल में ही इन दंगों के होने से संघ की प्रगति में बहुत रुकावट आई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

स्वामी भवानी दयालजी ने सन् 1916-17 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया था। उसके बाद संघ की तरफ से 10 अक्टूबर 1948को प्रथम नाताल प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन के सभापति श्री बी.एम.पटेल तथा उद्घाटनकर्ता श्री बी. परमेश्वर थे। सम्मेलन में पाठशालाओं के संघठन पर पं. द्वारिका महाराज (सभापति, श्री सनातन धर्म सभा, नेटाल) ने, भारतीयों की एक भाषा पर डॉ. एन.पी. देसाई (सभापति, द. आ. हिन्दू महासभा) ने तथा 'हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा महत्त्व' पर पं. नरदेवजी वेदालंकार ने व्याख्यान दिये। इन विषयों पर प्रस्तान भी स्वीकृत हुए। यह सम्मेलन सफलता के

साथ हुआ।

आज हिन्दी शिक्षा संघ में 17 हिन्दी पाठशालाएं सम्मिलित हो गयी हैं। सबके लिए एक पाठविधि तैयार हो चुकी है। संघ की देखरेखमें निमित और व्यवस्थित कार्य होने लगा है।

राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर

हिन्दी के प्रचार को स्थायी बनाने के लिए योग्य हिन्दी अध्यापक पाने के उद्देश्य से डरबन तथा मेरित्सबर्ग में राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर खोले गये हैं; जिनमें अध्यापक और नवयुवक भाई-बहन हिन्दी शिक्षा ले रहे हैं। इनमें क्रमशः पं. नरदेवजी वेदालंकार तथा पं. जगमोहनजी विद्यारत्न अध्यापन कार्य करते हैं। यहां पर भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाओं के लिए तैयार करवायी जाती है। सितंबर 1948 में सर्व प्रथम बार इस देश में हिन्दी की परीक्षाएं भारतवर्ष से ली गयीं। इनमें उत्तीर्ण विद्यार्थियों को ता. 7 अगस्त 1949 को मेरित्सबर्ग के केन्द्र में श्री जी. विशुन के तथा डरबन में ता. 21 अगस्त 1949 को श्री एम. रामावतार के करकमलों से बड़े समारोह के साथ प्रमाण पत्र दिये गये। इस तरह हिन्दी शिक्षा संघ का कार्य ठीक तरह से चलने लगा है। आशा है इस संस्था के द्वारा हिन्दी प्रचार का काम जीवित जाग्रत रहेगा।

अध्याय नौवां

पिछले आर्य प्रचारक

प्रो. रलाराम एम. ए.

डी. ए. वी. कॉलेज के प्रोफेसर श्री रलाराम एम. ए. का शुभागमन यहां पर सन् 1931 में हुआ। वे स्व. मोहकमचंदजी वर्मन के प्रयत्नों से यहां आये थे। उन्होंने डरबन सेन्ट्रल आर्य समाज की तरफ से प्रचार कार्य प्रारम्भ किया था। यह संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा में सम्मिलित न थी। प्रोफेसरजी के कार्य को व्यापक बनाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग आवश्यक था। इससे सेन्ट्रल आर्य समाज सभा में सम्मिलित हो गया और सभा के सहयोग से वे कार्य करने लगे। प्रो. रलाराम अंग्रेजी और हिन्दी के उच्च व्याख्याता थे। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों पर स्थान-स्थान पर धूमकर उच्च कोटि के व्याख्यान दिये। वे नाताल के पीटर मेरित्सबर्ग, लेडीस्मिथ, डेढ़ी आदि नगरों में भी प्रचार कार्य के लिए गये। नाताल प्रांत में प्रचार करके प्रोफेसरजी ट्रांसवाल और केप प्रांत में भी गये। जहां अनेक स्थलों पर उनके व्याख्यान हुए। जब प्रो. रलाराम स्वदेश जाने लगे तो ता. 19 मार्च 1932 को आर्य प्रतिनिधि सभा ने उन्हें विदायमान देना चाहा था परन्तु प्रतिकूलता से यह

कार्य नहीं हो सका था।

स्व. लाला मोहकमचन्द वर्मन

दक्षिण अफ्रीका के आर्य सज्जनों में स्व. लाला मोहकमचन्द वर्मन का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। श्री वर्मन आर्य समाज के भक्त थे और आर्य समाज के प्रचार के लिए सदा प्रयत्न करते रहे। प्रो. भाई परमानंदजी से लेकर जो प्रचारक यहां पधारे उनमें से बहुतों को यहां लाने में श्री वर्मन का ही प्रयत्न रहा है। इसके लिए उन्होंने खुद धन भी दिया और चन्दा इकट्ठा किया। वैदिक साहित्य की पुस्तकों का इस देश में प्रचार करने का श्रेय भी उन्हीं को है। श्री वर्मन 1948में भारत गये और वहां उनका देहान्त हो गया। उन्होंने अपनी आधी सम्पत्ति हिन्दुओं में धर्म और शिक्षा आदि के प्रचार के लिए दी है।

वैदिक मिशनरी पं. जैमिनी मेहता

श्री जैमिनी मेहता प्रसिद्ध आर्य प्रचारक हैं। विदेशों में घूम-घूम कर आर्य सिद्धान्तों का प्रचार करने वालों में श्री मेहताजी का नाम बहुत आगे आता है। वे इन्डोनेशिया, जापान, अमेरिका, वेस्टइन्डीज़ के द्वीपों में तथा पूर्व अफ्रीका, जैजीवार और दक्षिण अफ्रीका आदि कई देशों में आर्य धर्म का प्रचार कर चुके हैं। पूर्व अफ्रीका आदि कई देशों में आर्य धर्म का प्रचार कर चुके हैं। पूर्व अफ्रीका से वे यहां आना चाहते थे। उस समय प्रतिनिधि सभा की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से सभा उन्हें नहीं बुला सकी। तब श्री लाला मोहकमचन्दजी के प्रयत्नों से वे सन् 1934 में यहां आये।

श्री जैमिनी मेहता यहां पर प्रचार कार्य करने लगे। उनके

विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों की धाक बैठ गयी। वे आर्य संस्कृति और उसके विश्वव्यापी प्रचार पर गवेषणा पूर्ण व्याख्यान देते थे। उन्होंने परदेशों में बहुत भ्रमण किया था और यहां के अनुभवों से ऐतिहासिक दृष्टि से आर्य सभ्यता के प्रचार पर महत्वपूर्ण व्याख्यान देते थे। उनकी स्मृति बहुत तेज थी और सन् तथा तारीखों के हवाले देकर उसे पुष्ट करते थे। मेहताजी के व्याख्यान बहुत लोकप्रिय हुए। यहां तक कि व्याख्यान के निमन्त्रण पत्र भी छपवाने न पड़ते थे और अगले व्याख्यान की मौखिक सूचना मात्र से जनता बड़ी संख्या में उपस्थित हो जाती थी। यहां की प्रायः सभी संस्थाओं ने उनके व्याख्यान करवाये थे। हिन्दू महासभा की तरफ से उनके कई भाषण हुए। सन् 1934 में उन्होंने हिन्दू महासभा की कॉन्फ्रेन्स का उद्घाटन किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी उस का स्वागत किया था। श्री जैमिनी मेहता ने यहां पर वैदिक साहित्य का भी अच्छा प्रचार किया। उनके आने से पूर्व चारों वेद यहां पर पाना मुश्किल था। उन्होंने वेदों की कई प्रतियां यहां प्रचारित की थीं। अन्य भी कई पुस्तकों का प्रचार करने में वे सफल हुए थे।

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की प्रचार यात्रा

ता. 18 जुलाई 1934 को पं. आनन्दप्रियजी अध्यक्षता में बड़ौदा आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राएं दक्षिण अफ्रीका में उतरीं। बन्दरगाह पर इनका अच्छा स्वागत हुआ। इनके जाहिर स्वागत के लिए विक्टोरिया सिनेमा गृह में सभा हुई। इन कन्याओं को सूरत हिन्दू एसोसियेशन के हॉल में उतार दिया गया।

दूसरे दिन से ही प्रचार कार्य शुरू हो गया। इन कन्याओं का

सारा कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से रखा गया था। सभा के प्रधान आर. के. केपिटन ने इनके भोजन, निवास और प्रचार यात्रा की व्यवस्था करने में पूरा सहयोग दिया। इन कन्याओं के व्यायाम आदि के दो कार्यक्रम सिटी हॉल. डरबन में टिकिट रखकर ता. 25 जुलाई और 6 अगस्त को रखे गए। जिनमें 3 हजार नरनारी उपस्थित थे। इनमें बहुत से यूरोपियन भी थे।

यूरोपियनों के डरबन गर्ल्स हाई स्कूल में इन कन्याओं को दो बार विशेष रूप से निमंत्रित किया गया। यूरोपियन महिलाएं और कन्याएं इनके कार्यक्रम को देखकर बहुत प्रभावित हुई। हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका ने इनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इसी तरह एक खास खेल दक्षिण अफ्रीका के गवर्नर जनरल श्री अर्ल ओफ एथलोन के यहां से ब्रिटेन को बिदा होते समय रखा गया था। इसका भी बहुत अच्छा प्रभाव हुआ। ता. 10 नवम्बर के दिन व्यायाम का एक सार्वजनिक कार्यक्रम यहां के भारतीय क्रीडांगण में हुआ। जिस समय 10 हजार के लगभग उपस्थिति थी। इतनी भारी जनमेदनी यहां शायद ही कभी होती है।

डरबन में अपना सिक्का जमाकर ये आर्य कन्याएं, दक्षिण अफ्रीका और रोडेशिया के लिए निकल पड़ीं। इस यात्रा के लिए यहां की रेलवे ने भी इन्हें विशेष सुविधा कर दी थी और किराया कम कर दिया था। इनका कार्यक्रम नोहानिसबर्ग, प्रिटोरिया, बुलवायोक, सोल्सवरी, केपटाउन, पोर्ट एलिज़ाबेथ, इस्ट लंडन, न्यूकासल, लेडीस्मिथ, डेनहाउजर, ग्लेंको, मेरित्सवरी, स्टेंगर आदि स्थलों पर रखा गया। इस सारी यात्रा में कन्या महाविद्यालय को

5000 पौंड से भी ज्यादा रकम मिली। ये कन्याएं जहां जातीं, अपने व्यायाम और संगीत के खेल दिखातीं तथा वैदिक धर्म का प्रचार भी करती जाती थीं।

प्रचार का प्रभाव

बड़ौदा की इन आर्य कन्याओं के प्रचार का बहुत गहरा प्रभाव हुआ। यहां के यूरोपियनों और भारतीय लोगों ने भी कन्याओं के ऐसे प्रयोग देखे न थे। जब लोग इन कन्याओं को धनुष बाण और बंदूक से निशाना मारते, लाठी और छुरे के दांव खेलते, गरबा और संगीत का गान-नृत्य करते, घुड़ सवारी और सामूहिक व्यायाम करते तथा छटादार जोशीले व्याख्यान देते देखते तो दंग रह जाते थे। साड़ी की लपेटनों में लिपटी हुई, परदे और घूंघट में बंद भारतीय स्त्रियों की कल्पना करने वाले, सैनिक पोशाक में सज इन कन्याओं को देखकर मुग्ध हो उठते थे।

इन कन्याओं ने यहां के समाज में गहरा असर छोड़ा। आर्य संस्कृति और भारतीय नारी की कल्पना को ऊंचा उठाया। यूरोपियन लोगों में भारतीयों का गौरव बढ़ाया। इन कन्याओं का सर्वत्र हार्दिक स्वागत हुआ। इन्हें कई पार्टियां और प्रीतिभोज दिये गये। यहां के भारत के राजदूत श्री कुंवर महाराज सिंह ने भी इन्हें पार्टी दी। इनके कार्यक्रम प्रायः सर्वत्र नगर के मेयर की अध्यक्षता में होते थे। ता. 11 नवम्बर 1924 को आर्य धर्म का विजय डंका बजाती हुई ये कन्याएं बड़े सम्मान से यहां से बिदा हुई।

योगी प्रो. यशपाल का आगमन

जून 1937 में प्रोफेसर यशपाल का आगमन इस देश में

हुआ। इनका कार्यक्रम भी प्रतिनिधि सभा की तरफ से रखा गया। सभा की ओर से ता. 10 जून 1937 को योगीजी का जाहिर स्वागत हुआ। इन्होंने अपने यौगिक प्रदर्शनों तथा धनुर्विद्या के खेलों के द्वारा प्रचार किया। सबसे पहले इन्होंने यहां के गणमान्य यूरोपियन और भारतीय लोगों को अपने प्रयोग करके बतलाये। जिनमें डरबन के मेयर, चीफ मैजिस्ट्रेट आदि कई महाशय थे। ता. 20 जून को योगी यशपाल ने भारतीय क्रीड़ांगण में 1 घंटा 20 मिनट के लिए जमीन में सामधि ली। बड़ी सफलता से उन्होंने योग के इस प्रयोग को कर दिखाया। इस रूप से इस देश में योग के द्वारा समाधि लेने वाले प्रोफेसर यशपाल सर्वप्रथम व्यक्ति हैं। इसे देखने बहुत से यूरोपियन लोग भी आये थे।

धनुर्विद्या के खेलों में भी प्रो. यशपाल बहुत निपुण थे। वे बारीक से बारीक निशाने ताकते थे। अन्धेरे में घोड़े के बाल को बेधना, शब्दवेधी निशाना मारना, आंखों पर रुपया रखकर उसे गिराना आदि उनके निशानों को देखकर लोग आश्चर्य मुग्ध हो जाते थे।

डरबन के अतिरिक्त प्रोफेसरजी के कार्यक्रम मेरित्सबर्ग, ग्लेंको, वेरुलम, लेडीस्मिथ, डेनहाउजर, जोहानिसबर्ग आदि शहरों में भी हुए। इन्होंने सब जगह योग, प्राणायाम, समाधि तथा धनुर्विद्या के प्रयोग कर दिखाये। जिस से लोगों को योग और प्राणायाम की महत्ता मालूम हुई। प्रोफेसरजी जहां जाते, वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का प्रचार भी करते। 24 अक्टूबर को वे स्वदेश लौट गये।

तब इन्हें अच्छा विदायमान दिया गया।

पं. ऋषिरामजी बी.ए.

पं. ऋषिरामजी सन् 1937 में इंग्लैंड में वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गये हुए थे। श्री मोहकमचंदजी बर्मन आदि आर्य सज्जनों के प्रयत्न से पंडितजी को यहां पर द. अ. हिन्दू महासभा ने धर्म प्रचार के लिए बुलाया। पंडितजी के स्थान-स्थान पर व्याख्यान होने लगे। पंडितजी वेद, उपनिषद और गीता के अच्छे अभ्यासी हैं। महात्मा गांधीजी और रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर भी पंडितजी का गहरा अध्ययन है। उनकी धार्मिक दृष्टि बड़ी विशाल रही है। उन्होंने यूरोपियनों पर भी अच्छा असर डाला। कुछ दिनों तक पंडितजी ने स्वाध्याय मंडल (Study Group) में गीता और उपनिषद पर माननीय प्रवचन किये। थियोसोफिकल सोसायटी में भी पंडितजी ने कई व्याख्यान दिये। पंडितजी के व्याख्यानों का असर युवक वर्ग पर उत्तम हुआ। कई भारतीय और यूरोपियन लोग पंडितजी से धार्मिक चर्चा करने नित्य प्रति आते रहे। ता. 4 अगस्त 1937 के दिन आर्य प्रतिनिधि सभा ने पंडितजी का जाहिर स्वागत किया था।

गांधी-टागोर लेक्चरशिप ट्रस्ट

यहां के भारतीयों को सदा ही किसी विद्वान प्रचारक का लाभ मिलता रहे ऐसे स्थायी प्रबंध के लिए पंडित ऋषिरामजी ने एक बहुत सुन्दर योजना बनाई। पंडितजी अपनी पहली यात्रा में इसका श्री गणेश कर गये थे। वे सन् 1945 में पुन+ इस देश में आये और उन्होंने इस योजना को पूर्ण किया। पंडितजी ने दक्षिण अफ्रीका से 6000 पौंड एकत्र किये और उसके लिए यहीं पर एक

ट्रस्ट बना दिया। उसका नाम रखा 'गांधी-टागोर लेक्चरशिप ट्रस्ट।' ये छः हजार पौंड ब्याज पर रखे गये। जिससे प्रतिवर्ष करीब 350 पौंड की आय होती है। इस रकम से प्रति वर्ष एक-एक विद्वान प्रचारक भारत से आया करेगा। उसके मार्ग-व्यय आदि का खर्च दिया जावेगा और उसे पारिश्रमिक पुरस्कार के रूप में 150 पौंड दिये जावेंगे। इस प्रकार की योजना से खर्च का प्रश्न और प्रतिवर्ष चंदा इकट्ठा करने का झंझट दूर हो गया है। 1945 में पं. ऋषिरामजी इसी ट्रस्ट की तरफ से आये थे। इस ट्रस्ट से आने वाले पहले सात प्रचारकों की पसंदगी पं. ऋषिरामजी करेंगे। तदनन्तर वे सातों मिलकर नये प्रचारकों को चुगेंगे।

दूसरी बार पं.ऋषिरामजी जब आये तो ता. 28 जून 1945 को प्रतिनिधि सभा तथा अन्य कई संस्थाओं ने उनका विभिन्न स्थलों पर स्वागत किया। ता. 10 जुलाई 1945 से एक व्याख्यान माला चालू की गई । जिस में पंडितजी ने आठ व्याख्यान दिये। ये व्याख्यान भारतीय तत्व ज्ञान, मानव धर्म, आध्यात्मिकता आदि पर होते थे। व्याख्यान बड़े उच्च कोटि के थे। उपस्थिति सब दिन बहुत अच्छी होती थी। प्रतिदिन विभिन्न जातियों के विद्वान अध्यक्ष पद ग्रहण करते रहे थे। इन व्याख्यानों ने श्रोताओं के मानस तल को ऊंचा उठाने में बड़ी सहायता पहुंचायी।

इस व्याख्यान माला के अतिरिक्त निम्न लिखित संस्थाओं की तरफ से डरबन में भाषण और स्वागत सभारम्भ रखे गये थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल, सनातन धर्म सभा, नाताल, आर्य युवक सभा; सूरत हिन्दू एसोसियेशन; काठियावाड हिन्दू सेवा समाज;

प्रार्थना मंडल; थियोसोफिकल सोसायटी; डरबन इन्टरनेशनल क्लब; तमिल वेल्फेयर सोसायटी; द. अ. आन्ध्र महासभा; आर्य युवक समाज, क्लेरवुड; मेकोर्ड जूलू होस्पिटल; सनातन धर्म सभा, सिडनम आदि।

डरबन के अतिरिक्त नाताल के निम्न लिखित शहरों और कस्बों में जाकर भी पंडितजी ने भाषण दिये थे; वेरुलम, टोंगाट, चाकस्क्राल, स्टेंगर, पीटर मेरित्सबर्ग तथा आसपास की 8–10 बस्तियां, लेडीस्मिथ, न्यूकासिल, डेडी डेनहौज़र आदि।

नाताल की प्रचार यात्रा समाप्त करके पंडितजी ट्रांसवाल प्रांत में गये। वहां पर जोड़ानिसबर्ग और प्रिटोरिया में कई भाषण हुए। प्रिटोरिया में यूरोपियनों ने बड़े चाव से उनके भाषण सुने थे। वहां थियोसोफिकल सोसायटी ने भी पंडितजी से अच्छा लाभ उठाया था। ट्रांस्वाल के बाद पंडितजी केप प्रांत की यात्रा के लिए गये। इस प्रांत में ईस्ट लंडन, पोर्ट एलिज़ाबेथ, केपटाउन और किम्बर्ली आदि शहरों में प्रचार किया। इन सब स्थलों पर शहर के मेयर पंडितजी के स्वागत के लिए आते थे और उनके लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था करते थे। दक्षिण अफ्रीका से पंडितजी पोर्चुगीज ईस्ट अफ्रीका गये। वहां लोरेन्सो मार्क्स में कई व्याख्यान हुए थे।

इस तरह पंडित ऋषिरामजी ने कुछ मास यहां पर रहकर अच्छा प्रचार कार्य किया। सब जगह अच्छी जाग्रति हुई। पंडितजी ने भारतीयों का ध्यान यहां के मूल निवासी लोगों की तरफ भी खींचा और उनके प्रति सहानुभूति और समभाव रखने के लिए सदा प्रेरणा देते रहे। उसके प्रतीक स्वरूप उन्हीं ने 600पौंड चन्दा भारतीयों

से इकट्ठा करवाकर 6 जूलू संस्थाओं में दान दिलवाया। भारतीयों की ओर से यह ऐसा पहला ही प्रयत्न किया गया था। पंडितजी ने पूर्व अफ्रीका, जैजीबार एवं वेस्टइन्डीज़ आदि देशों में बसे हुए भारतीयों में भी वैदिक धर्म के प्रचार का बड़ा कार्य किया है। जब वे पूर्व अफ्रीका गये तो वहां केनिया, युगांडा, टांगानिका और जंजीबार में प्रचार कार्य किया। वहां पर भी 'पूर्व अफ्रीका गांधी-टागोर सोसाइटी' स्थापित की।

पं. नरदेवजी वेदालंकार का शुभागमन

डरबन की गुजराती संस्था सूरत हिन्दू एज्युकेशनल सोसायटी ने अपने यहां पं. नरदेवजी वेदालंकार को अध्यापक रूप से बुलाया है। पंडितजी ता. 24 नवम्बर 1947 को यहां पहुंचे। पं. नरदेवजी गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं। यद्यपि वे गुजराती पाठशाला में आये हैं फिर भी उनका लाभ यहां के सभी भारतीयों को मिल रहा है। अब तक यहां जितने प्रचारक आये प्रायः वे सब बहुत अल्पकाल के लिए यहां रहे। पं. नरदेवजी 5-6 साल के लिए आये हैं। इससे स्थायी रूप से इनका लाभ जनता को मिल रहा है।

पंडितजी समय-समय पर यहां के विभिन्न स्थलों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे है।। दीपावली, रामनवमी, जन्माष्टमी आदि त्योहारों तथा उत्सवों पर यहां की संस्थाएं उनका लाभ उठाने से नहीं चूकतीं। इन्होंने संस्कारों तथा उपनिषद कथाओं का भी अच्छा प्रचार किया है।

पं. नरदेवजी का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य हिन्दी प्रचार का है। इनकी ही प्रेरणा से आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित हिन्दी

सम्मेलन में हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल की स्थापना हुई है; जिसके पंडितजी सभापति हैं। पंडितजी के लम्बे काल के निवास का एक यह बड़ा फायदा हुआ कि वे हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी की शुद्ध तथा उच्च शिक्षा दे रहे हैं। पहले ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। पंडितजी की प्रेरणा से दक्षिण अफ्रीका में ही नहीं अपितु सारे अफ्रीका महाद्वीप में हिन्दी का व्यवस्थित प्रचार होने लगा है और राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के 10–12 केन्द्र थोड़े समय में ही सारे महाद्वीप में खुल गये हैं और भी कई केन्द्र खुल रहे हैं।

पंडितजी ने यहां के सूरत हिन्दू एसोसियेशन के द्वारा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ 1949 की दीपावली के शुभ पर्व पर करवाया। महाराज केशवराम त्रिवेदी इनके सहयोगी थे। ऐसा महायज्ञ दक्षिण अफ्रीका में सर्वप्रथम हुआ। इसी एसोसियेशन के भवन में इन्होंने साप्ताहिक बृहद यज्ञ भी चालू किया है। मदिरापान को रोकने के लिए पंडितजी ने गुजरातियों में 'मद्य निषेध व्रत' चालू किया है। शीघ्र ही इस व्रत का प्रचार यहां के समस्त भारतीयों में करने का इनका इरादा है। इसी तरह पंडितजी ने प्रवासी भारतीय बच्चों को हिन्दू धर्म की, आर्य संस्कृति की तथा राष्ट्रीयता की शिक्षा मिल सके इसके लिए 'धर्मशिक्षा पाठावली' की योजना तैयार की है। इसके गुजराती के दो भाग छप चुके हैं। हिन्दी के अनुवाद भी छप रहे हैं। बच्चों के पाठ्यक्रम के आधार पर क्रमशः विकास के अनुकूल ये भाग लिखे गये हैं। धर्मशिक्षा की ये पुस्तकें यहां के अतिरिक्त पूर्व अफ्रीका, पोर्चुगीज़ इस्ट अफ्रीका की ये पुस्तकें यहां आदि कई जगहों पर भारतीय बच्चों के पाठ्यक्रम में चलने लगी

हैं। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा प्रकाशित पंडितजी लिखित 'राष्ट्रभाषा का सरल व्याकरण' भी यहां पर हिन्दी सिखाने में उपयोगी हो रहा है।

पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय एम.ए.

आर्य प्रतिनिधि सभा ने ता. 15 फरवरी 1950 के दिन होने वाली अपनी रजत जयन्ती के शुभ अवसर के लिए पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय को यहां पर बुलाया। वे ता. 30 दिसम्बर 1949 के दिन यहां पर पधारे। यह पहला अवसर है जब सार्वदेशिक सभा का कोई पदाधिकारी यहां पर आया हो। पंडितजी आर्य समाज के नेता हैं और उद्‌भट विद्वान हैं। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में वैदिक साहित्य सम्बन्धी बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं।

ता. 2 जनवरी 1950 के दिन पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय का आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से जाहिर स्वागत किया गया। उसके बाद पंडितजी के स्वागतों की परम्परा चालू है। सभा ने पंडितजी की एक व्याख्यान माला का भी प्रबन्ध किया। उन्होंने ध र्म और संस्कृति सम्बन्धी उच्च कोटि के 6 व्याख्यान अंग्रेजी में दिये हैं। अन्य अनेक संस्थाओं में व्याख्यान दे रहे हैं। प्रतिनिधि सभा ने उनके प्रचार का कार्यक्रम बनाया है। पंडितजी के आगमन से रजत जयन्ती सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया जावेगा ऐसी आशा है। इस समय उनके आने से सिर्फ आर्य समाजियों में ही नहीं अपितु सभी हिन्दुओं में नयी चेतना आ गयी है। आशा है उपाध्यायजी के आने का प्रभाव चिरकाल तक रहेगा। पंडितजी यहां के लिए हिन्दू धर्म पर प्रश्नोत्तरी रूप में एक पुस्तिका भी लिख रहे हैं।

डॉ. एन.पी. देसाई

पं. गंगा प्रसादजी उपाध्याय आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से डॉ. पी. एन. देसाई मेहमान बने हैं। डॉ. देसाई और श्रीमती देसाई ने भारतीय आतिथ्य धर्म अंगीकार किया है। इससे भी पूर्व पं. ऋषिरामजी को भी डॉ. देसाई ने ही अपना अतिथि बनाया था। डॉ. देसाई महात्मा गांधीजी के कुटुम्ब के उज्ज्वल रत्न है। भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म को इस देश में जीवित जाग्रत रखने में डॉ. देसाई ने बहुत प्रयत्न किया है। द. अ. हिन्दू महासभा को सक्रिय बनाने में डॉ. देसाई का बहुत बड़ा हाथ है। वे सन् 1945 और 46 में उसकी मुख्य समिति के प्रधान थे तथा सन् 1946और 47 में महासभा के अध्यक्ष रहे। इन चार वर्षो मे डॉ. देसाई के प्रयत्नों से महासभा ने बहुत उन्नति की। स्वामी शंकरानन्द स्मारक भवन बनाने के लिए कठिन परिश्रम उठाकर चंदा इकट्ठा किया और भूमि खरीद ली। गरीब और अनाथ हिन्दुओं को मदद करने के लिये सेवा समितियों की स्थान–स्थान पर महासभा की तरफ से स्थापना करवायी और प्रतिमास उन्हें सहायता दी जाने लगी। इस प्रकार हिन्दुओं में होने वाले धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए डॉ. देसाई ने बड़ा प्रयत्न किया। पं. ऋषिरामजी की सहायता लेकर महासभा के द्वारा समस्त हिन्दुओं के लिए एक धार्मिक प्रार्थना तैयार करवायी। इसी तरह पं. नरदेवजी वेदालंकार की सहायता से अन्त्येष्टि प्रार्थना तैयार की। इन दोनों प्रार्थनाओं का समस्त अफ्रीका महाद्वीप में खूब प्रचार हुआ है। दक्षिण अफ्रीका के सभी वर्गो के हिन्दुओं का डॉ. एन. पी. देसाई पर विश्वास है। उनकी धर्म और संस्कृति की भावना

संकुचित और साम्प्रदायिक न होकर विशाल है। यहां की हिन्दू महासभा भी राजीतिक क्षेत्र की साम्प्रदायिकता से परे है और उसका क्षेत्र हिन्दुओं के सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास का रहा है।

ट्रांसवाल के प्रचारक

दक्षिण अफ्रीका के नाताल प्रांत में ही भारतीयों की बहुत बड़ी बस्ती रहती हैं। ट्रांसवाल और केप प्रांत में बहुत कम भारतीय लोग बसे हैं। इससे प्रचारकों का मुख्य कार्यक्षेत्र नाताल ही रहा है। फिर भी प्राय: सब प्रचारक प्रचार के लिए ट्रांसवाल और केप प्रांत में भी जाते रहे हैं। दो चार आर्य प्रचारक ऐसे भी थे जिन्होंने मुख्यतया ट्रांसवाल में प्रचार कार्य किया। इनमें प्रथम हैं पं. हरिशंकरजी विद्यार्थी ।

पं. हरिशंकरजी विद्यार्थी

पं. हरिशंकरजी गुजरात प्रांत से आये थे। ये बम्बई प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक 'आर्य प्रकाश' के सम्पादक थे। श्री विद्यार्थीजी ने जगह-जगह घूमकर, खासकर गुजरातियों में आर्य भावना पैदा की। वे डरबन भी आये थे। आर्य प्रतिनिधि सभा ने इनका स्वागत भी किया था। इनके व्याख्यान हास्यरस से पूर्ण होते थे। इससे श्रोता लोगों को बहुत पसंद आते थे। विद्यार्थीजी ने मातृभाषा गुजराती के प्रचार के लिए भी खूब प्रयत्न किया था। वे प्रचार के लिए रोडेशिया भी गये थे।

स्व. पं. सुधीर कुमारजी विद्यालंकार

पंडितजी को ट्रां. यू. पाटीदार सोसायटी, जोहानिसबर्ग ने

यहां बुलाया था। वे गुजराती पाठशाला में अध्यापन करते थे। पंडित जी गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक थे। अपने सच्चरित्र से ट्रांसवाल में अच्छा प्रभाव जमाया था। वैदिक विवाह पद्धति एवं संध्या हवन का वहां पर प्रचार किया। इन्होंने ''दयानन्द वैदिक मिशन'' की योजना तैयार की थी। जिसके द्वारा इस देश में आर्य समाज का प्रचार करने वाले थे। बड़ा खेद है कि पं. सुधीर कुमारजी का युवावस्था में ही इस देश में अकाल अवसान हो गया।

श्री विनय चन्द्र पटेल

श्री विनय चन्द पटेल ने जोहानिसबर्ग में आर्य युवक व्यायाम शाला की स्थापना करके व्यायाम का अच्छा प्रचार किया। जोहानिसबर्ग के आर्य सज्जन श्री नाथुभाईजी के सुपुत्र श्री हरिश्चन्द्रजी आर्य भी सूपा गुरुकुलमें विद्याध्ययन करके यहां आये हैं। ये उत्साही भावनाशाली युवक हैं। ट्रांसवाल में वैदिक संस्कार और यज्ञ आदि करवाते हैं। ट्रांसवाल में इन्होंने हिन्दी प्रचार का भी कार्य प्रारम्भ किया है। वहां के राष्ट्रभाषा विद्या मंदिर के संचालक हैं। उनके प्रयत्न से वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का वहां केन्द्र खुल गया है तथा प्रमाणपत्र वितरणोत्सव भी हो चुका है।

श्री बसन्तराय पारेख

श्री बसन्तराय पारेख भी वहां सूपा कुरुकुल से पढ़कर पहुंचे हैं। प्रिटोरिया में **श्री छोटूभाई मेहता** वैदिक संस्कार, कथा, यज्ञ आदि करते हैं तथा केपटाउन में **श्री राम चन्द्र 'कोविद'** सूपा गुरुकुल में विद्याभ्यास करके पहुंचे हैं। ये सब आर्य सज्जन ट्रांसवाल और केपटाउन में आये भावनाओं के प्रचार में अपना सहयोग दे रहे हैं।

अन्य प्रचारक

पं. रविशंकरजी विद्यालंकार

पोर्चुगीज इस्ट अफ्रीका में स्वामी भवानी दयालजी के प्रयत्नों से आर्य समाज का अच्छा प्रचार हुआ है। यहां पर अधिकतर गुजराती व्यापारी बसे हुए हैं। यहां 1932 में भारत समाज की स्थापना हुई सन् 1937 में 'वेद मंदिर' नाम से महान भवन बनाया गया। इस समाज में अध्यापक का कार्य करने के लिए भारत से गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक पं. रवि शंकरजी को बुलाया गया है। अब वहां दूसरे स्नातक पं. सुमन कुमारजी विद्यालंकार भी पहुं गये हैं।

सन् 1944 में पं. रविशंकरजी दक्षिण अफ्रीका पधारे। आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से ता. 4 फरवरी 1944 को पंडितजी का स्वागत हुआ। पंडितजी ने डरबन और जोहानसबर्ग में कई विद्वत्ता पूर्ण व्याख्यान दिये थे।

सन् 1933 में जालंधर कन्या महाविद्यालय के लिए धन संग्रह करने के लिए **श्रीमती राम प्यारी देवी** तथा **कु. नारायणी देवी** आयी थीं। उनके भी कई व्याख्यान हुए थे। ता. 11 जून 1933 के दिन प्रतिनिधि सभा ने उनका स्वागत किया था।

रामकृष्ण मिशन के प्रचारक

श्री स्वामी अध्यानन्दजी सन् 1934 में रामकृष्ण मिशन की

ओर से आये थे तथा श्री स्वामी घनानन्दजी उक्त मिशन की तरफ से सन् 1947 में यहां पधारे थे। दोनों अच्छे विद्वान थे। अंग्रेजी में उनके बहुत उत्तम व्याख्यान हुए थे। भारतीय दर्शन पर उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुनने के लिए यूरोपियन भी आते थे। स्वामी जी ने सी ब्यूह में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी। उन्हें प्रतिनिधि सभा ने स्वागत के लिए निमंत्रित किया था पर उन्होंने यह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। उन्हें आर्य समाज से एक तरह की चिढ़ थी।

श्रीमती सरोजनी नायडू

सन् 1924 में इन्डियन नेशनल कॉग्रेस की प्रतिनिधि बनकर इस देश में भारतीयों की दशा की जांच पड़ताल करने आयी थीं। उनके आगमन का सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव खूब पड़ा। उनकी विद्वत्ता और वाक शक्ति से यहां के यूरोपियन भी बहुत प्रभावित हुए थे। भारतीय महिलाओं की मनोदशा में और उन्हें प्रगति की ओर उत्तेजित करने में श्री सरोजनी देवी का बड़ा प्रभाव रहा है।

श्री श्रीनिवास शास्त्री

यहां भारतीय सरकार के राजदूत बन कर 1927 में आये थे। श्री शास्त्रीजी ने यहां के भारतीयों की सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी दशा के सुधारने में बड़ा कार्य किया है। वे उच्च कोटि के वक्ता थे। उनकी विद्वत्ता और प्रतिभा की धाक यूरोपयनों पर भी जम गयी थीं। भारतीय लोगों को मैट्रिक तक शिक्षा मिल सके। इसके लिए शास्त्रीजी ने बड़ा प्रयत्न किया है और उन्हीं की स्मृति में 'शास्त्री कॉलेज' खोला गया है।

सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

सन् 1938 में यहां पर पधारे। तत्कालीन भारतीय राजदूत श्री रामराव के प्रयत्नों से यहां आये थे। भारतीय दर्शनों के इस प्रकाण्ड पंडित का नाम जगप्रसिद्ध है। उनकी विद्वता ने यहां के यूरोपियनों को बहुत प्रभावित किया। श्री राधाकृष्णन् यहां अधिक समय नहीं ठहर सके थे।

उपरोक्त तीनों नेता यहां के लिए भारतीय संस्कृति के उच्चतम प्रतिनिधि थे। इन्होंने अपने व्यक्तित्व से यहां के भारतीयों और यूरोपियनों को एक सा प्रभावित किया है। दक्षिण अफ्रीका में इनका आगमन आशीर्वाद के समान था।

elibrary.thearyasamaj.org

अध्याय दसवां

आर्य युवक सभा, डरबन
- तथा -
आर्य अनाथाश्रम, डरबन

elibrary.aryasamaj.org

स्थापना

श्री सत्यदेवजी अपने घर पर कई नवयुवकों को रात के समय हिन्दी पढ़ाते थे। इनमें से कई उत्साही युवकों के साथ मिलकर उन्होंने ता. 19 अप्रैल 1910 को 'आर्य बाल मित्र मंडल' नामक संस्था की स्थापना की। श्री स्वामी शंकरानन्दजी ने इस मंडल का नाम बदल कर 'आर्य युवक सभा' रखवाया।

कार्य

स्वामी शंकरानन्दजी ने आर्य युवकों को सर्वप्रथम सन्ध्या और हवन की विधि सिखलायी। तदनुसार पं. नैनाराजजी ने संध्या हवन करवाना प्रारम्भ किया। प्रति गुरुवार को सभा का साप्ताहिक सत्संग होने लगा यह सत्संग मायावंत हॉल, तमिल इन्स्टीट्यूट तथा पटेल हॉल में कई वर्षों तक होता रहा। बाद में आर्य प्रतिनिधि सभा का भवन बनने पर उसमें होता है। आज तक नियमित रूप से यह साप्ताहिक सत्संग होता है।

सन् 1921 में गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक पं. ईश्वरदत्तजी विद्यालंकार को आर्य युवक सभा ने ही ट्रांसवाल से नाताल में प्रचार के लिए बुलाया और सभा के द्वारा ही वे प्रचार कार्य करते रहे। धर्म प्रचार के कई कार्यों का सूत्रपात करने का श्रेय भी इसी सभा को है। सन् 1925 में इस देश में महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाने के लिये इसी संस्था ने ता. 10 नवम्बर 1924 को एक आर्य महासम्मेलन बुलाया था। उसी में जन्म शताब्दी समिति की रचना हुई थीं। सभा अपने स्थापना काल से सदा जीवित जाग्रत संस्था रही है।

शुद्धि सभा

शुद्धि सभा ने डरबन में सबसे ज्यादा शुद्धियां करवायी है। पिछड़े हुए हिन्दुओं को अपने में मिलाने के लिए सभा हमेशा कोशिश करती रहती है। साथ ही जो हिन्दू ईसाई या मुसलमानों के फंदे में फंसने वाले होते हैं उनकी खबर पाते ही सभा उन्हें बचाने के लिए तैयार हो जाती है। सन् 1917 में श्री जंगबहादुर सिंह डी.सी. एम., जो प्रथम महायुद्ध में उच्च भारतीय सैनिक अफसर रह चुके थे, उनके धर्म परिवर्तन के लिए यहां के ईसाई गिरजे में पहुंचे और पादरी महोदय को शास्त्रार्थ के लिए आह्वान किया। जिसके लिए वे तैयार न हुए। तब सभा के लोग श्री जंगबहादुर सिंह को चर्च के अन्दर से छुड़ा लाये। वे जीवन पर्यंत आर्य रहे। इसी वर्ष श्री परसरामन को भी सभा ने ईसाई होने से बचा लिया। इसके लिए ईसाईयों ने सभा के 30 सदस्यों को गिरफ्तार भी करवा दिया था। जिसके लिए जुर्माना भरा गया था। पर परसराम को ईसाई होने से बचा लिया।

elibrary.theaaryasamaj.org

पाठशाला

श्री बी.एम. सिंह की भूमिका में कई सज्जन अंग्रेजी पाठशाला चलाते थे। ठीक प्रबंध न हो सकने से उन्होंने उसे बंद कर देना चाहा। इससे आर्य युवक सभा ने यह पाठशाला 1 अगस्त 1928 को अपने अधीन ले ली और अपनी भूमि में इसका संचालन करने लगी। विद्यार्थियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी जिससे पाठशाला के मकान की तीन बार वृद्धि करनी पड़ी, फिर भी मकानों की कमी रहती है। इस पाठशाला को सरकारी सहायता प्राप्त है। प्रात:काल के समय भारतीय बच्चों को सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार अंग्रेजी शिक्षा दी जाती है। शाम के समय मातृभाषा हिन्दी और तमिल पढ़ाने की भी व्यवस्था है। पाठशाला के मैनेजर स्व. बी. एम. सिंह तथा स्व. बी. एस. सिंह रह चुके हैं। अब श्री एम. एल. सिंह मैनेजर हैं। हिन्दी के अध्यापक श्री एम. रघुवीर हैं।

पदाधिकारी तथा सहयोगी

सभा के वर्तमान सभापति श्री बी. गोविन्द, मंत्री श्री आर. शिशुपाल तथा कोषाध्यक्ष श्री आर. शिव प्रसाद हैं। श्री सत्यदेवजी सभा की स्थापना से 29 वर्ष तक सभापति पद पर रहे थे। उनकी अध्यक्षता में ही सभा इतनी उन्नति कर सकी। उनके लघु भ्राता स्व. एस. डी. शंकर कई वर्षों तक सभा के मंत्री रहे। श्री शंकर बड़े उत्साही कार्यकर्ता थे और अच्छे वक्ता थे। युवावस्था में ही उनके स्वर्गवास से सभा को तथा आर्य समाज को बड़ी क्षति पहुंची है। स्व. के. राम कैलास भी सभा की स्थापना से मदद देते आये थे। वे तीन वर्ष तक सभा के प्रधान भी रह चुके थे। इसी तरह निम्न

लिखित सज्जनों का सभा को सदा सहयोग मिलता रहा है; स्व. बी. भगवान, श्री आर. सी. सिंह, श्री एस. एल सिंह और श्री नैनाराज आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य अनाथाश्रम, डरबन

आर्य युवक सभा का सबसे महान कार्य आर्य अनाथाश्रम का संचालन है। यह संस्था यहां के आर्य समाजियों के लिए ही नहीं सभी भारतियों के लिए गौरव स्वरूप है। भारतीय अनाथों की सेवा की दृष्टि से यह आश्रम सारे दक्षिण अफ्रीका में बेजोड़ है।

स्थापना

सन् 1918 के साल की एक रात्रि को आर्य युवक सभा के सभापति श्री सत्य देवजी को एक अत्यंत करुण अनुभव हुआ। आपने देखा कि एक अफ्रीकन सिपाही एक भारतीय वृद्ध भिक्षुक को, जोकि रात को एक सड़क के किनारे सो गया था, मारकर वहां से खदेड़ रहा है। उस भिक्षुक के लिए अन्य कोई आसरा न था। सो वह एक सार्वजनिक पाखाने के अन्दर जाकर सो रहा। इस घटना से श्री सत्यदेवजी का हृदय दयार्द्र हो गया। तभी से उन्हों ने अनाथ भारतीयों के लिए कुछ न कुछ करने का संकल्प कर लिया। इनकी प्रेरणा से आर्य युवक सभा ने ता. 7 जुलाई 1918 को आर्य अनाथाश्रम स्थापित करने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया।

आश्रम खोलने का प्रस्ताव तो हो गया पर सभा के पास इसके लिए किसी तरह का साधन न था। इससे सभा के भजन मंडल द्वारा नाटकों का अभिनय दिखाकर धन प्राप्त करने की योजना हुई। मंडल के अध्यापक श्री एन. लाल बहादुरजी के रचित नाटकों का सभा के सदस्यों ने बड़ी खूबी से अभिनय कर दिखाया। जनता ने इसे खूब पसंद किया। इस तरह जो धन मिला उससे जमीन

और भवन खरीदे गये। ता. 1 मई 1921 को पं. भवानी दयालजी ने इसका उद्घाटन किया। आश्रम के शुरू होने पर श्री सत्य भूषण ने इसके संचालन के लिए अवैतनिक कार्यकर्ता रूप से 19 मास तक अपनी सेवाएं आश्रम को दी थीं।

आश्रम की वृद्धि

आश्रम की कार्य धीमे-धीमें बढ़ता चला गया। हिन्दू जनता तथा दूसरे लोगों को भी इस पर विश्वास होने लगा। तीन वर्ष के बाद ही श्री एच. रोबिनसन के प्रयत्नों से आश्रम को प्रान्तीय सरकार की तरफ से मदद मिलनी शुरू हुई।

आश्रम में पहले प्रौढ़ अनाथों को ही लिया जाता था। फिर अनाथ बच्चों को आश्रम में रखने की मांग बढ़ती गई। जिससे ता. 7 अक्टूबर 1926 से इसमें अनाथ बच्चे भी प्रविष्ट होने लगे और तबसे आज तक दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न प्रदेशों से अनाथ बच्चे यहां भेजे जाते हैं। अब तो आश्रितों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी इससे आश्रम के मकानों को बढ़ाने की जरूरत रही। प्रौढ़ स्त्री और पुरुषों के लिए तथा बच्चों के लिए पृथक्-पृथक् वार्ड बनाये गये। सन् 1928 में बने भवन की आधार शिला सभा के उत्साही कार्यकर्ता श्री बी.एम. सिंह के शुभ हस्तों से रखी गयी। इसका उद्घाटन भारत के राजदूत सर कूर्मा रेड्डी के कर कमलों से हुआ। इसके बनने पर भी मकानों की बहुत कमी रहने लगी। इससे सन् 1933 में तथा 1943 में पुनः नये मकान बनाये गये। पहले मकान का उद्घाटन इन्डियन इमिग्रेशन प्रोटेक्टर श्री एच. रोबिन्सन के शुभ हस्तों से हुआ। तथा दूसरी बार प्रान्तिक सरकार के एडमिनिस्ट्रेटर श्री हीटन निकल्स के द्वारा उद्घाटन हुआ।

आश्रम की व्यवस्था

आश्रम की व्यवस्था आर्य युवक सभा की एक उपसमिति द्वारा होती है। सभी अनाथ बच्चों को तथा आश्रितों को पृथक्-पृथक् खाट दिये गये हैं। उनकी देखरेख के लिए एक पुरुष और एक स्त्री कार्यकर्ता चौबीसों घण्टे आश्रम में रहते हैं। आश्रम के आश्रितों को तीन बार भोजन दिया जाता है। आश्रम की तरफ से उनको कपड़े दिये जाते हैं। रोगी आश्रितों के लिए दवा-दारू आदि की भी पूरी व्यवस्था होती है। आवश्यकता होने पर डॉक्टर भी आकर जांच कर जाते हैं। आश्रम के बच्चों को अंग्रेजी और मातृभाषा की शिक्षा मिल सके, इसके लिए आर्य युवक सभा एक पाठशाला भी चला रही है। अनाथाश्रम की व्यवस्था की दर्शकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इन प्रशंसकों में भारत सरकार के यहां पर आने वाले राजदूत यूनियन सरकार और प्रान्तीय सरकार के कर्मचारी, डरबन शहर के मेयर तथा भारतीय प्रचारक विद्वान सभी तरह के लोग हैं। आश्रम में भोजन की व्यवस्था और सफाई पर खूब ध्यान दिया जाता है। सभी ने इसके लिए आश्रम की प्रशंसा की है।

आश्रम के कार्य के सम्बन्ध में दो चार मुख्य सम्मतियां नीचे देते हैं:-

श्रीमती सरोजनी नायडू (इन्डियन नेशनल कांग्रेस की प्रतिनिधि) लिखती हैं :- ''हम यहां आये, आश्रम को बड़ा स्वच्छ और व्यवस्थित पाया।'' ता. 24 मई 1924।

दक्षिण अफ्रीका के प्रधान मंत्री श्री जे. सी. स्मट्स आश्रम

की जयंती के प्रसंग पर सन्देश भेजते हैं:-

''.....बहुत छोटे रूप से प्रारम्भ होने पर भी तथा आर्थिक कठिनाईयों के होते हुए भी आप लोग ऐसी संस्था का निर्माण करने में सफल हुए हैं जो अपने भलाई के कार्यों के लिए सारे नाताल प्रांत में प्रसिद्ध हैं। इतने थोड़े समय में इतनी उन्नति करने के लिए आप लोग धन्यवाद के पात्र हैं। भविष्य में सब प्रकार की सफलता चाहता हूं। ता. 10 अप्रैल 1946।

डरबन के मेयर श्री एस. जे. स्मिथ लिखते हैं:-

'' यह आश्रम दक्षिण अफ्रीका के सभी प्रान्तों के अनाथों, निराधार बूढ़ों और अपराधी बच्चों की बिना किसी तरह के धार्मिक भेदभाव के लम्बे अरसे से देखभाल कर रहा है। इसके लिए यह गौरवान्वित है।.....इस ढंग की यह एक ही गैर यूरोपियन संस्था है जिसे यूनियन सरकार ने मान्य किया है। यह संस्था सेवा का जो कार्य कर रही है उसका डरबन शहर की तरफ से अंगीकार करते हुए मुझे प्रसन्नता होती है। हम इसकी सब तरफ से शुभकामना करते हैं।'' ता. 10 अप्रैल 1946।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के मंत्री श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय आश्रम की मुलाकात लेने के बाद लिखते हैं:-

''यह आश्रम आर्य युवक सभा का अद्‌भुत कार्य है। यहां की यह अद्वितीय संस्था है और आर्य समाज की परोपकार वृत्ति का सुन्दर नमूना है। परमात्मा का आश्रम पर आशीर्वाद हो और आश्रम को सफल बनाने में जिनका हाथ है प्रभु उनका कल्याण करे।'' जनवरी 1950।

आश्रम की प्रगति

आश्रम की प्रगति तेजी से होने लगी। इस की व्यवस्था और कार्य शक्ति से प्रभावित होकर यहां की यूनियन सरकार ने अपराधी भारतीय बच्चों को सुधारने के लिए अनाथाश्रम में भेजने का निश्चय किया। जो बच्चे किसी अपराध में पकड़े जाते, अथवा माता-पिता जिन बच्चों के सुधारने की जिम्मेदारी नहीं उठा सकते उन्हें सरकार आश्रम में भेजने लगी। इसके लिए सरकार के सोशियल बेलफेयर विभाग से आश्रम को प्रति बच्चे के लिए मासिक 30 शि. (20 रुपये) सहायता भी प्राप्त होती है।

आश्रम में बच्चों की निरन्तर बढ़ती हुई संख्या के कारण सभा ने अभी हाल में साढ़े सत्रह बीघा जमीन केटोमेनर में खरीद ली है। यहां नये और अच्छे मकानों में बच्चों को रखा जावेगा। बच्चों को हुनर आदि सिखाने की भी व्यवस्था की जावेगी। यह जमीन 7250 पौंड में ली गयी है। जिस पर अभी 6000 पौंड का कर्ज है। सभा के अधिकारी इसे चुकाने के लिए बहुत प्रयत्नशील हैं।

आश्रम की प्रगति का ख्याल आगे दी हुई तालिका से आ सकेगा :-

(आश्रम की स्थापना से लेकर ता. 30 नवम्बर 1949 की संख्याएं)

आश्रित	**प्रविष्ट**	**मुक्त**	**मृत्यु**
प्रौढ पुरुष	684	487	165
प्रौढ स्त्री	378	277	85
लड़के	303	254	3
लड़कियां	245	205	3
कुल	**1610**	**1223**	**255**

elibrary.aryasamaj.org

यह आश्रम सात अनाथों से चालू हुआ था। आज तक इसमें 1610 अनाथ आश्रय पा चुके हैं। इनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी धर्म के अनुयायी हैं। सन् 1921 से आज तक यहां पर पलने वाले बच्चों में सिर्फ 6 ही की मृत्यु हुई है। आश्रम के सुप्रबंध का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

आश्रम में पलने वाले बालक-बालिकाओं को 18 वर्ष की उम्र तक आश्रम में रखा जाता है। इस काल में सरकार की ओर से जो अपराधी बच्चे आते हैं उनको शिक्षा-दीक्षा देकर सुधारा जाता है और फिर वे अपने माता-पिता या रिश्तेदारों के यहां चले जाते हैं। जो अनाथ बच्चे होते हैं उनको बड़ा होने पर कुछ काम-धंधा मिल जावे इसके लिए आश्रम की तरफ से प्रयत्न होता है। ऐसे बच्चों में श्री शिशुपाल का उदाहरण बढ़ा ज्वलन्त है। श्री शिशुपाल अनाथ बच्चे के रूप में प्रविष्ट हुए। वे होनहार थे। पढ़ाई में अच्छी तरक्की की और आज वे सरकारी पाठशाला के शिक्षक बन गये हैं। इतना ही नहीं जिस आश्रम में पले उसकी सेवा करना भी उन्होंने अपना ध र्म समझा और आश्रम की संचालिका संस्था आर्य युवक सभा के मंत्री पद को वे सम्भाले हुए हैं आश्रम में पलने वाली अनाथ लड़कियां बड़ी हो जाती है तो उनकी शादी की व्यवस्था भी संस्था की ओर से की जाती है। अपनी शिक्षा, संस्कार आदि से ऐसी कन्याएं गृहस्थी बनकर अपने संसार को अच्छी तरह चला रही हैं। आश्रम में जो बूढ़े स्त्री-पुरुष आते हैं उनके रिश्तेदारों के परिवार की आर्थिक अवस्था ठीक होने पर वे उन्हें पुनः ले जाते हैं। अथवा तो वे मृत्यु पर्यन्त आश्रम में पलते हैं और शांति से अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

दाता और सहायक

आश्रम ने इन तीस वर्षों में भारतीयों की ठोस सेवा की है। इससे यह संस्था जनप्रिय हो गई है। इसकी आवश्यकताएं जनता के द्वारा ही पूर्ण होती हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि के भेदभाव को तथा काले गोरे के रंग द्वेष को छोड़कर सभी लोग इस संस्था की मदद करते रहे हैं। केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकार, डरबन म्यूनिसपैलिटी तथा अन्य संस्थाएं भी इसे आर्थिक सहायता देती हैं। अनाज की दुकान वाले, शाक-भाजी वाले तथा कपड़े वाले सभी आश्रम को मदद करते रहते हैं। कई व्यक्ति प्रतिदिन अथवा प्रति सप्ताह अपनी तरफ से विविध वस्तुएं आश्रम को भिजवाते हैं। प्रति वर्ष आश्रम को दान देने वाली निम्न लिखित संस्थाएं हैं। सन् 1949 में इनकी ओर से इस प्रकार सहायता मिली है:-

1220 पौंड सोशियल बेलफेयर डिपार्टमेन्ट, यूनियन सरकार
प्रत्येक बच्चे के लिए मासिक 1 पौंड, 10 शि. 0 पे.
300 पौड एन. यू. सी. रेगसे
100 पौंड प्रान्तीय सरकार, नाताल की ग्रांट
50 पौंड डरबन म्यूनिसपैलिटी
50 पौंड डरबन टर्फ क्लब
50 पौंड क्लेरवुड टर्फ क्लब

इन संस्थाओं से प्रतिवर्ष इस तरह से न्यूनाधिक मदद मिलती रहती है। आश्रम के मुख्य दानियों के शुभ नाम भी यहां दिये जाते हैं:- 250 पौंड : श्री बी. सुखदेव सिंह, 250 पौंड डरबन पब्लिक हाउस, ट्रस्ट, 125 पौंड श्री रुस्तमजी ट्रस्ट।

105 पौंड देने वाले सज्जन : सर सी. जी. स्मिथ, श्री ध ुपेलिया एण्ड सन्स, श्री सी. एन राणा एण्ड सन्स, श्री शामजी देवशी एण्ड सन्स, श्री बी. एम. पटेल, श्री एन. नारायण चेरेटी ट्रस्ट, श्री केपिटल चेरेटी ट्रस्ट, दि प्रिमियम प्रोड्यूस कम्पनी, श्री एम, एल, सुलतान, श्री वी. एन. नायक।

52 पौंड 10 शि. देने वाले सज्जन : श्री कोमर्शियल प्रोड्यूस सप्लाई कम्पनी, श्री टी. एन. भूला, श्री एम. एस. रांदेरी चेरेटीबल ट्रस्ट, श्री डाह्या खुशाल एण्ड कम्पनी, श्री विक्टोरिया प्रोड्यूस कम्पनी।

26 पौंड 5 शिं. देने वाले सज्जन : श्री ई. जी. पारेख फैमिली ट्रस्ट, श्री एच.एम. भूला।

25 पौंड : श्री बी. गंगाराम।

25 पौंड से कम देने वाले अन्य अनेक सज्जन हैं।

सहयोगी और संचालक

आश्रम को अनेक निस्वार्थी सज्जनों की अमूल्य सेवाएं मिल रही हैं। इनमें श्री बी. एम. पटेल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। संस्था की स्थापना से लेकर आज तक वे इसमें सक्रिय रस लेते आये हैं। इन्होंने आश्रम के लिए चन्दा इकट्ठा करने में, भूमि खरीदने में एवं मकानों के निर्माण में अपार सहयोग दिया है। सभा को बैंक से ऋण दिलवाने में श्री बी. एम. पटेल का बहुत उद्योग रहा है। सभा ने इन कार्यों से कृतज्ञ हो उन्हें अपना संरक्षक बनाया है। अब भी श्री बी. एम. पटेल पर संस्था की बहुत आशा है। इसी तरह पारसी गृहस्थ भारतीय नेता श्री सोराबजी रुस्तमजी की भी

संस्था पर बड़ी कृपा रही है। चन्दा इकट्ठा करने में उनकी सेवाओं और प्रतिष्ठा का संस्था को लाभ मिला है। श्री सोराबजी भी संस्था के परम सहायक हैं।

इसके अलावा आश्रम को मदद करने वाले इतने सज्जन हैं कि हर एक का नामोल्लेख करना भी मुश्किल है। फिर भी जिन महानुभावों के बल पर आज तक संस्था का सफलता पूर्वक संचालन हो सका है और उनके शुभ नाम ये हैं:- श्री डी.जी. सत्यदेव, श्री एस. एल. सिंह, पं. नैनाराज, श्री बी. गोविन्द आदि। डरबन के प्रसिद्ध भारतीय डॉक्टर श्री के. एम. मिस्त्री तथा श्री एम. जी. नायडू बिना फीस लिए आश्रम में विजिट पर आते हैं और अपनी सेवाएं देते हैं।

elibrary.thearyasamaj.com

अध्याय ग्यारहवाँ

– + –

डरबन आर्य संस्थाएं

खन्डाला एस्टेट हिन्दू संगठन

स्थापना

11 जनवरी 1931 को खंडाला प्रदेश के हिन्दुओं में शिक्षा और धर्म के प्रचार तथा संगठन के उद्देश्य से 'खंडाला एस्टेट हिन्दू संगठन' नामक संस्था की नींव पड़ी। इसकी स्थापना में श्री लौटन महाराज, श्री एफ. शिव प्रसाद, श्री पी. चिरकूट, श्री बी. एम. चैतू तथा श्री आर. करपत ने बड़ा उद्योग किया था।

कन्या पाठशाला

सन् 1934 में संस्था ने अपने लिए भूमि खरीदी। उस पर भवन बनाने के लिए 'मित्र नाटक मण्डल' की स्थापना की गयी। नाटकों के अभिनय से चन्दा इकट्ठा किया गया। इस आमदनी से पाठशाला खोलने का निर्णय हुआ, तो ज्ञात हुआ कि इस प्रदेश में एक दूसरी संस्था पाठशाला के लिए प्रयत्नशील है। एक तरह से यह अच्छा ही हुआ क्योंकि इससे हिन्दू संगठन का ध्यान अब एक कन्या विद्यालय खोलने की तरफ गया। इसके लिये जोर-शोर से प्रयत्न होने लगा। श्री सोराबजी रुस्तमजी ने इस कार्य में बड़ी मेहनत की। ता. 1 दिसम्बर 1935 को लेडी चार्ल्स जी. स्मिथ के शुभ

library.thearyasamaj.org

हस्तों से इसका उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती स्मिथ तथा श्री बी. बोधासिंह ने 10 वर्ष तक 25 पौंड की वार्षिक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। श्री सोरावजी ने इस मौके पर प्रतिष्ठित भारतीयों और यूरोपियनों को पार्टी भी दी। जिससे कन्या विद्यालय का कार्य सभी वर्गों में परिचित हो गया। प्रारम्भ में तो हिन्दू माता-पिता अपनी लड़कियों को पाठशाला में भेजने से भी झिझकते थे। संस्था की तरफ से लड़कियों को मुफ्त में कपड़े, पुस्तकें आदि देने का भी प्रबन्ध किया। इस तरह 22 कन्याओं को लेकर जो पाठशाला चालू की गयी थी उसमें आज 180 लड़कियां पढ़ रही हैं। सबेरे सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार अंग्रेजी पाठशाला चलती है और शाम को 3 से 5 बजे तक हिन्दी पाठशाला लगती है। सन् 1935-36 में संस्था के लिये आर्थिक संकट का समय आया था परन्तु अधिकारियों के प्रयास से वह संकट टल गया।

कार्य

कन्या पाठशाला के संचालन के अतिरिक्त हिन्दू संगठन की तरफ से दूसरी भी प्रवृत्तियां होती हैं। स्त्रियों में प्रचार के लिये सन् 1943 में महिला समाज की स्थापना की गयी। संस्था का मित्र भजन मंडल भी है जिस के संगीत के कार्यक्रम से आमदनी भी होती है। संस्था की तरफ से वार्षिकोत्सव धार्मिक त्योहार आदि भी मनाये जाते हैं। स्थानीय हिन्दू सेवा समिति से मिल कर प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग भी किया जाता है। संस्था में श्रीमती नानजी कालिदास भी पधारी थीं। उन्होंने कन्याओं को भोज दिया था तथा 50 पौंड दान दिया था।

पदाधिकारी तथा सहयोगी

संस्था के वर्तमान सभापति श्री आर. करपत है। वे ही संस्था के प्राण हैं। मंत्री श्री पी. चिरकूट तथा कोषाध्यक्ष श्री बी. एम. चैतू हैं। संस्था के सहयोगियों में स्व. बी. बेचू तथा एफ. रामलगन का नाम स्मरणीय रहेगा। वे दोनों सज्जन संस्था के सदस्य न थे। पर उनकी सेवाएं बहुमूल्य हैं। स्व. बी. बेचू ने नाताल में संस्था के लिये चंदा इकट्ठा करने में बड़ी मदद की थी। स्व. एफ. रामलगन ने नाताल बिल्डिंग सोसायटी से लोन दिलवाने में अच्छी सहायता पहुंचायी थी। श्री ए. ग्रे कन्या पाठशाला के मैनेजर रहे हैं। उन्होंने नवम्बर 1936 में संस्था को सरकारी ग्रांट दिलाकर बड़ी सेवा की है। श्री स्वामी भवानी दयालजी भी संस्था का समय-समय पर मार्ग दर्शन करते रहे हैं। इनके अलावा संस्था के कार्यों में सहयोग देने वालों के चिरस्मरणीय नाम ये हैं:- स्व. यू. शिवजतन, स्व. बी. गरीब, स्व. बी. बोधासिंह, श्री बी. भगवानदीन, श्री बी. रघुनंदन, श्री के. देवी प्रसाद, श्री बी. गोविन्द, श्री एस. शालीग्राम, श्री आर. अलगू, श्री आर. बोधासिंह, श्री के. गोपी, श्री आर. रघुवीर, स्व. बी. सुखदेव सिंह. कुमार अमीना खान, कुमारी मैनावती चिरकुट, श्रीमती सुखियावती रघुवीर, श्रीमती रूप बिन्डन, री एफ. शिव प्रसाद, श्री एल. राम प्रसाद, श्री सुन्दर सिंह, श्री बी. रामनारायण सिंह, श्रीमती कल्याणी देवी आदि।

युवक आर्य समाज, क्लेरवुड

स्थापना

क्लेरवुड की बस्ती डरबन के पास है। यहां पर कई सहस्र भारतीय लोग बसे हुए हैं। उनमें वैदिक धर्म के प्रचार के उद्देश्य से श्री आर. वी. भूषण ने ता. 3 अप्रैल 1932 को अन्य कई सहयोगियों की सहायता से 'युवक आर्य समाज, क्लेरवुड' की स्थापना की।

कार्य

समाज की ओर से हर रविवार को सांयकाल साप्ताहिक सत्संग होता है। त्योहार तथा उत्सव भी मनाये जाते हैं। भारत से आने वाले विद्वानों और प्रचारकों के समय-समय पर व्याख्यान भी करवाये जाते हैं। समाज का अपना एक संगीत दल भी है। जिसके कार्यक्रमों के द्वारा समाज को आमदनी भी होती है। संगीत के अध्यापक श्री जे. रमेश हैं। समाज ने सन् 1933 में एक भजन मंडल की भी स्थापना की। इसकी तरफ से नाटकों का अभिनय होता है और समाज को आमदनी होती है। समाज की तरफ से एक व्यायाम शाला भी चलती थी।

पाठशाला तथा भवन

ता. 5 फरवरी 1933 के दिन समाज द्वारा एक हिन्दी

पाठशाला का प्रारम्भ किया गया। जिसके लिए समाज के संस्थापक सदस्य श्री आर. भूषण ने अपना कमरा सात वर्ष तक बिना किराये के दिया। स्व. डी. रविवरण एवं श्री एस. एम. महाराज अवैतनिक अध्यापक रहे। पाठशाला में निरन्तर विद्यार्थी बढ़ने लगे। अत: समाज के उत्साही कार्यकर्ता भूमि खरीदने और भवन बनाने के लिए घोर परिश्रम करने लगे। समाज के भजन मंडल के द्वारा नाटकों का अभिनय किया गया। छ: बार नाटक दिखाये। जिसके लिये श्री एफ, सत्यपाल ने बड़ा श्रम उठाया। इनसे समाज को अच्छी रकम मिली। जिससे सन् 1935 में भूमि खरीदकर मकान बनाया गया। इस भवन में हिन्दी पाठशाला लगने लगी और अन्य कार्य भी इसी में होने लगे। विद्यार्थी प्रति वर्ष बढ़ते गये और अब यह मकान भी छोटा पड़ने लगा है। इससे नया बड़ा मकान बनाने का समाज ने निर्णय किया है। उसके लिए परमिट भी मिल गयी थी। परन्तु म्यूनिसपैलिटी मकान बनाने की इजाज़त नहीं देती। क्योंकि जमीन थोड़ी होने से बच्चों के लिए खेलने को मैदान नहीं रहता। इस समय हिन्दी पाठशाला में 276 विद्यार्थी पढ़ते हैं। यह पाठशाला सबेरे और शाम दोनों वक्त लगती है। पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघ में सम्मिलित है। इसके मुख्याध्यापक श्री रामचन्द्र महादेव सिंह हैं।

अधिकारी तथा सहायक

समाज के वर्तमान सभापति श्री रामानन्द, मंत्री श्री जे.

बैजनाथ तथा कोषाध्यक्ष श्री पी. काशी प्रसाद हैं। समाज को आगे बढ़ाने में श्री आर. भूषण तथा स्व. डी. रविचरण का बड़ा हाथ रहा है। ये अवैतनिक पढ़ाते थे, भजन मंडल कायम किया तथा तीन वर्ष समाज के मंत्री रहे थे। 1942 में श्री डी. रविचरण का देहांत हो जाने से समाज ने अपना एक आधार स्तंभ खो दिया है। समाज की उन्नति में निम्न लिखित सज्जनों का सहयोग सदा चिरस्मरणीय रहेगा– श्री डी. जी. सत्यदेव, श्री ईश्वर सिंह, श्री आर. बी. लाल, श्री करुणा दत्त प्रसाद, श्री जे. महादेव सिंह, श्रीमती लाल, श्री बी.पी. सिंह, श्री एन. सितलू, श्री एन. कन्चई, श्री पी. डी. प्रसाद आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य समाज, केटो मेनर

स्थापना

20 सितम्बर 1921 को केटो मेनर की भारतीय बस्ती में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के उद्देश्य से एक संस्था की स्थापना की गयी। संस्था का नाम 'श्री सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासु सभा' रखा गया। इस संस्था की स्थापना में स्व. साधु अयोध्या दास, स्व. एस. पदार्थ, श्री ईश्वर प्रसाद तथा श्री आर. देव दत्त का बहुत परिश्रम था। संस्थाके प्रधान स्व. अयोध्या दास तथा मंत्री श्री आर. देवदत्त चुने गये थे। सन् 1929 में डॉ. भगतराम इस देश में पधारे। उनकी सलाह से इस संस्था का नाम बदलकर आर्य समाज, केटो मेनर कर दिया गया।

कार्य

समाज के द्वारा साप्ताहिक सत्संग होता है। त्योहार और जयन्तियां मनायी जाती हैं। भारत में यहां आने वाले सभी प्रचारकों को बुला कर प्रचार कार्य किया जाता है। समाज का कार्य अनाथ और पीड़ित लोगों की सेवा करना भी है। समय-समय पर इसने उनको मदद पहुंचायी है। सन् 1931 में समाज के मुख्य कार्यकर्त्ता श्री एम. रघुवीर का अकाल देहान्त हो गया। उनका परिवार निराधार हो गया। समाज ने उनके

बच्चों के पालन करने की जिम्मेदारी उठायी। आज वे बच्चे बड़े होकर समाज के कार्यों में सहयोग दे रहे हैं। समाज के अन्तर्गत एक आर्य हितैषी भजन मंडल है। जिसके द्वारा संगीत आदि का कार्य होता है। इसकी आय से हिन्दी पाठशाला को भी मदद मिलती है। इसी तरह समाज का अपना आर्य वीर दल भी है। जिसके द्वारा व्यायाम की शिक्षा दी जाती है। इस दल के सदस्य जनता की सेवा में भी हाथ बंटाते हैं।

हिन्दी पाठशाला

समाज के उद्देश्यों में हिन्दी प्रचार मुख्य है। इससे समाज की स्थापना के साथ ही वह हिन्दी पाठशाला चलाता है। ता. 20 सितम्बर 1921 को स्व. बाल किशोर महाराज के हस्तों से इस पाठशाला का उद्घाटन हुआ था। सन् 1931 में समाज के आर्य हितैषी भजन मंडल द्वारा तथा अधिकारियों के सहयोग से चन्दा इकट्ठा किया गया और मेबिल में हिन्दी पाठशाला के लिए जमीन और मकान खरीदे गये। जिसका उद्घाटन स्व. बी. एम. सिंह के द्वारा हुआ। इस पाठशाला में निम्न लिखित अध्यापक अवैतनिक सेवाएं देते रहे हैं :- श्री ए. बरन, श्री जी. ईश्वर प्रसाद, श्री एम. राम प्रसाद, स्व. श्री हरिभजन, श्री ओ. देव नारायण, श्री एस. गोकुल, श्री डी. हरिश्चन्द्र।

समाज के संरक्षक स्व. श्री बी. सुखदेव सिंह ने समाज के लिए 400 पौंड में जमीन खरीदी है। वे इस पर आर्य मंदिर बनवाना चाहते थे। पर दुख है कि उनका अवसान हो गया।

elibrary.thearyasamaj.org

समाज के अधिकारी भवन बनाने के प्रयत्न में लगे हुए हैं।

पदाधिकारी तथा सहयोगी

श्री आर. देवदत्त समाज के सभापति हैं। समाज की स्थापना से लेकर आज तक वे बहुत ही निष्ठा से संस्था की सेवा में लगे हुए हैं। संयुक्त मंत्री श्री डी. एस. पदारथ और पी. सीब्रन हैं। कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र हैं। समाज के कार्यों में सहयोग देने वाले सज्जनों के शुभ नाम ये हैं:- श्री बी. रामावतार, श्री एस. बद्रीनाथ, श्री सी. एन. राणा, श्री के जगरूप, श्री बी. बेचू, श्री ए. दलीप सिंह, श्री के. हरि प्रसाद, श्री जितू, पं. गजाधर, श्री एस. प्रीति, श्री देवव्रत, श्री आर. अर्जुन, श्री एम. भिखारी, श्री आर. राज कुमार, श्री राम प्रसाद, श्री आर. आर. प्रसाद आदि।

elibrary.theaaryasamaj.org

आर्य समाज, वेस्टविल

स्थापना

जनवरी 1931 में 13 सदस्यों के उत्साह से आर्य समाज, रायकोपिस की स्थापना हुई थी। प्रारम्भिक कार्य बड़ा शिथिल रहा। सन् 1933 में हिन्दी पाठशाला चालू की गयी। जिसमें 50 बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाने लगी। सन् 1936 में समाज में नवजीवन आया; तब से इस समाज का नाम 'आर्य समाज, वेस्टविल' रखा गया।

कार्य

1936 में समाज ने हिन्दी पाठशाला के लिये जमीन खरीद ने का निश्चय किया। इसके लिये समाज के सदस्यों ने नाट्य प्रयोग करके चंदा इकट्ठा किया जिसके लिये श्री बी. गोविन्द ने बड़ी मेहनत की थी। मेइन रोड पर जमीन खरीदी गयी। इस समय एक आर्य समाज सेवा दल की भी स्थापना की गयी। जिसके स्वयं सेवक उत्सव, सभा, शादी आदि अवसर पर जनता की सेवा कर रहे हैं। इसी तरह ता. 8 अगस्त 1942 को स्त्रियों में प्रचार की दृष्टि में महिला आर्य समाज की स्थापना की गयी। जिसके द्वारा चंदा इकट्ठा करने में, साप्ताहिक सत्संग में एवं हिन्दी पाठशाला के संचालन में मदद मिलती है।

यह समाज महिला समाज के साथ मिलकर त्योहार, उत्सव आदि भी मनाता आया है। समय-समय पर संस्कार और यज्ञ करवाये जाते हैं। प्रचारकों द्वारा प्रचार भी होता है। इस समाज द्वारा कई लोगों को स्वामी भवानी दयालजी द्वारा यज्ञोपवीत दिया गया था।

पाठशाला का मकान

वेस्टविल के इलाके में ईसाई मिशन का सेन्ट थोमस इण्डियन स्कूल नाम का एक ही स्कूल था। 1943 के नवम्बर में मिशन वालों ने वह स्कूल बंद करने का इरादा कर लिया। इसका मतलब था सैकड़ों बच्चों का शिक्षा से वंचित रहना। इस लिए समाज ने जमीन खरीदकर नया स्कूल खोलने का निश्चय किया। मिशन से 300 पौंड के मूल्य से साढ़े चार बीघा जमीन खरीदी गयी। इस समय समाज के पास 150 पौंड ही कुल रकम थी। ऐसे समय में श्री आर. बोधासिंह से बिना सूद के 250 पौंड उधार मिले। बाद में यह रकम पाठशाला बन जाने पर उन्होंने समाज को दान दे दी। मकान के लिए स्टैन्डर्ड बिल्डिंग सोसायटी से 4500 पौंड की लोन ली गयी। प्रान्तीय शिक्षा विभाग को आधा खर्च देने के लिए अर्जी की गयी जिसे उसने मंजूर कर लिया। तब समाज के एक आधार स्तंभ श्री बी. बेचू को मकान बनाने का कार्य सौंपा गया। मकान के लिए एकदम सारा पैसा जुटाना मुश्किल था। ऐसे समय में श्री बी. बेचू ने अपनी बहुत बड़ी रकम लगाकर पाठशाला का मकान बनवाया।

समाज के अन्तर्गत 'नवजीवन विद्या मंडल' है। जिसने नाट्य प्रयोगों के द्वारा द्रव्य इकट्ठा किया और श्री बी. बेचू का पैसा चुकता किया जा सका। इस कार्य के लिए चन्दा करने समाज के सभापति श्री बी. गोविन्द, श्री सत्यदेवजी तथा श्री देवी प्रसाद ट्रांसवाल भी गये। इस कार्य के लिये श्री सत्यदेवजी तथा श्री एस.एल. सिंह की बहुत अधिक सहायता मिली है। फरवरी 1945 में श्री आर. बोधासिंह द्वारा मकान की आधार शिला रखी गयी थी तथा ता. 18 जुलाई 1946 को श्री बी. सुखदेव सिंह के द्वारा इसका उद्घाटन हुआ। अब भी स्टैन्डर्ड बिल्डिंग सोसायटी की बहुत बड़ी रकम देनी बाकी है। पिछले साल समाज उसकी किश्त की रकम भी भर न सका था और सारी जायदाद बेचने की नौबत आ गयी थी। ऐसे संकट के मौके पर श्रीमान बी. परमेश्वर समाज की सहायता के लिये आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी उदारता पूर्वक 396 पौंड समाज को दान दिये; जिससे समाज अपनी जमीन जायदाद की रक्षा कर सका है। श्री बी. परमेश्वर की यह रकम समाज को दान देने वालों में सबसे बड़ी है। संकटकाल की इस सहायता के लिए समाज इनका बहुत कृतज्ञ है।

अधिकारी और सहायक

समाज के वर्तमान पदाधिकारी ये हैं:- सभापति श्री बी. गोविन्द, मंत्री श्री आर. देव नारायण, कोषाध्यक्ष श्री के. देवी प्रसाद। समाज को इस बात का बड़ा खेद है कि उसके दो

संस्थापक सदस्य श्री बी. बेचू तथा श्री डी. सितलू का अवसान हो गया है। वे समाज के कार्यों में बहुत रस लेते थे। समाज के अन्य सहायकों के शुभ नाम ये हैं:- श्री ईश्वर प्रसाद, श्री रघुनंदन, श्री एस. छोटई, श्री हरिचन्द्र, श्री किसुन, श्री पी. राम प्रसाद, श्री आर. शंकर आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

महिला आर्य समाज, वेस्टविल

स्थापना

वेस्टविल आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने स्त्रियों में जाग्रति लाने के उद्देश्य से महिला आर्यसमाज खोलने का निश्चय किया। तदनुसार स्त्री आर्य समाज, डरबन की संचालिकाओं की मदद से ता. 26 जुलाई 1842 को श्री बी. गोविन्द के सभापतित्व में वेस्टविल की स्त्रियोंकी एक सभा हुई। इसमें महिला आर्य समाज की स्थापना करने का निर्णय हुआ। इस नयी संस्था की सभानेत्री श्रीधर्मवती डी. सितलू, संयुक्त मंत्री कुमारी एस. शांतिवती और कुमारी आर. जगरानी एवं कोषाध्यक्ष श्रीमती ए. पी. सिंह के शुभहस्तों से महिला समाज का उद्घाटन समारम्भ हुआ। इस समय गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री हरिशंकर देव आयुर्वेदालंकार का स्वागत भी किया गया।

कार्य

स्थानीय आर्य समाज को इस संस्था द्वारा हर एक कार्य में मदद मिलती रहती है। जब समाज की पाठशाला का मकान बनाया गया तो महिला सदस्याओं की तरफ से चन्दा इकट्ठा करने में; बाजार लगाने में तथा प्रदर्शनों में बड़ी सहायता मिली

हैं। इसी तरह हिन्दू त्योहार तथा अन्य धार्मिक कार्य दोनों संस्थाएं संयुक्त रूप से मनाती हैं।

सभा के कार्यों में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के अलावा श्रीमती बी. लाल सिंह, श्रीमती पी. बी. सिंह, श्रीमती पी.बी. सिंह, श्रीमती पी. राम प्रसाद, श्रीमती देवकी देव नारायण आदि से सदा सहायता मिलती रहती है।

elibrary.thearyasamaj.org

नागरी प्रचारिणी सभा, स्प्रिंगफिल्ड

स्थापना

स्प्रिंगफिल्ड के भारतीयों में मातृभाषा हिन्दी के प्रचार और धार्मिक जागृति लाने के उद्देश्य से सन् 1917 में नागरी प्रचारिणी सभा स्प्रिंगफिल्ड की स्थापना की गयी। इस संस्था की स्थापना करने वालों में मुख्य सज्जन थे:- स्व. श्री लगनवर्ती, श्री बदरी उदित, आर. हीरा लाल, स्व. एम. रामचरण, स्व. श्री सी. विपत आदि।

कार्य

सन् 1917 में अमगेनी नदी में बड़ी बाढ़ आयी थी, जिस ने स्थानीय भारतीयों को बहुत क्षति पहुंचायी। इस मौके पर सभा ने विपदाग्रस्त लोगों को भोजन, कपड़ा, दवाई आदि की सहायता पहुंचाने में बड़ी मदद की थी। सभा की तरफ से समय-समय पर भारत से आने वाले आर्य विद्वानों के व्याख्यानों का प्रबन्ध किया गया है तथा धार्मिक प्रचार के प्रयत्न हुए हैं।

पाठशाला

सभा की स्थापना के समय से एक हिन्दी पाठशाला चालू की गयी। श्री ईश्वर प्रसाद इसके प्रथम अध्यापक थे। इसके बाद श्री रामावतार शुक्ल 19 वर्ष तक अध्यापक रहे। हिन्दी

पाठशाला को चलाने के लिए 'सत्य दीपक नाटक मंडल' तथा 'विद्या उन्नति नाटक मंडल' की स्थापना की गयी। नाटकों के अभिनय से सभा को जो धन मिला उसके द्वारा वह पाठशालाा को चला सकी और उसके लिए मकान भी बना सकी।

सभा 1924 से प्राइवेट रूप से हिन्दी और अंग्रेजी की पाठशाला चलाने लगी। बाद में श्री बी.उदित के प्रयत्नों से अंग्रेजी विभाग को सरकारी ग्रांट मिलने लगी। सन् 1929 में यह पाठशाला हिन्दी गवर्नमेन्ट एडेड स्कूल में परिवर्तित हो गयी। सरकारी सहायता से अंग्रेजी पाठशाला चलने लगी। अंग्रेजी के बाद हिन्दी की पाठशाला भी चलती है। 1947 में सभा ने पाठशाला के लिए जमीन खरीद ली है। इस जमीन पर 9000 पौंड के व्यय से पाठशाला का अच्छा मकान बनाने का सभा का इरादा है। सभा को श्री एन. देवी प्रसाद से जमीन खरीदने को 100 पौंड का दान मिला है।

सभा का पुराना मकान जहां था उस जगह को डरबन की सिटी कौसिंल ने स्प्रिंगफिल्ड हाउसिंग स्कीम के लिये ले लेने को हुक्म निकाला। इससे सभा बड़ी विपदा में फंस गयी। ऐसे मुसीबत के वक्त स्प्रिंगफिल्ड हिन्दू सभा से बड़ी सहायता मिली। जिसने अपने स्कूल के मकान में प्लेटून योजना के अनुसार सभा को अपनी पाठशाला चला देने की सुविधा कर दी है। इसके लिये हिन्दू सभा को बड़ा आभार है।

पदाधिकारी और सहयोगी

सभा के वर्तमान सभापति श्री डी. यदुनंदन हैं।, मंत्री श्री आर. छोटई तथा कोषाध्यक्ष श्री एम. लक्षमन हैं। सभा के कार्यों में सदा सहयोग देने वालों के शुभ नाम ये हैं:- श्री बी. शिव प्रसाद, श्री डी. अवधबिहारी, श्री जे. भरतराम, श्री एम. दुखरन, श्री के. बेचू, श्री के. दुखी, स्व. श्री बी. आर. पेनी, स्व. श्री गंगादीन, स्व. श्री गंगाशरण, श्री बी. जगमन, श्री आर. फेंकू, श्री एम. राम पुकार आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य समाज, स्प्रिंगफिल्ड

स्थापना और कार्य

स्व. श्री बी. ईश्वर प्रसाद की प्रेरणा और उत्साह से इस संस्था की स्थापना 22 अगस्त 1941 को हुई। समाज की ओर से हिन्दी पाठशाला का उद्घाटन 28 सितम्बर 1941 के दिन हुआ। इसके लिये श्री सत्य देवजी के सभापतित्व में उत्सव हुआ था। समाज का अपना भवन न होने से स्थानीय नागरी प्रचारिणी सभा के भवन में एक रात्रि पाठशाला खोली गयी। जिसमें 150 विद्यार्थी दाखिल हुए। श्री ईश्वर प्रसाद तथा श्री गिरधारी अध्यापक कार्य कराते रहे। कई कारणों से 1942 के अन्त में यह पाठशाला बंद करनी पड़ी।

भवन

समाज का अपना भवन बनाने के लिए नवयुवकों ने नाट्य प्रयोग करके पैसा इकट्ठा किया। जिससे जमीन खरीद ली गयी। यहां पर समाज का भवन बनाने का प्रयत्न जारी है। स्प्रिंगफिल्ड में कॉर्पोरेशन की हाउसिंग स्कीम के अनुसार एक तरह के घरों में भारतीय लोग बसे हैं। जिससे प्रचार कार्य की बड़ी सुविधा है। भवन बनाने से पाठशाला और प्रचार का कार्य अच्छी तरह से चालू हो जावेगा।

पदाधिकारी व सहायक

इस समय समाज के सभापति श्री बी. राम प्रसाद, मंत्री श्री एम. बेचन तथा कोषाध्यक्ष श्री आई. देव चन्द हैं। समाज के सहायकों के शुभ नाम ये हैं:- श्री के. राम लगन, श्री एम. कोलम, श्री जी. लाला, श्री बी. मनबोध, श्री एस. एल. सिंह, श्री सत्य देवजी, श्री ए. ई. मेलिन्सन एस्टेट मैनेजर, डरबन म्यूनिसपैलिटी आदि। समाज के आधार स्तंभ श्री बी. ईश्वर प्रसाद का सन् 1948 के जुलाई में देहान्त हो गया जिससे समाज को बड़ी क्षति पहुंची है।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य स्त्री समाज, डरबन

इस स्त्री समाज की स्थापना ता. 24 जनवरी 1942 के दिन हुई। श्रीमती एस. एल. सिंह तथा श्रीमती ए.पी. सिंह के प्रयत्नों से यह कार्य हो सका। इस स्त्री समाज की तरफ से हर मास सत्संग होता है। दीपावली के अवसर पर अनाथों को भोजन और कपड़े बांटे जाते हैं। समय-समय पर चंदा इकट्ठा करके आवश्यक कार्यों में मदद पहुंचायी जाती है।

वर्तमान समय में सभानेत्री श्रीमती लालसिंह, मंत्राणी श्रीमती डी. रूपा नन्द तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती विज्जू हैं। समाज के कार्यों में निम्नलिखित देवियां दिलचस्पी लेती हैं:- श्रीमती राम कैलास, श्रीमती सत्यदेव, श्रीमती देवी सिंह, श्रीमती बी.परमेश्वर, श्रीमती पी. बी. सिंह, श्रीमती एच. बोध ाासिंह, श्रीमती मगनलाल, श्रीमती शिशुपाल, श्रीमती आत्मानन्द आदि।

आर्य संगीत मंडल, डरबन

स्थापना

विदेशों में भारतीय संस्कृति को कायम रखने में संगीतकार का बड़ा हाथ है। क्योंकि पाश्चात्य संगीत की अपेक्षा भारतीय लोगों में अपना संगीत ही प्रिय है। इस पर विशेष ध्यान देने के लिए सन् 1930 में श्री डी. रूपानन्द की अध्यक्षता में डरबन शहर में आर्य संगीत मंडल की स्थापना की गई। स्थापना में सहयोग देने वाले थे:- श्री पी. एच. नरसिंह, श्री जे. रामलखन, श्री डी. रामदत्त, श्री आर. रामशंकर आदि।

कार्य

विदेशों में भारतीय संस्कृति पूर्व भारतीय संगीत विद्या इस देश में बहुत उपेक्षित थी। आर्य संगीत मंडल ने अब इसका व्यापक प्रचार कर दिया है। जिसके फलस्वरूप अब जगह-जगह संगीत मंडल खुल गये हैं। यह मंडल समय-समय पर जाहिर कार्यों में नि:शुल्क सम्मिलित होकर जनता की सेवा करता रहा है। मंडल के द्वारा भारत से आने वाले प्रचारकों के द्वारा प्रचार कार्य भी होता रहा है। इसी तरह यह मंडल दीपावली, जन्माष्टमी, स्वातंत्रय दिन आदि के कार्यक्रम भी रखता रहा है। मंडल ने श्री डी. रूपानन्द तथा श्री डी. सिवबरन को संगीत सीखने के

लिए भारतवर्ष जाने में सहायता भी पहुंचायी थी। मंडल के द्वारा डरबन के ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन पर भी कई धार्मिक कार्यक्रम रखे गये हैं।

पदाधिकारी तथा सहायक

वर्तमान सभापति श्री जी. रामदत्त, मंत्री श्री जे. डी. योगानन्द तथा खजानची श्री डी. आर. दीपानन्द हैं। संगीत शिक्षक श्री जे. रामलखन तथा श्री पी. एच. नरसिंह हैं। इस मंडल को सहायता देने वाले सदस्यों के शुभ नाम ये हैं:- श्री एन. मदनजीत, श्री के. बी. सिंह, स्व. श्री एम. आर. वर्मा, श्री सुखराज छोटई, स्व. श्री आर.एस. प्रसाद आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य मित्र मंडल, सिडनम

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के उद्देश्य से सन् 1939 में आर्य मित्र मंडल सिडनम की स्थापना हुई। मंडल साप्ताहिक सत्संग, वादविवाद सभा आदि का कार्य करता रहा। युवकों को हिन्दी पढ़ाने के लिए एक हिन्दी वर्ग चालू किया। फिर लड़कों के लिये भी मांग बढ़ने पर सन् 1940 में हिन्दी पाठशाला चालू की गई। यह पाठशाला मंडल के सदस्यों के घर पर चलती थी। सन् 1942 में एसनडीन स्कूल का मकान हिन्दी पाठशाला के लिए मिला। तबसे विद्यार्थी बहुत बढ़ने लगे और 200 तक यह संख्या जा पहुंची। मंडल ने प्रचार को बढ़ाने के लिये 1944 में आर्य बालक मंडल, आर्य कन्या मंडल तथा सेवादल की भी स्थापना की। मंडल की तरफ से समय-समय पर उत्सव, यज्ञ, त्योहार आदि भी मनाये जाते रहे।

वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिये 1942 में मंडल ने 'टोर्च वेरर' नामक साप्ताहिक भी निकालना शुरू किया। शीघ्र ही इसने अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली। एक तरह से आर्य प्रतिनिधि सभा का यह मुख पत्र बन गया और आर्य संस्थाओं के विविध समाचार भी इसमें छपने लगे। युद्ध काल में कागज आदि के दाम बहुत बढ़ जाने से इसके आर्थिक प्रश्न को हल नहीं किया जा सका और इस उपयोगी मासिक को बन्द कर देना पड़ा।

आर्य भजन मंडल, डरबन

संगीत के द्वारा आर्य धर्म के प्रचार के उद्देश्य से आर्य भजन मंडल की स्थापना हुई है। सप्ताह में एक बार इसके सदस्य संगीत के अभ्यास के लिये इकट्ठे होते हैं। विविध स्थलों पर आवश्यकता होने पर मंडल के संगीत दल से सेवा दी जाती है। मंडल के सभापति श्री बी. शिवदीन हैं।

आर्य समाज, सिडनम

सिडनम के हिन्दुओं में जागृति लाने के लिये ता. 19 फरवरी 1929 के दिन श्री सत्य देवजी के उद्योग से इस समाज की स्थापना हुई थी। समाज वैदिक धर्म के प्रचार पर ध्यान देता रहा है। इसके लिये पं. तुलसीरामजी ने बड़े परिश्रम से तीन पुस्तिकाएं लिखीं। समाज ने उन्हें प्रकाशित करके बिना मूल्य प्रचारार्थ वितरित किया। पुस्तिकाओं के नाम ये हैं:- 1. अन्त्येष्टि संस्कार पर विचार, 2. सत्य सनातन धर्म क्या है, 3. वैदिक सन्ध्या और प्रार्थना। इस तरह पुस्तिकाएं प्रकाशित करके प्रचार करने वाली संस्थाएं बहुत कम हैं। समाज की तरफ से दीपावली, होली, जन्माष्टमी आदि त्योहार तथा

नामकरण, चूड़ाकर्म, अन्नप्राशन, विवाह, अन्त्येष्टि आदि संस्कार भी करवाये जाते हैं। समाज का साप्ताहिक सत्संग भी होता है। समाज की तरफ से एक हिन्दी पाठशाला भी चलती थी।

आर्य युवक मंडल, सीकाउलेक

स्थापना

सीकाउलेक, अमगेनी नदी पर स्थित है। यहां पर ईसाई और मुसलमानों का काफी प्रभाव रहा है। हिन्दुओं की भी अच्छी बस्ती है। हिन्दुओं का विष्णु मंदिर और वैदिक स्मारक सभा है। 1912 में आर्य युवक सभा, डरबन की शाखा के रूप में पं. वी.सी. नैनाराज ने एक पाठशाला स्थापित की। जो श्री गुरु स्वामी मोदली के घर पर चलती थी। फिर यह पाठशाला श्री नैनाराज के घर पर भी चलती रही पाठशाला के विद्यार्थियों के लिये आर्य बाल मित्र मंडल स्थापित हुआ। ता. 4-11-1929 को इसे आर्य युवक मंडल का रूप दे दिया गया। जिसके सभापति पं. नैनाराज और मंत्री श्री एस. नारायण थे।

कार्य

इस मंडल की तरफ से यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग आदि होने लगे। कई हिन्दू इस मंडल के बड़े विरोधी हो गये और कहने लगे कि जन्म के ब्राह्मण को ही यज्ञ कार्य करने का हक है। एक दिन तो वे लड़ाई करने पर भी उतारू हो गये। परन्तु

मंडल के कार्यकर्ताओं के शान्तिभाव से उन्हें लज्जित होना पड़ा। श्री नैनाराज के यहां से जाने पर भी श्री जे. मगनलाल इस मंडल का कार्य उत्साह से करने लगे। वे मंडल के मंत्री थे।

यहां के श्री के. पी. पीटर ने अपनी जमीन का टुकड़ा मंडल को बिना किराये के दिया । जिस पर एक छोटा सा मकान बनाकर मंडल अपनी हिन्दी पाठशाला चलाने लगा। मंडल एक रात्रि पाठशाला भी चलाता रहा। सन् 1933 में मंडल के कार्य में बड़ा विघ्न उपस्थित हुआ। श्री के.पी. पीटर ने अपनी जमीन मोहम्मद आकुनजी को बेच दी। मंडल के कार्यकर्ताओं ने बड़ी कोशिश की कि यह जमीन पाठशाला के लिए मिल जावे। श्री पीटर ने मंडल को जमीन देने का विश्वास दिया था। परन्तु उसका लेख न होने से जमीन का कब्जा लेने में निष्फलता हुई। इस प्रकार धन और परिश्रम बेकार हुआ। तभी से इस मंडल का कार्य ढीला पड़ गया है।

मंडल की पाठशाला समय-समय पर श्री एस. जे. नारायण, श्री जी. राम प्रसाद, श्री जे. शिवमंगल तथा श्री बी. रूपलाल के गृह पर भी चलती रहती थी।

हिन्दी प्रचारिणी सभा, अबोका

बारह वर्ष पूर्व अबोका में हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। सभा ने हिन्दी पाठशाला स्थापित कर कार्य शुरू किया। यहां वैदिक सिद्धांतों की भी शिक्षा दी जाती थी। इससे कई लोग सभा का विरोध करने लगे। यहां पर स्थित मंदिर समिति के प्रधान श्री ईश्वर विलास से सभा को मदद मिली। इससे विरोध शांत हो गया। सभा की तरफ से साप्ताहिक सत्संग भी होने लगा। सभा ने युवकों को शिक्षा देने के लिये एक रात्रि पाठशाला भी खोली। समय-समय पर सभा की तरफ से प्रचारकों के व्याख्यान भी होने लगे। स्त्री समाज और भजन मंडल भी कायम किये गये।

सभा के सहायक श्री सुन्दर प्रसादजी थे। उनके स्वर्गवास के बाद सभा का कार्य शिथिल हो गया और धीमे-धीमे प्रवृत्ति मन्द होने लगी। ऐसी अवस्था में सभा के मंत्री भी इस बस्ती को छोड़कर दूसरी जगह चले गये। जिससे काम एकदम रुक गया। हिन्दी पाठशाला भी अब बंद पड़ी है। जनता में रुचि है। यदि कार्य को पुनः चालू किया जाये तो उन्नति होने की सम्भावना है।

सभा के प्रधान श्री एम. ए. नायडू, मंत्री श्री काली प्रसाद तथा कोषाध्यक्ष श्री जे. शिवपाल थे।

अध्याय बारहवां

नाताल प्रान्त की शेष आर्य संस्थाएं

–+–

वेद धर्म सभा, पीटर मेरित्सबर्ग

स्थापना

पीटर मेरित्सबर्ग, नाताल प्रांत की राजधानी है। इस शहर में 10,000 भारतीय लोग बसते हैं। भारत से यहां पर आये हुए श्री गाही सिंह, श्री मक्खन सिंह, श्री भिखारी महाराज आदि ने इस शहर में 1978 में आर्य समाज की स्थापना की थी। यह आर्य समाज इस देश का प्रथम आर्य समाज था। इसी वर्ष स्वामी शंकरानन्दजी इस देश में आये। स्वामीजी प्रचार के लिए यहां पर भी पहुंचे। यह वह जमाना था जब लोग आर्य समाज के नाम से चिढ़ते थे, इससे स्वामीजी के प्रचार कार्य से बहुत जागृति आयी। स्वामीजी ने खुद वेद धर्म सभा के लिये जमीन खरीदी। उनसे प्रेरणा पाकर कई सज्जनों ने मिलकर यहां आर्य अनाथाश्रम भी खोला। जिसमें आज भी कई अनाथ पल रहे हैं।

सन् 1917 में इस शहर में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन भी हुआ था। जिसकी सफलता के लिए सभा ने बहुत उद्योग किया

था। इस सम्मेलन से प्रेरणा पाकर इस प्रदेश में आसपास कई हिन्दी पाठशालाएं चलने लगी थीं। सन् 1921 में 'हिन्दी प्रचारिणी सभा' की स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य हिन्दी पाठशाला के संचालन का था। संगठन को ध्यान में रखकर यह सभा 140 पौंड की अपनी जायदाद के साथ वेद धर्म सभा में मिल गयी है।

भवन का निर्माण

सन् 1934 में सभा ने चर्च स्ट्रीट में 1750 पौंड की जमीन खरीदी। बाद में इसका कुछ भाग अच्छे दामों पर बेच दिया। सभा के संचालकों ने बहुत परिश्रम करके 3000 पौंड के खर्च से एक विशाल भवन बनवाया। वेद धर्म सभा के इस भवन की आधार शिला श्रीमान कृपी मारी ने रखी थी। तथा भारतीय विद्वान सर राधाकृष्णन् के शुभ हस्तों से 7 अप्रैल 1939 को इसका उद्घाटन हुआ।

आर्य समाज की स्थापना और विलीनीकरण

डॉ. भगतराम सहगल यहां पर सन् 1929 में आये। उन्होंने बहुत सी संस्थाओं के नाम बदलकर उन्हें आर्य समाज नाम दे दिया था। इसी तरह उन्होंने वेद धर्म सभा का नाम भी बदल देना चाहा। पर सभा के सदस्य इस के लिए सहमत नहीं हुए। तब उन्होंने नये आर्य समाज की स्थापना के लिए प्रयत्न किया। श्री एम. सत्यपालजी के घर पर 'आर्य समाज पीटर मेरित्सबर्ग' की स्थापना की गयी। पं. आर. बी. महाराज इसके सभापति, श्री एस. महाराज तथा श्री आर. बनवारी संयुक्त मंत्री बने। इस समाज ने 1150 पौंड से जमीन और मकान खरीदे। परन्तु मेरित्सबर्ग के कार्य को सुसंगठित रखने

की इच्छा से यह आर्य समाज अपनी जायदाद के साथ सन् 1941 में वेद धर्म सभा में तिरोहित हो गया। यहां पर एक 'सत्य वर्धक सभा' भी बनी थी। जो सन् 1940 से 950 पौंड की जायदाद के साथ वेद धर्म सभा में मिल गयी।

हिन्दी पाठशाला और प्रचार के कार्य

वेद धर्म सभा द्वारा हिन्दी पाठशाला चल रही है। जिसमें 6 कक्षाएं लगती हैं और 220 विद्यार्थी पढ़ते हैं। इसके मुख्याध्यापक पं. जगमोहन 'विद्यारत्न' हैं। पंडितजी वैदिकसिद्धांतों का तथा हिन्दी का ऊंचा ज्ञान पाने भारतवर्ष गये थे। वहां लाहौर में रहकर उन्होंने विद्याध्ययन किया तथा प्रचार का अनुभव लिया था। इससे हिन्दी पाठशाला में एवं आर्य समाज के प्रचार में बहुत प्रगति हो सकी। पंडितजी के साथ अन्य 6 अध्यापक-अध्यापिकाएं पाठशाला में सहयोग दे रहे हैं। यह पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघ में सम्मिलित है। आज तक पाठशाला के लिए अध्यापक रूप से निम्न महानुभावों का सहयोग मिला है:- पं. राम प्रसाद पांडेय, पं. दशरथ पांडेय, पं. शिव नारायण पांडेय, श्री सरदवन सिंह, श्री पुष्कर नाथजी, श्री आर. बनवारी, श्री मैकूराम, श्री राम प्रसाद सिंह, पं. सदानन्द दुबे तथा बाबू रामवली सिंह।

वेद धर्म सभा की ओर से प्रति रविवार सत्संग होता है। संस्था ने स्त्रियों में प्रचार करने के उद्देश्य से 'हिन्दू स्त्री समाज' की स्थापना की है। सभा की तरफ से त्योहार मनाये जाते हैं। संस्था वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से होता है। सन् 1934 में संस्थान ने अपनी रजत जयन्ती मनायी थी। यहां पर भारत से आने वाले

प्रचारकों द्वारा प्रचार करने की व्यवस्था संस्था की ओर से होती है। हिन्दी पाठशाला को आर्थिक सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से संस्था प्रति वर्ष बाज़ार का आयोजन करती है। जिसके द्वारा 200–300 पौंड के करीब लाभ संस्था को होता है। अनाथों और गरीबों को सहायता देने का कार्य संस्था की तरफ से होता है। इसके लिए प्रति वर्ष 50 पौंड खर्च किये जाते हैं। इस समय संस्था के पास करीब 10 हजार पौंड की जमीन–जायदाद है।

पदाधिकारी तथा सहायक

सभा के वर्तमान प्रधान श्री देवानन्द सरवण हैं। संयुक्त मंत्री श्री रणछोड़ बनवारी तथा श्री बी. भूखन हैं। कोषाध्यक्ष श्री मोतीराम शिवपाल हैं। सभा को अपनी अमूल्य सेवाएं देने वाले कई सज्जन हैं, जिनके सहयोग से ही यह संस्था इतना कार्य कर सकी है। संस्था के कुछ सहयोगियों का स्वर्गवास हो गया है। उन स्र्गस्थ आत्माओं के शुभ नाम ये हैं:– स्व. श्री गाही सिंह, स्व. श्री ब्रह्मदेव, स्व. श्री बुलाकी, स्व. श्री हनुमान, स्व. श्री रामछवि महाराज, स्व. श्री एन. बी. नायक, स्व. डी. के सोनी, स्व. बी. रामचरण, स्व. श्री सुन्दर, स्व. श्री शिवचरण सिंह, स्व. श्री भगवानदीन, स्व. श्री मक्खन सिंह, स्व. श्री परागजी सोनी, स्व. सरवण, स्व. श्री झूठा पटेल, स्व. श्री हरिभाई मकनजी, स्व. श्री चार्ली नलैया।

वर्तमान समय में सभा को सहयोग देने वाले सज्जनों के शुभ नाम ये हैं:– श्री सोमचंद वातर, श्री दामजी वातर, श्री आर. बोध ासिंह, श्री एम.एन भूला, पं. आर. बी. महाराज, श्री एफ. सत्यपाल. बाबू रामवली सिंह, श्री पद्म सिंह, श्री ई. गुलदीप, श्री घेला दयाराम,

श्री प्रभु मकनजी, श्री आर. राज कुमार, श्री जी. जगवंत, श्री एम. रामदीन, श्री बी. शिवपाल, श्री जी. एस. महाराज, श्री ए.बी. मुदली, बाबू गणपत सिंह, श्री जे.बी. सिंह, श्री टी. रामखेलावन, श्री गोपाल दामजी सोनी, श्री बी. नगेसर, श्री जे.एम. सोनी, श्री कालीचरण, श्री हरिकिसुन घेला, श्री आर. बाबजी आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

हिन्दू स्त्री समाज, पीटर मेरित्सबर्ग

स्थापना

मेरित्सबर्ग की स्त्रियों में जागृति लाने के लिए तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए वेद धर्म सभा की प्रेरणा से इस हिन्दू स्त्री समाज की स्थापना ता. 4 अप्रैल 1943 को हुई। इसे स्थापित करने में श्री एफ. सत्यपाल, श्री आर. बी. महाराज तथा श्री ई. गुलदीप के प्रयत्न बहुत हैं। ता. 9 मई 1943 के दिन श्रीमती सुशीला बहन मणिलाल गांधी (महात्मा गांधीजी की पुत्रवधू) के शुभ हस्तों से बड़े समारोह के साथ इस संस्था का उद्घाटन हुआ। श्री सुशीला गांधी ने नारी जागृति पर बड़ा मार्मिक व्याख्यान दिया।

कार्य

स्त्री समाज की तरफ से वार्षिक धार्मिक विराट् सभा होती है। मासिक सत्संग होता है। स्त्रियों के लिए स्वाध्याय और वाद-विवाद के खास कार्यक्रम रखे जाते हैं। उत्सव और त्योहार भी मनाये जाते हैं। समाज का अपना एक सेविका दल भी है। इसकी तरफ से संस्कारों, उत्सवों आदि में सहयोग दिया जाता है। वेद धर्म सभा के वार्षिक बाज़ार में इस स्त्री समाज का बड़ा सहयोग रहता है। कपड़े सीने, चाय तथा अन्य भोजन सामग्री तैयार कर देने आदि का कार्य समाज की सदस्याएं करती हैं।

library.thearyasamaj.org

स्त्री समाज का मुख्य कार्य गरीब और दुखी अबलाओं को मदद पहुंचाना भी है। भगवान देवी नामक असहाय स्त्री को समाज की तरफ से श्री एम. सत्य पाल के परिवार ने डेढ़ वर्ष तक अपने घर पर रखा था। इसी तरह 6 अनाथ बच्चों को स्त्री समाज ने पाला था, फिर उन्हें आर्य अनाथाश्रम, डरबन में भेज दिया था। इस आश्रम की एक 16 वर्ष की लड़की की शादी स्त्री समाज ने अपने खर्च से करवा दी थी।

स्त्री समाज अन्य संस्थाओं के कार्यों में भी सहयोग देती रहती है। उन के लिये चन्दा भी एकत्रित कर देती है। भारतीय-अफ्रीकन दंगों के समय समाज ने पीड़ितों की सहायता के लिये 20 पौंड इकट्ठे किये थे। हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल को समाज ने 25 पौंड का चन्दा इकट्ठा करके दिया है।

वर्तमान समय में इस समाज की सभानेत्री श्रीमती आर.बी. महाराज हैं। मंत्राणी श्रीमती एस. जगमोहन तथा कोषाध्यक्ष श्रीमती डी. ब्रह्मदेव हैं। समाज के कार्यों में सेवाभाव से सहयोग देने वाली महिलाओं के शुभ नाम ये हैं:- श्रीमती डी. के. सोनी, श्रीमती डी. एस.वातर, श्रीमती ई. गुलदीप, श्रीमती बी. सुन्दर, श्रीमती टी. रामखेलावन, श्रीमती बी. रामचरण, श्रीमती एफ. सत्यपाल, श्रीमती बी. शिवपाल, श्रीमती आर. तिलक, श्रीमती एम. मैकू, श्रीमती पराग, कु. रामदुलारी, श्रीमती आर. राजकुमार, श्रीमती एस. डी. चेटी आदि।

प्लेसिसलेयर आर्य समाज

स्थापना

मेरित्सबर्ग के पास प्लेसिसलेयर एक ग्राम है। यहां हिन्दुओं की अच्छी बस्ती है। यहां पर ईसाई मिशनरियों की तरफ से अंग्रेजी पाठशाला चलती है। जिसमें 500 के करीब भारतीय बच्चे पढ़ते हैं। इस प्रदेश में कोई हिन्दू संस्था कार्य नहीं कर रही थी। यह बात श्री एम. सत्यपाल को बहुत अखरी। उन्होंने ता. 30 मार्च 1924 को स्थानीय लोगों का एक विराट सम्मेलन बुलाया। उसमें इस संस्था की स्थापना हुई । उस समय इसका नाम 'नागरी हितैषी सभा' रखा गया था। सन् 1929 मे डॉ. भगतराम सहगल प्रचार के लिये भारत से इस देश मेंआये वे इस ग्राम में पधारे। उन्होंने यहां अच्छा प्रचार कार्य किया। उन्हीं की सलाह से संस्था का नाम बदलकर 'प्लेसिसलेयर आर्य समाज' रखा गया।

कार्य

समाज में साप्ताहिक सत्संग होता है। उत्सव, त्योहार आदि मनाये जाते हैं। प्रचारकों द्वारा प्रचार समय-समय पर करवाया जाता है। अवलाओं और अनाथों की रक्षा का कार्य, समाज करता रहा है। इस समाज में माउन्ट पाट्रिज के लोग भी सम्मिलित थे। सन् 1934 में वहां के लोगों ने श्री गंगा विशुन की अगुवानी में पृथक् आर्य समाज की स्थापना की। तबसे श्री एस. दुखरन यहां के

समाज के सभापति हैं। श्री दुखरन एक जोशीले नवयुवक हैं। उन्होंने अपने साथ नवयुवकों की एक अच्छी सेना खड़ी कर ली है।

समाज का भवन तथा पाठशाला

समाज के कार्यकर्ताओं की अपना भवन बनाने की बड़ी अभिलाषा थी। इसके लिये समाज के अन्तर्गत भजन मंडल की स्थापना की गयी। इस मंडल के द्वारा श्री एम. सत्यपाल विरचित 'खूनी खंजर' नामक नाटक खेला गया। इससे अच्छी आमदनी हुयी और समाज के लिये भूमि खरीदी गयी। इस अवसर पर पं. जगमोहनजी ने यहां वैदिक कथा की। समाज की भूमि हो जाने पर भी मकान बनाने का प्रश्न जठिल था। पड़ोस के ईसाई मिशन ने हिन्दी पाठशाला के लिये अपना मकान पुनः देने से इन्कार कर दिया। इससे नवयुवकों ने कमर कसी। चन्दा इकट्ठा किया गया। समाज की ओर से बाजार लगाने की योजना हुई, जिससे अच्छी आमदनी हो सकी। इस तरह ता. 18 सितम्बर 1949 के दिन समाज के संस्थापक श्री एम. सत्यपाल द्वारा आर्य समाज भवन की आधार शिला रखी गयी। इस मौके पर काफी लोग उपस्थित हुए। पं. नरदेवजी वेदालंकार ने 'आर्य समाज' पर ओजस्वी व्याख्यान दिया। इस समय पं. जगमोहनजी, श्री एस. एल. सिंह, श्री सत्यदेवजी आदि के व्याख्यान हुए।

समाज की तरफ से हिन्दी पाठशाला चल रही है, जिसमें 130 बच्चे पढ़ रहे हैं। अध्यापक सेवा भाव से पढ़ाते हैं। यहां पं. जगमोहनजी ने रात्रि पाठशाला तथा प्रचारक श्रेणी कायम की है। पाठशाला के अध्यापक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की परीक्षाएं

दे रहे हैं। इस समय समाज के पास 3100 पौंड की सम्पत्ति है।

पदधिकारी तथा सहयोगी

समाज के सभापति श्री एस. दुखरन हैं। मंत्री श्री डी. बन्धु तथा कोषाध्यक्ष श्री जे. जी. बिशुन हैं। समाज की प्रगति में सदा सहयोग देने वाले सज्जनों के शुभ नाम ये हैं:- श्री एम. एन. भूला, म. के. परदेशी, म. डी. एस. वातर, म. एस. रामदीन, म. डी. छेदी, म. रामसुध मारी, म. एम. बन्धु, म. बी. हरखू, म. एस. राम प्रसाद, म. एल. बी. संगम, मं. गंगा विशुन, म. बी. भोला, म. राम जतन, कु. दुलारी, श्रीमती रामकिसुन, म. पी. आर. सिंह, म. लक्ष्मण सिंह, मंत्र सत्यभूषण, म. डी. आर. सिंह, पं. आर. बनवारी आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य स्त्री समाज, प्लेसिसलेयर

इस स्त्री समाज की स्थापना स्थानीय आर्य समाज के द्वारा ता. 13 सितम्बर 1942 को हुई। स्त्री समाज की स्थापना करने में पं. जगमोहनजी का परिश्रम बहुत है। उन्हीं के शुभ करकमलों से संस्था का उद्घाटन हुआ था।

इस गांव की स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा थी। उनमें किसी तरह की जागृति न थी। इससे समाज की संचालिकाएं तथा सदस्याएं खुद हिन्दी तथा संध्या हवन सीखने लगीं और सीखकर स्त्रियों में प्रचार करने लगीं। इससे साप्ताहिक सत्संग, त्योहार, उत्सव आदि के कार्य करना सरल हो गया। यह स्त्री समाज स्थानीय आर्य समाज के सहयोग में हिन्दी प्रचार आदि का कार्य करता है। जनवरी 1949 के अफ्रीकन-भारतीय दंगों में भी समाज ने पीड़ितों की मदद की।

समाज की सभानेत्री श्रीमती एस. दुखरन, मंत्राणी श्रीमती एच. अर्जुन और कु. चम्पावती तथा कोषाध्यक्ष कु. सविमति बंधु हैं। संस्था को निम्नलिखित बहनों से अच्छा सहयोग मिलता रहता है।:- श्रीमती परदेशी, श्रीमती आर. बन्धु, श्रीमती एच. बेचू, श्रीमती एस. रामदीन, श्रीमती एस. छेदी, श्रीमती एम. रामदीन, श्रीमती एफ. सत्यपाल, श्रीमती डी. बंधु, श्रीमती शिववरन आदि।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक विद्या प्रचारक सभा, पेंट्रिच

स्थापना

पेंट्रिच मेरित्सबर्ग की एक बस्ती है। जहां भारतीय लोग काफी संख्या में बसे हुए हैं। इनमें अधिकतर हिन्दी भाषी लोग हैं ता. 2 फरवरी 1928 के दिन यहां पर वैदिक विद्या प्रचारक सभा की स्थापना की गयी। जिसके लिये श्री रामबली सिंह, श्री बी. पूदन, श्री एस. पूदन तथा श्री टी. डी. सिवव्रत ने खूब मेहनत ली थी।

पाठशाला

यहां के बच्चों को हिन्दी की शिक्षा देने के लिये एक टीम के छोटे से मकान में पाठशाला चालू की गयी। प्रारम्भ में 25 विद्यार्थी प्रविष्ट हुए। इसके अध्यापक श्री लक्ष्मण सिंह थे। सभा ने एक अच्छा मकान बनाने का निश्चय किया। बाबू रामबली सिंह सभा के आधार स्तंभ हैं। उनके उद्योग से अच्छा चन्दा हो गया। सन् 1932 में सभा का अपना भवन तैयार हो गया। आज इस हिन्दी पाठशाला में 250 विद्यार्थी हैं। श्री एस. दुखरन प्रधानाध्यापक हैं। चौथी कक्षा तक पढ़ाई होती है। अब पाठशाला के लिये नये चार कमरे भी बन गये हैं।

कार्य

सभा की ओर से उत्सव और त्योहार मनाये जाते हैं।

साप्ताहिक सत्संग होता है। समय–समय पर प्रचारकों द्वारा प्रचार भी होता है। सभा के अधीन एक विद्यार्थी सभा है। जिसके द्वारा व्याख्यान की शिक्षा दी जाती है। नवयुवकों के लिये रात्रि पाठशाला भी है। जिसमें श्री आर. बनवारी सेवाभाव से पढ़ाते हैं। सभा के पास 3110 पौंड की जमीन–जायदाद है।

पदाधिकारी तथा सहायक

संस्था के सभापति श्री बाबू रामबली सिंह, मंत्री श्री विक्रम पूदन तथा कोषाध्यक्ष श्री रामधनी महावीर हैं। सभा को आगे बढ़ाने में निम्न महाशयों का सहयोग मिलता रहा हैः– श्री ई. गुलदीप, पं. आर. बी. महाराज. श्री जी. जगवंत, श्री हरि भूताल, श्री डी.के. सिंह, श्री बी. शिवपाल, श्री आर. महादेव, श्री बिहारी महाराज, श्री हरिप्रसाद, श्री प्रेमचन्द,श्रीमती विद्यावती रामनाथ, श्री जी. सुखालू आदि।

elibrary.thearyasamaj.org

आर्य समाज, माउन्ट पाट्रिज

स्थापना

इस संस्था की स्थापना ता. 4 दिसम्बर 1934 के दिन डरबन निवासी श्रीमान् एफ, रामलगन के द्वारा हुई थी। एक छोटी सी झोंपड़ी बनाकर उसमें 2 जून 1935 के दिन पं. आर. बी. महाराज द्वारा हिन्दी पाठशला का उद्घाटन हुआ। फिर तो स्थानीय लोगों की सहायता से 1940 में पाठशाला का मकान बन गया। यहां पांचवी कक्षा तक हिन्दी पाठशाला लगती है, जिसमें 125 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। यह पाठशाला हिन्दी शिक्षा संघ में सम्मिलित है।

पाठशाला

यहां के बच्चों की अंग्रेजी शिक्षा के लिये भी कोई इन्तजाम न था। इसलिये श्री गंगाविशुनजी की सहायता से सन् 1943 में अंग्रेजी पाठशाला चालू की गयी। श्री एस. बच्चाराम ने इसके लिये जमीन दान में दी। विद्यार्थियों की वृद्धि होने पर दूसरे कमरे भी बनवाये गये हैं। सरकार की तरफ से इस पाठशाला को ग्रांट मिलती है।

कार्य

आर्य समाज की तरफ से साप्ताहिक सत्संग होता है। धार्मिक त्योहार मनाये जाते हैं। समय-समय पर व्याख्यानों का प्रबंध किया जाता है। सन् 1939 में समाज ने तीन चार परिवारों को

ईसाई होने से बचाया। संस्था के पुरोहित और हिन्दी अध्यापक पं. ओ. शिवरतन हैं। इन्हें पं. आर. बी. महाराज ने यज्ञोपवीत देकर पुराहित बनाया। इससे हिन्दुओं में बड़ी खलबली मची। धमकियां भी दी गयी। परन्तु स्वामी भवानी दयालजी तथा पं. जगमोहनजी के उत्साह से यह कार्य सम्पन्न हुआ। स्वामीजी ने अन्य भी 24 आर्यों को यज्ञोपवीत धारण करवाया। पं.ओ. शिवरतन बड़े सेवाभाव से अध्यापक का कार्य कर रहे हैं। वे ही आर्य समाज के मंत्री भी हैं। श्री सीतारामजी गौरी प्रधान तथा श्री एस. बैजू कोषाध्यक्ष हैं समाज को मदद पहुंचाने वाले सज्जन ये हैं:- श्री गंगाविशुन, श्री आर. बी. महाराज, श्री डी.एस. वातर, श्री रामगरीब, श्री आई.बी. संगम, श्री एस. दुखरन, कु. सीरावती बैजू, कु. सरस्वती, कु. दिनेश चन्द्र आदि।

elibrary.thearyasamaj.com

आर्य नवयुवक सभा, रेइसतोर्प

स्थापना

नाताल की राजधानी मेरित्सबर्ग से तीन मील परे भारतीयों की एक छोटी सी बस्ती है जो रेइसतोर्प कहलाती है। यहां के भारतीय लोग प्राय: मजदूरी करके अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। सन् 1935 में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिये यहां के निवासियों ने 'रेइसतोर्प वैदिक सभा' की स्थापना की। बाद में सन् 1944 में इस संस्था का नाम बदलकर 'आर्य नवयुवक सभा' रखा।

पाठशाला

यहां बच्चों को अंग्रेजी और हिन्दी पढ़ाने के लिये कोई साधन न था। सन् 1935 में स्थानीय सिन्डिकेट ने सभा को एक टुकड़ा जमीन दान में दी। बाद में रिक्रियेशन क्लब ने भी कुछ जमीन दी। सभा के प्रधान श्रीमान बैजू ने अपना उदार हाथ बढ़ाया तथा पाठशाला के लिये जो मकान बने उसमें आधा खर्च देना मंजूर कर लिया। इससे कार्यकर्ताओं का उत्साह खूब बढ़ा। पाठशाला के मकान के लिये आधा खर्च प्रान्तीय शिक्षा विभाग की तरफ से मिला। श्री ए.ई. मानी ने फरनीचर आदि दिया। अगस्त 1945 में मकान का उद्घाटन हुआ। श्री डी. बैजू संस्था के प्राण हैं। उनके ही पुरुषार्थ से यह संस्था चल रही है। पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ गयी तो श्री बैजू ने और कमरे भी अपने खर्च से बनवा

दिये। उन्हीं के नाम से पाठशाला का नाम 'श्री बैजू इन्डियन स्कूल' रखा गया। सन् 1948 में पाठशाला के लिये और चार कमरे बनाये गये जिसके लिये श्री के.पी. महाराज ने आधा खर्च दिया है। पाठशाला में सबेरे अंग्रेजी की पढ़ाई होती है। शाम को 120 बच्चे हिन्दी शिक्षा पाते हैं। मद्रासी बच्चों को तमिल भाषा भी सिखायी जाती है। हिन्दी के अध्यापक श्री के. आर. सिंह और कु. सावित्री नन्कू हैं। श्री आर. ए. चेटी तमिल पढ़ाते हैं। इस सभा की तरफ से त्योहार उत्सव आदि समय-समय पर मनाये जाते हैं। सभा का अपना एक भजन मंडल भी है।

पदाधिकारी और सहयोगी

सभा के प्रधान श्री एच. रामधारी है। मंत्री श्री सुखराज ब्रिजलाल तथा कोषाध्यक्ष श्री एस. रामदीन हैं। संस्था को तन, मन, धन से सहयोग देने वालों के शुभ नाम ये हैं:- श्री ई. गुलदीप, श्री एस. बहादुर, श्री पड़ियाची, श्री बी. शिवनारायण, श्री एस. प्रताप आदि। इस समय संस्था के पास 5000 पौंड के करीब जमीन जायदाद है।

elibrary.thearyasamaj.org

वैदिक युवक सभा, विल्गेफोन्टीन

स्थापना

मेरित्सबर्ग के पास विल्गेफोंटीन में हिन्दुस्तानियों की नयी आबादी बसी है। यहां कारीगर, किसान और मजदूर भारतीय रहते हैं। इस बस्ती में ता. 10 अक्टूबर 1943 के दिन श्री डी. शिवव्रत ने स्थानीय निवासियों की मदद से 'वैदिकयुवक सभा' की स्थापना की। इसमे श्री एस.एस. पूरण तथा श्री के. सरुपराम रामसे से अच्छी मदद मिली।

कार्य

सभा ने अपने अन्तर्गत एक हिन्दी पाठशाला चालू की। जिसके लिये प्रथम श्री गजाधर से और बाद में श्री आर. शिवनन्दन की तरफ से सभा को मकान मिला। फिर तो सभा ने अपनी जमीन खरीद ली और नाटकों के अभिनय से मकान बनाने की कुछ पैसा भी जोड़ा। नाताल और ट्रांसवाल से 600 पौंड का चन्दा किया गया। 2000 पौंड का मकान बनाकर तैयार हो गया। जिसका उद्घाटन ता. 22 जनवरी 1950 के दिन हुआ। इसमें सभा के सदस्यों ने अपनी ऐच्छिक मजदूरी दी है। मकान बन जाने पर हिन्दी और अंग्रेजी पाठशाला नियमित चालू हो जावेगी। सभा की तरफ से त्योहार उत्सव आदि मनाये जाते हैं।

पदाधिकारी

सभा के संस्थापक श्री डी. शिवव्रत इसके प्रधान थे। वर्तमान समय में श्री लक्ष्मण भीखा सभापति निर्वाचित हुए हैं। मंत्री श्री एम. आर. दीपलाल है तथा कोषाध्यक्ष श्री एस. एस. पूरण हैं। सभा के कार्यों में सहयोग देने वाले सज्जन हैं:- श्री ई. गुलदीप, श्री आर. मारी, श्री आर, रतन सिंह, श्री आर. शिवनन, श्री बी. भीखा आदि।

आर्य समाज, लेडीस्मिथ

स्थापना

लेडीस्मिथ उत्तर नाताल प्रांत का एक मुख्य शहर है। जहां भारतीय लोग भी अच्छी संख्या में रहते हैं। यहां पर सन् 1916 में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। जिसके सभापति स्व. बाबू रघुनाथ सिंह तथा मंत्री स्व. बी.भोला थे। इसी संस्था के द्वारा सर्व प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन 1916 में हुआ था। जिसके लिए स्वामी भवानी दयालजी ने उद्योग किया था। सन् 1919 में स्वामी भवानी दयालजी तथा दूसरों की सलाह से इस संस्था का नाम बदलकर आर्य समाज, लेडीस्मिथ रखा गया।

कार्य

समाज प्रारम्भकाल में अच्छी प्रगति करता रहा। समाज भवन बनाने के लिये भूमि खरीदी गयी। इसी तरह से शहर की कौंसिल से आर्य समाज के अधीन एक श्मशान भूमि प्राप्त की

elibrary.thearyasamaj.org

गयी। जिसमें शवों को अग्निदाह देने की व्यवस्था की गयी है।

समाज के एक मुख्य कार्यकर्ता श्री विट्ठल लाला के उद्योग से सन् 1921 में यहां गुजराती-हिन्दी पाठशाला स्थापित की गयी। सन् 1925 में आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से इस शहर में द्वितीय वैदिक परिषद हुई। जिसके सभापति पं. भवानी दयालजी थे। स्व. बाबू रघुनाथ सिंह तथा स्थानीय आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के परिश्रम से परिषद बड़ी सफल हुई थी।

समाज के कार्यों में साप्ताहिक सत्संग, उत्सव और त्योहारों का मनाना तथा भारतवर्ष से आने वाले प्रचारक और विद्वानों द्वारा प्रचार कार्य करवाना आदि मुख्य हैं। पं. जगमोहनजी, स्व. श्री बेचू तथा पं. भवानी दयालजी ने यहां समय-समय पर पधारकर प्रचार कार्य में अच्छी मदद दी है।

पदाधिकारी तथा सहयोगी

समाज के वर्तमान सभापति श्री एल. शिवगुलाम हैं। मंत्री श्री आर. काली तथा कोषाध्यक्ष श्री डी. विट्ठल हैं। समाज को सहयोग देने वाले सज्जनों के शुभ नाम ये हैं:- श्री मुनी मंगल, श्री लाला परसोत्तम, श्री मगन जीवण, श्री एस. छोटई, श्री बी. विट्ठल आदि।

आर्य समाज, डेनहाउज़र

स्थापना

डेनहाउज़र उत्तरी नाताल का एक छोटा कस्बा है, यहां पर बसे हुए भारतीय लोग पुरानी रूढ़ि-परम्परा को मानने वाले थे। डॉ. भगत राम सहगल प्रचार करते हुए यहां पर सन् 1929 में पधारे। उनके प्रचार से आर्य समाज, डेनहाउज़र की स्थापना हुई। प्रारम्भ में पौराणिक पंडितों का काफी विरोध रहा पर बाद में कार्य सरल हो गया। श्री रामसुन्दर पाठक इस समाज के स्थापना काल से सभापति हैं और वे ही समाज के प्राण हैं। उनके प्रयत्नों से आज भी यह जीती जागती संस्था हे।

कार्य

समाज अपनी हिन्दी पाठशाला चलाती है। जिसमें हिन्दू बच्चे हिन्दी सीखते है।। साप्ताहिक सत्संग भी होता है। समाज के प्रचार का यह प्रभाव हुआ है कि यहां पर प्रायः सब विवाह वैदिक विधि से होते हैं। समाज की तरफ से समय-समय पर भारतवर्ष से आने वाले प्रचारकों द्वारा प्रचार कार्य होता है। पं. जगमोहनजी प्रचार के लिए यहां बार-बार आते रहते हैं।

समाज वेद मंदिर और हिन्दी पाठशाला का भवन बनाने के लिये प्रयत्नशील है। समाज के मंत्री श्री बलराज गुरदीन इसके लिये पूरी कोशिश कर रहे हैं। उसके बन जाने पर प्रचार कार्य सुविधा से हो सकेगा।

अध्याय तेरहवाँ

– + –

आर्य जीवन चरित्रावली

श्रीमान आर. बोधासिंह

नाताल में गन्ने की खेती एक प्रधान व्यवसाय है। यह व्यवसाय प्रधानतया गोरे लोगों के हाथ में है। इने-गिने ही भारतीय लोग हैं जिनके हाथ में यह व्यवसाय है। इनमें स्व. बोधासिंह परिवार मुख्य है। स्व. बोधासिंह गन्ने के मुख्य भारतीय कृषिकार थे। इस परिवार में श्रीमान राजदेव सिंह का जन्म 5 जनवरी 1895 में हुआ था। श्री राजदेव ने अंग्रेजी शिक्षा डरबन के हाई ग्रेड स्कूल में प्राप्त की।

श्री राजदेव सिंह अपने पिता के साथ अपने व्यवसाय में ध्यान देने लगे। उन्होंने अपने परिश्रम और कौशल से इसमें बहुत सफलता पायी और उस की वृद्धि की। इनके बड़े भाई श्री बासुदेव सिंह आर्य समाज की प्रवृत्ति में बहुत रस लेते थे। उनसे ही श्री राजदेव सिंह को भी इस प्रवृत्ति में दिलचस्पी हुई।

सन् 1940 में श्री आर. बोधासिंह आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। तबसे आज तक वे ही इस पद को सुशोभित कर रहे हैं। इनकी अध्यक्षत्व में सभा ने 1942 में वैदिक परिषद की थी। हिन्दी सम्मेलन तथा प्रथम आर्य युवक परिषद भी इनके ही

सभापतित्व में हुई है। सभा की भूमि का उत्सर्गोत्सव भी इनकी अध्यक्षता में हुआ एवं सभा के वर्तमान भवन का उद्घाटन भी इन्हीं के शुभ हस्तों से 4 फरवरी 1943 को हुआ था।

श्री आर. बोधासिंह के शुभ करकमलों से ता. 22 फरवरी 1944 को प्रथम बार 'ओ३म्' का झंडा सभा भवन पर फहराया गया। इस पवित्र अवसर पर इन्होंने वेदमंदिर बनाने के लिये दस हजार पौंड (लगभग 132000 रु.) के दान की घोषणा की और इस तरह आर्य लोगों की चिर अभिलाषा को पूर्ण करने की ओर पहला कदम उठाया। ता. 15 फरवरी 1950 के शुभ अवसर पर सभा के प्रधान श्री आर. बोधासिंह के शुभ हस्तों से इसकी आधार शिला रखी जावेगी। आशा है कि इनकी अध्यक्षता में प्रतिनिधि सभा की और भी अधिक उन्नति होगी।

श्रीमान सत्यदेव जी

नाताल में आर्य समाज के कार्य का आधार स्तम्भ कोई है तो श्री सत्यदेव जी हैं। इन्होंने आर्य समाज का कार्य जिन्दगी भर बड़ी लगर और बड़े उत्साह से किया है। सच्चे सेवक के रूप में वे कार्य कर रहे हैं। इस सेवा के पीछे बल है– भक्ति और श्रद्धा का। श्रीराम के जैसे हनुमान सेवक थे वैसे ही यहां आर्य समाज और दयानन्द के सच्चे सेवक श्री सत्यदेव जी हैं। आर्य समाज की सभी प्रवृत्तियों के पीछे इनका हाथ है; इनकी सेवा है और इनका परिश्रम है।

श्री सत्यदेव जी का जन्म 7 जुलाई 1889 के दिन वेरुलम में

हुआ था। मिशन स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा 1 वर्ष तक ही पा सके। इनके बचपन में पिता जी का अवसान हो जाने से इन्हें नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही नौकरी की चिन्ता करनी पड़ी वे यहां के कार्पोरेशन में काम करने लगे और आज 52 वर्ष से इसी में नौकरी कर रहे हैं।

स्वामी शंकरानन्द जी के प्रभाव से नवयुवक सत्यदेव जी का झुकाव आर्य समाज की तरफ हुआ। स्वामी जी के सत्संग का प्रभाव इन पर खूब पड़ा है। उन्होंने सेवा का जो पाठ श्री सत्यदेव जी को पढ़ाया आज भी वे उसे भूले नहीं हैं और सेवा करते हुए किसी काम को छोटा नहीं समझते न सेवा के कार्य में अभिमान लेते हैं। ये स्वामी जी के सभी कार्यों और प्रवृत्तियों में उत्साह से भाग लेते रहे।

मातृभाषा हिन्दी और वैदिक धर्म प्रचार का इतना उत्साह था कि सन् 1910 में अपने घर पर ही रात्रि पाठशाला प्रारम्भ कर दी और अपनी लघु आजीविका में से विद्यार्थियों को स्लेट, पुस्तक आदि मुफ्त देते रहे। युवकों में भी आर्य संस्कृति का प्रचार करने लगे और जोशीले नवयुवकों को इकट्ठा करके ता. 19 अप्रैल 1912 के दिन आर्य युवक सभा की स्थापना की। श्री सत्यदेव जी ही इसके सभापति बने। इनके नेतृत्व में सभा ने बड़ी तरक्की की। आर्य अनाथाश्रम का संचालन यही सभा कर रही है। एक अनाथ भिखमंगे की दुर्दशा श्री सत्यदेव जी देख न सके। उसके रात को टिकने का कोई स्थान न था और उसने शौचालय का आश्रय लिया। इस दृश्य से इनका हृदय द्रवीभूत हो गया और इनके संकल्प से आर्य अनाथाश्रम की स्थापना हुई। आर्य युवक सभा के 27 वर्ष

तक सभापति रहे।

सन् 1925 में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी मनाने का प्रस्ताव श्री सत्यदेव जी ने ही रखा। इनके ही प्रयत्नों से शताब्दी उत्सव सफल हुआ और इसी उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल की स्थापना हुई। प्रतिनिधि सभा के दूसरे वर्ष में मंत्री निर्वाचित हुए और तब से आज तक 24 वर्ष पर्यन्त सभा के मंत्रीत्व का कार्य संभाल रहे हैं। इनके मंत्रीत्व में ही प्रतिनिधि सभा की सारी उन्नति हुई है। सभा ने हिन्दुओं की जागृति के लिये उनमें संस्कृति और धर्म के प्रचार के लिये सर्वाधिक प्रयत्न किया है और उसके पीछे श्री सत्यदेव जी का हाथ रहा है। उसके लिये ये विविध योजनाएं करते, उनके लिये अविरत परिश्रम करते और उसे सफल बनाते। प्रतिनिधि सभा ने इतनी परिषदें और इतने सम्मेलन किये हैं उसका श्रेय श्री सत्यदेव जी को ही है। वे सभा के निर्वाचित ट्रस्टी भी हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य अनाथाश्रम के लिये श्री सत्यदेव जी ने अपना जीवन दे दिया है। इनके स्थापना काल से ये सेवा करते आ रहे हैं। इनमें कार्य के प्रति निष्ठा है, विचार में स्थिरता है और धर्म पर दृढ़ विश्वास है। इन्हीं गुणों ने उन्हें सच्चा सेवक बनाया है।

श्री सुखराज छोटई बी.ए.

उच्च अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीय युवकों में से बहुत कम व्यक्ति अपने समाज और जाति की सेवा में लगे हुए हैं। ऐसे युवकों में श्री सुखराज छोटई का नाम अग्रगण्य है। इनका जन्म क्लेरेस्टेट

में 25 जनवरी 1912 में एक निर्धन परिवार में हुआ। बालक सुखराज ने सातवें दर्जे तक अंग्रेजी शिक्षा पायी। उस के बाद वे ऊंची शिक्षा तुरन्त नहीं पा सके। क्योंकि आर्थिक विषम स्थिति में इन्हें नौकरी की फिक्र करनी पड़ी और वे सन् 1927 में अध्यापक हो गये परन्तु उनकी विद्या पाने की अदम्य इच्छा थी। वे स्वयंमेव अध्ययन करने लगे और नौकरी करते हुए एक के बाद एक परीक्षा में उत्तीर्ण होकर 1947 में बी.ए. उत्तीर्ण हुए। इस प्रकार श्री सुखराज ने स्वयं परिश्रम और अध्ययन करके अपने जीवन को गढा है। प्रारम्भ से ही इन्हें हिन्दू धर्म और वैदिक सिद्धान्तों पर रुचि थी इससे वे अंग्रेजी में प्राप्त होने वाली ऐसी पुस्तकों को भी पढ़ने लगे और स्वाध्याय से वैदिक सिद्धान्तों का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

श्री सुखराज छोटई सर्व प्रथम क्लेरबुड में अध्यापक का कार्य करने लगे। तब से आज तक 23 वर्षो से इसी क्षेत्र में हैं। इस समय वे एसनडीन रोड इन्डियन स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं। अध्यापक का कार्य करते हुए वे सार्वजनिक कार्य भी करने लगे। जब वे लेडीस्मिथ में थे तो सन् 1932 से 1937 तक वहां के आर्य समाज के मंत्री थे। इस काल में उत्तरी नाताल में श्री सुखराज ने अच्छा कार्य किया। वहां प्रो. यशपाल के कार्यक्रम की जिम्मेदारी भी इन्हीं पर रही; जिसे सफलता से निभाया।

लेडीस्मिथ में इन्होंने 1935 में यंग हिन्दू कलचरल सर्विस सोसायटी की स्थापना की और वे इसके सभापति रहे। लेडीस्मिथ से श्री छोटई जहां-जहां अपनी नौकरी के लिये गये वहां-वहां सार्वजनिक जीवन में भाग लेते रहे और विविध आर्य संस्थाओं में

सक्रिय कार्य करते रहे।

श्री सुखराज कुल सात वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक मंत्री रहे हैं और आज इस पद को बड़ी योग्यता पूर्वक निभा रहे हैं। सभा के कार्यों को सफल करने में बड़े उद्यत रहते हैं। हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल के सथापना काल से श्री सुखराज इसके मंत्री हैं और बड़े उत्साह से कार्य कर रहे हैं। इन की सेवा से ही संघ ने थोड़े काल में अच्छी प्रगति कर ली है।

श्री सुखराज छोटई की अंग्रेजी योग्यता ऊंचे दर्जे की है। इस पुस्तक 'दक्षिण अफ्रीका में धर्मोदय' का अंग्रेजी अनुवाद इनकी विद्वता का परिचायक है। आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मेलनों और परिषदों में अंग्रेजी का कार्य इनके जिम्मे ही रहता है। धर्म, साहित्य आदि के विषयों को हिन्दी से उच्च अंग्रेजी मे अनुवाद करने की कला में ये निपुण हो गये हैं। श्री सुखराज छोटई जैसे युवक किसी भी संस्था के लिये गौरव स्वरूप हो सकते हैं।

श्रीमान् एस.एल.सिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख्य कार्यकर्ताओं में से एक श्री एस.एल. सिंह हैं। ये उत्साही और निडर कार्यकर्ता हैं। इनके दर्शन से ही मालूम होता है कि छात्र धर्म का खून इनकी रगों में दौड़ रहा है।

श्री एस. एल. सिंह का जन्म डरबन में 11 जनवरी 1896 को हुआ। डरबन के स्कूल में इन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पायी। पं.

अम्बाराम से हिन्दी की शिक्षा प्राप्त की। फिर स्वयं अध्ययन से आगे बढ़ने लगे। 1916 से ये सार्वजनिक जीवन में भाग लेने लगे। 1918 में आर्य युवक सभा के मंत्री बने। इस सभा द्वारा आर्य अनाथाश्रम स्थापित होने पर श्री एस.एल. सिंह उसके मंत्री और खजानची बने। आश्रम की प्रगति में इनका बड़ा हाथ रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा के कई वर्ष प्रधान भी रहे। गत 20 वर्ष से सभा के कोष निरीक्षक हैं। प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सम्मेलनों और परिषदों में स्वागताध्यक्ष रूप से सदा सेवा देते आये हैं।

अन्य अनेक संस्थाओं में श्री एस. एल. सिंह सक्रिय हिस्सा ले रहे हैं। द. अ. हिन्दू महासभा की प्रधान समिति के अध्यक्ष रहे हैं। हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल के उप सभापति हैं। डरबन हिन्दी पाठशाला के अध्यक्ष है।

श्रीमान एस.एल. सिंह अंग्रेजी के ओजस्वी वक्ता हैं। भारतीयों की उन्नति में तथा उन्हें गौरव देने के प्रयत्नों में सदा लगे रहते हैं। ऐसे जोशीले नेता को पाकर आर्य जनता गौरव अनुभव करती है।

श्रीमान एम. मुन्नू

श्री एम. मुन्नू का जन्म 19 सितम्बर 1883 के दिन हुआ। एम. जी. आर. इण्डियन स्कूल में शिक्षा पायी। सन् 1912 में स्वामी श्री शंकरानन्दजी के संसर्ग में आये और तबसे आर्य समाजी बने और कई संस्थाओं में सक्रिय हिस्सा लेने लगे। डॉ. भगतराम सहगल सन् 1927 में प्रचार करने यहां आये। उनको ठहराने का

प्रबंध श्री एम. मुन्नू ने बड़ी उदारता पूर्वक किया। डॉक्टर जी से सारे परिवार ने बड़ा लाभ भी उठाया।

श्री एम. मुन्नू आर्य समाज, डरबन के कई वर्ष तक कोषाध्यक्ष रहे आर्य प्रतिनिधि सभा के भी मुख्य कार्यकर्ता हैं। सन् 1930 से सभा के कोषाध्यक्ष हैं और बड़ी योग्यता पूर्वक इस पद को संभाले हुए हैं। आर्य युवक सभा के कोष निरीक्षक भी हैं। इसी तरह डरबन हिन्दी पाठशाला के व्यवस्थापक हैं। पाठशाला का प्रबंध इनके ही हाथ में है।

श्री एम. मुन्नू का परिवार बड़ा सुसंस्कृत है। उनकी पुत्री नारायणी ने हिन्दी की अच्छी शिक्षा पायी है। वे स्त्री समाज की मंत्राणी थी। इनका विवाह मेरित्सबर्ग के आर्य विद्वान् पं. आर. बी. महाराज से हुआ है। अब वे वहां रहकर समाज सेवा का कार्य करती हैं तथा मेरित्सबर्ग हिन्दू स्त्री समाज की सभानेत्री रही हैं।

श्री मुन्नूकी पुत्रवधू श्रीमती इन्द्र देवी देवीसिंह भी महिलाओं की उन्नति में खूब रस लेती हैं। वे ओवरपोर्ट हिन्दू स्त्री समाज की सभानेत्री हैं। इस विदुषी देवी ने अपने घर पर निःशुल्क हिन्दी पाठशाला स्थापित की है। जो हिन्दी शिक्षा संघ में सम्मिलित हैं। श्री मुन्नू परिवार के अन्य सदस्य भी बड़ी लगन से आर्य समाज के कार्यों को कर रहे हैं।

पं. आर.बी. महाराज

नाताल प्रांत की राजधानी पीटरमेरित्सबर्ग के गणमान्य आर्य सज्जनों में से एक पं. आर.बी. महाराज हैं। पंडित जी आर्य सिद्धान्तों

के ज्ञाता और हिन्दी के विद्वान् हैं। पंडितजी का जन्म 5 नवम्बर 1894 में हुआ था। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ पं. शिव नारायण पांडे से हिन्दी की भी उच्च शिक्षा प्राप्त की। पं. आर. बी. महाराज व्यापारी क्षेत्र में कार्य करने लगे। प्रारम्भ में वे व्यापारियों के बही खाते लिखते थे। बाद में व्यापार वाणिज्य में बहुत अनुभव प्राप्त कर लिया और जमीन जायदाद के एजेन्ट और बीमा कम्पनियों के एजेन्ट के रूप में कार्य करने लगे। इसमें इन्हें काफी सफलता प्राप्त हुई।

स्वामी मंगलानन्द जी पुरी के व्याख्यानों से प्रभावित हो पं. आर. बी. महाराज सार्वजनिक क्षेत्र में भी कार्य करने लगे। पंडित जी का कार्यक्षेत्र बहुत विशाल रहा है। दर्जनों संस्थाओं में उन्होंने बड़े पदों पर रहकर सेवा कार्य किया है। इस तरह पंडित जी मेरित्सबर्ग के सार्वजनिक जीवन के प्रधान अंग बने रहे हैं। सन् 1917 में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे स्वागत मंत्री थे। हिन्दी राष्ट्रीय पाठशाला तथा श्री विष्णु टेम्पल के मंत्री रहे। 1929 में मेरित्सबर्ग के आर्य समाज की स्थापना में पंडित जी का बड़ा हाथ रहा और वे उसके 12 वर्षों तक प्रधान रहे। इनके प्रयत्नों से हिन्दू यूनाईटेड सर्विस लीग की स्थापना हुई। इसके भी 4 वर्ष तक सभापति रहे।

सन् 1926 में मेरित्सबर्ग में हुई तीसरी वैदिक परिषद में पंडित जी प्रधान थे। 1930 में आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल के प्रधान निर्वाचित हुए थे। आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से मेरित्सबर्ग जेल में 10 वर्ष तक जाकर धर्मोपदेश करते रहे। इसी तरह दि ग्रे

हॉस्पिटल और मेंटल हॉस्पिटल में भी प्रचारक बनकर जाते रहे। इस समय प्रतिनिधि सभा के ट्रस्टी हैं। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा के मेरित्सबर्ग केन्द्र के व्यवस्थापक हैं। इनके अलावा वैदिक विद्या प्रचारक सभा, पेन्ट्रिच, सरस्वती संगीत मंडल, माउन्ट पाट्रिज आर्य समाज, वेद धर्म सभा, आर्य नवयुवक सभा आदि कई संस्थाओं में अनेक प्रकार से सेवा देते रहे है।। पंडित जी का जीवन आर्य समाज के क्षेत्र में आदर्श रहा है।

पं. आर.बी. महाराज की पत्नी श्रीमती नारायणी देवी भी सामाजिक कार्यों में अच्छा भाग लेती हैं। वे हिन्दू स्त्री समाज, पीटरमेरित्सबर्ग की सभानेत्री कई वर्ष तक रही हैं।

श्रीमान बी.एम. पटेल

श्रीमान भाई लाल मथुरभाई पटेल का जन्म बड़ौदा के पास धर्मज ग्राम में ता. 5 मई 1887 को हुआ था। उन्होंने पेटलाद हाईस्कूल में शिक्षा पायी थी। श्री भाईलाल का विवाह श्रीमती झवेरबहन पटेल के साथ हुआ। ता. 10 दिसम्बर 1903 में वे इस देश में अपना भाग्य आजमाने आये। पहले मेरित्सबर्ग में, फिर डरबन में आप व्यापार करने लगे। अपने परिश्रम और बुद्धितत्ता से श्री बी.एम. पटेल ने अच्छा धनोपार्जन किया। वे यहां के प्रमुख धनपतियों में से एक हैं।

श्री पटेल में शुरू से ही धार्मिक संस्कार पड़े हुए थे। इसी वजह से उन्हीं ने अपनी जिन्दगी में धार्मिक और सामाजिक कार्यों में

बड़ा भाग लिया है। जब से भाई परमानन्दजी इस देश में आये तब से आज तक वे सार्वजनिक कार्य में महत्वपूर्ण हिस्सा ले रहे हैं। भाई परमानन्द जी के लिये स्थापित मेरित्सबर्ग की स्वागत समिति के वे मंत्री थे।

श्री बी. एम. पटेल एम. के. गांधी पुस्तकालय और पारसी रुस्तमजी हॉल कमेटी के वर्षों तक मंत्री रहे हैं। इस काल में उन्होंने पुस्तकालय के लिये धार्मिक पुस्तकों के संग्रह के लिये, खासकर वेद तथा उपनिषद सम्बंधी साहित्य इकट्ठा करने के लिये बड़ा प्रयत्न किया। सन् 1934 में पं. हरिशंकर विद्यार्थी इनकी ही प्रेरणा से यहां प्रचार के लिये आये। आचार्य श्री रामदेवजी को यहां बुलाने के लिये भी इन्होंने बहुत प्रयत्न किया था। परन्तु आचार्य जी के अनुकूलता न होने से नहीं आ सके थे।

श्री बी.एम. पटेल आर्य समाज को हिन्दू जाति का रक्षक समझते रहे हैं। इसी से उन्होंने समाज के कामों में बहुत दिलचस्पी बतलायी है। आर्य प्रतिनिधि सभा के वे प्रधान भी निर्वाचित हो चुके हैं तथा इस समय इस के ट्रस्टी हैं। सभा के आर्थिक संकट के काल में उन्होंने सभा को बड़ी सहायता पहुंचायी है। आर्य युवक सभा के भी वे संरक्षक हैं। इस सभा ने जब आर्य अनाथ आश्रम की स्थापना की तभी से श्री पटेल उसके सहायक रहे हैं। आश्रम के मकान बनाने केलिये अर्थ संग्रह में उन्होंने बड़ा प्रयत्न किया है। अनाथाश्रम के लिये आर्य युवक सभा ने साढे सत्रह बीघा नयी जमीन खरीदी है। उसके ऋण से सभा को मुक्त करने के लिये सदा प्रयत्नशील रहते हैं। उन्होंने भी आश्रम को 105 पौंड दान में दिये। श्री बी.एम.

पटेल की सहायता आश्रम के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगी।

श्री बी. एम. पटेल अन्य अनेक संस्थाओं में महत्व के पदों पर कार्य करते रहे हैं। वे कई वर्षों तक द.अ. हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। बम्बई प्रेसीडेन्सी हिन्दू एसोसियेशन, हिन्दू श्मशान फन्ड आदि अनेक सभा सोसायटी में भी प्रधान बने हैं। आपकी पत्नी श्रीमती झवेरबहन भी सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने वाली प्रमुख भारतीय स्त्री हैं। वे गुजराती हिन्दू महिला मंडल, डरबन की अध्यक्षा हैं। उनके बड़े पुत्र श्री जयंती लाल वकालत की परीक्षा पास कर चुके हैं। वे भी अपने सुयोग्य पिता के पदचिन्हों पर चलकर आर्य समाज और हिन्दू जाति के उत्थान में भाग लेंगे ऐसी आशा है।

ता. 6 मार्च 1950 को स्वदेश गमन करते हुए श्री बी.एम. पटेल का स्वर्गवास हो गया आर्य समाज का एक स्तम्भ गिर पड़ा है।

श्रीमान् बी. ए. मेघराज

श्री मेघराज का जन्म 29 जुलाई 1873 को मोरिशस द्वीप में हुआ था। 6 वर्ष की उम्र में इनका परिवार यहां चला आया और यहीं पर शिक्षा पायी। प्रो. भाई परमानन्दजी के स्वागत के लिये बनी समिति के संयुक्त मंत्री थे। बाद में श्री मेघराज कई संस्थाओं में कार्य करते रहे। हिन्दू सुधार सभा के उपसभापति रहे। ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव समिति के खजानची थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के एक वर्ष प्रधान रहे। आज उसके एक ट्रस्टी हैं।

श्रीमान एफ. सत्यपाल

श्री एफ. सत्यपाल मेरित्सबर्ग के निवासी हैं। नाताल प्रांत की इस राजधानी में आपको जो दो चार मुख्य भारतीयों के नाम सुनने को मिलेंगे उनमें एक श्री एफ. सत्यपाल अवश्य होंगे। इनके भवन पर पहुंचते ही आपको हाथ जोड़े हुए नाटे कद की एक हंसमुखी उम्र में बूढ़ी पर उत्साह में युवा तेजस्वी मूर्ति मिलेगी जो आपके आतिथ्य के लिये बड़ी उत्सुक होगी तो आप समझ जाइये किये ही घर के मेजमान श्री सत्यपाल जी हैं।

श्री एफ.सत्यपाल का जन्म डरबन में सन् 1893 में हुआ था। आप ने मिशन स्कूल, केटी मेनर में शिक्षा पायी थी। श्री स्वामी मंगलानन्द जी पुरी के व्याख्यानों को सुनकर युवक सत्यपाल की रुचि आर्य समाज की ओर बढ़ गयी। तब उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का अभ्यास किया और वे विभिन्न संस्थाओं में अपनी सेवाएं देने लगे। वे आर्य युवक सभा के स्थापनाकाल के सदस्य रहे हैं। स्वपरिश्रम से अध्ययन करके सत्यपाल जी ने हिन्दी की अच्छी योग्यता प्राप्त करके ली। फिर वे हिन्दी में गीत और नाटक भी लिखने लगे। अनेक संस्थाओं ने इनके नाटकों के अभिनय करके धनोपार्जन किया है। इनके सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय गीत भी खूब लोकप्रिय हुए हैं।

सन् 1923 में श्री सत्यपाल जी मेरित्सबर्ग चले गये। तब से वहीं हैं। वहां पहुंच कर वे यहां के सार्वजनिक कार्यों में जोर शोर से

भाग लेने लगे। राजनीतिक क्षेत्र में भी बहुत कार्य किया। मेरित्सबर्ग की प्राय: सभी संस्थाओं से इनका सम्बन्ध है। बड़े पदों की जिम्मेदारी संभालते रहे हैं। कई संस्थाएं इन के सदुद्योग और सहयोग से स्थापित हुई हैं।

सन् 1925में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी समिति के मंत्री रहे। मेरित्सबर्ग की विद्या प्रचारिणी सभा की सन् 1923 में स्थापना की। इसके प्रधान और ट्रस्टी रहे। सन् 1924 में प्लेसिसलेयर में नागरी हितैषी सभा (वर्तमान नाम- आर्य समाज, प्लेसिसलेयर) की स्थापना की। इसके संरक्षक, ट्रस्टी और उपप्रधान हैं।

मेरित्सबर्ग मे आर्य अनाथाश्रम चलाने वाली आर्य वेनिवोलेंट सोसायटी के भी उपसभापति हैं। मेरित्सबर्ग आर्य समाज के संस्थापक सदस्य थे और उसके खजानची एवं ट्रस्टी रहे। वेद धर्म सभा के प्रधान भी निर्वाचित हुए थे। इस समय कई वर्षो से उसके उपसभापति है। आर्य प्रतिनिधि सभा, नाताल के एक वर्ष तक मंत्री रहे। इनके अलावा श्री सत्यपाल जी हिन्दी शिक्षा संघ, नाताल, युवक आर्य समाज, दीपावली चीयर सोसायटी, आर्य भजन मंडल, डरबन, मोहिनी ऑरकेस्ट्रा आदि कई संस्थाओं के विभिन्न पदों पर कायम हैं।

श्रीमती सत्यपाल भी समाज सेवा के विभिन्न कार्यो में लगी हुई हैं। मेरित्सबर्ग के आर्य अनाथाश्रम के देखभाल का कार्य वे ही बड़ी तत्परता से करती हैं। अफ्रीकन-भारतीय दंगों में तथा बाढ़ के समय पीड़ित लोगों को बड़ी मदद पहुंचायी है। श्रीमती सत्यपाल का स्वभाव मधुर और सेवाभावी होने से उन का घर मेरित्सबर्ग में पहुंचने वाले आर्य सज्जनों के लिये और खासकर भारत से आने

वाले प्रचारकों के लिये अतिथिशाला का काम देता रहा है। श्री एफ. सत्यपाल के भाई स्व. एफ. रामलगन भी आर्य समाज की प्रवृत्तियों में अच्छा भाग लेते रहते थे।

श्रीयुत् बी. गोविन्द

श्रीयुत् बी. गोविन्द का जन्म सन् 1892 में क्लैरस्टेट में हुआ था। परिवार की आर्थिक अवस्था अच्छी न होने से बचपन में कई कठिनायां झेलनी पड़ीं। विद्याध्ययन ठीक तरह से नहीं हो सका। श्री गोविंद अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री बी. बेचू की भवन निर्माण में सहायता देने लगे और धीमे-धीमे उसमें प्रवीण हो गये। आज इस क्षेत्र में इन्होंने अच्छा नाम पैदा किया है।

अपने भाई के साथ श्री गोविन्द सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करने लगे थे। धार्मिक व सामाजिक एवं विद्या विषयक कार्यों में सहयोग देने लगे। रायकोपिस विद्याप्रचारिणी सभा के संस्थापक सदस्य हैं। सन् 1921 से आर्य युवक सभा में सेवा दे रहे हैं। गत दो वर्षों से इस सभा के सभापति हैं। आर्य समाज वेस्टविल के कार्यों में रस लेते रहे और इस समय इसके प्रधान हैं। वेस्टविल में महिला आर्य समाज की स्थापना मे श्री गोविंद का बड़ा उद्योग रहा है। अन्य अनेक संस्थाओं से इनका सम्बन्ध है और आज विविध क्षेत्रों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

श्रीमान ई. गुलदीप

श्री ई. गुलदीप मेरित्सबर्ग निवासी हैं वहां पर व्यवसाय में अच्छा नाम कमाया है। इसके साथ ही सार्वजनिक जीवन में काफी रस ले रहे हैं। इनके अध्यक्षत्व में सभा ने बहुत उन्नति की है। जमीन खरीद कर सभा भवन बन गया है। इसके लिये इन्होंने बड़ा श्रम उठाया है। अन्य कई आर्य संस्थाओं में भी अपनी सेवाएं देते रहे हैं। कई संस्थाओं के संरक्षक, ट्रस्टी और सदस्य हैं। कई पाठशालाओं के मैनेजन भी हैं।

पं. आर. बनवारी

पं. आर. बनवारी का जन्म मेरित्सबर्ग में 10जनवरी 1904 में हुआ था। इन्होंने हाई ग्रेड गवर्नमेन्ट स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा पायी थी। साथ ही हिन्दी राष्ट्रीय पाठशाला में हिन्दी का ज्ञान भी पाते रहे। इसमें अपने ज्येष्ठ भ्राता पं. आर. बी. महाराज से इन्हें बड़ी मदद मिली है। बाद में इन्होंने अंग्रेजी में अध्ययन की योग्यता प्राप्त कर ली है।

शिक्षा की समाप्ति के बाद पं. बनवारी हिन्दी अध्यापक का कार्य कई वर्ष तक करते रहे। बाद में अंग्रेजी के अध्यापक की नौकरी ले ली। सन् 1933 में ग्लेंको के स्कूल में रहे। वहां से बदली लेने पर थोनेविल के स्कूल में मुख्याध्यापक बन गये। इन दिनों

सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करते रहे। यज्ञ, संस्कार कथा आदि करवाने की विधि में पारंगत हो गये। प्रारम्भ में श्री बनवारी वैदिक और पौराणिक दोनों विधि से संस्कार करवाते थे। परन्तु स्वामी भवानी दयाल जी की सलाह से इन्होंने वैदिक विधि से ही धार्मिक कार्य करवाना उचित समझा।

पं. आर. बनवारी का सार्वजनिक जीवन बहुत प्रवृत्तिमय रहा है। अनेकों संस्थाओं से इनका सम्बन्ध रहा है। जब वे ग्लेंको में अध्यापक थे तो वहां के आर्य समाज के मंत्री थे। आर्य समाज, मेरित्सबर्ग के मुख्य कार्यकर्ता थे। वर्षों तक उसके संयुक्त मंत्री रहे। विद्या प्रचारिणी सभा के प्रधान तथा मंत्री रहे हैं। वेद धर्म सभा में बड़ी लगन से कार्य करते हैं। सन् 1940 से इस सभा के संयुक्त मंत्री हैं। वैदिक विद्या प्रचारक सभा के उपसभापति हैं। अन्य कई संस्थाओं के मंत्री, संरक्षक आदि रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के जेल प्रचारक तथा पुरोहित हैं। सारे द. अफ्रीका में वैदिक संस्कार करवाने जाते हैं। ग्लेंको, थोर्नबिल और पेंट्रिच में नि:शुल्क हिन्दी शिक्षा देते रहे थे। हिन्दी से पंडितजी को बड़ा प्रेम है। 1948 में अपने दो पुत्रों के साथ राष्ट्रभाषा प्रवेश की परीक्षा दी और तीनों उत्तीर्ण हो गये।

पं. जगमोहन जी

नाताल प्रांत की राजधानी मेरित्सबर्ग के आर्यकर्ताओं में पं. जगमोहन जी भी एक आकर्षक व्यक्ति हैं। पंडितजी ने मेरित्सबर्ग के आर्य सामाजिक जीवन को सदा जाग्रत बनाये रखा है। वे

उत्साही और जोशीले युवक कार्यकर्ता हैं।

पंडित जी का जन्म 1913 में वेरुलम में हुआ था। इनका परिवार गरीब था। बाल्यावस्था में ही पंडित जी के माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। जिससे उनको अपनी जीविका की चिन्ता सताती रही। इसी वजह से शिक्षा का भी अधोचित प्रबंध न हो सका। श्री जगमोहन जी स्वयमेव अध्ययन करने लगे।

पं. रलाराम जी जब इस देश में आये तो उनके व्याख्यानों का प्रभाव श्री जगमोहनजी पर बहुत हुआ और उन्होंने हिन्दू धर्म का विशेष अध्ययन करने के लिये भारतवर्ष जाने की ठानी। सन् 1935 में वे भारतवर्ष गये। वहां लाहौर के दयानन्द ब्राह्म विद्यालय में प्रविष्ट हो गये तथा पं. ऋषिराम जी से विद्या पाते रहे। 5 वर्ष तक उन्होंने यत्न से विद्याभ्यास किया और विद्यारत्न की उपाधि से विभूषित होकर सन् 1940 में दक्षिण अफ्रीका लौटे।

यहां आकर पंडित जी वेद धर्म सभा की हिन्दी पाठशाला के प्रधानाध्यापक हो गये और मेरित्सबर्ग की हिन्दू जनता में धार्मिक जागृति पैदा करने लगे। वहां की सामाजिक, धार्मिक और शिक्षा विषयक प्रायः सभी संस्थाओं से पंडितजी का सम्बन्ध है। वेद धर्म सभा और हिन्दू यूनाईटेड सर्विस ब्रिगेड के उपसभापति हैं। कई संस्थाओं के पुरोहित और प्रचारक हैं। उत्तर नाताल में जाकर कई बार प्रचार कार्य किया है। पंडित जी हिन्दी के प्रभावशाली वक्ता हैं। अपने विनम्र और सहृदयी स्वभाव के कारण वे सभी वर्गों में लोकप्रिय हैं। मेरित्सबर्ग में हिन्दी शिक्षा संघ के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं और उच्च परीक्षाओं की तैयारी करवाते हैं।

पं. वी. सी. नैनाराज

पं. वी. सी. नैनाराज का जन्म ता. 10 फरवरी 1891, मंगलवार को अमगेनी के पास के गांव में हुआ था। 1905 तक अंग्रेजी शिक्षा पायी। इस के पश्चात् हिन्दी, तमिल और तेलगू की शिक्षा भी पायी। श्री नैनाराज मद्रासी सज्जन हैं। इन तीनों भाषाओं का ज्ञान होने से इन्हें अपने कार्यों में अच्छी सफलता मिली है।

स्वामी शंकरानन्दजी से इन्होंने संध्या हवन और यज्ञ करना सीखा था। आर्य युवक सभा के संस्थापक सदस्य हैं और उसके सर्व प्रथम पुरोहित हैं। पं. नैनाराज वैदिक संस्कार, कथाएं और शुद्धियां करवाते हैं। तीन भारतीय भाषाओं का ज्ञान होने से मातृभाषा में संस्कारों का भावार्थ बतलाने में इनको पूरी सुविधा है। आर्य युवक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी यज्ञ पं. नैनाराज ही करवाते हैं। दयानन्द शताब्दी महोत्सव के समय जो महायज्ञ हुआ था उसके मुख्य पुरोहित पंडितजी ही थे। ऐसा महायज्ञ प्रथमवार हुआ था। डरबन की जेल में सभा की तरफ से सन् 1926 से धर्मोपदेश करने जाते हैं। हिन्दी और तमिल में कैदियों को उपदेश देते हैं और प्रार्थना करवाते हैं।

सन् 1912 में सीकाउलेक में पं. नैनाराज ने एक हिन्दी पाठशाला स्थापित की। वहां वे रात्रि को हिन्दी पढ़ाते थे। उसके विद्यार्थियों को लेकरआर्य मित्र मंडल स्थापित किया और 4 नवम्बर 1929 को आर्य युवक मंडल की स्थापना की। जिसके पंडित जी

सभापति रहे थे। इस स्थान पर बहुत से रूढ़िवादी लोग रहते थे। जिनसे पंडितजी को सदा टक्कर लेनी पड़ती थी। पर पंडित जी अपने कार्य में दृढ़ थे।

आर्य अनाथाश्रम की सेवा उसके स्थापनाकाल से पं.नैनाराज करते रहे हैं। आश्रम की व्यवस्थापक समिति के 1922 से पंडित जी सभापति हैं। बड़ी लगन से यह कार्य कर रहे हैं। पंडित जी तमिल, तेलगू और हिन्दी भाषी भारतीयों में एक से प्रिय हैं।

श्रीमान् आर. करपत

श्री आर. करपत का जन्म बेरुलम में 1 दिसम्बर 1907 को हुआ थ। 1 वर्ष की उम्र में ही इनके पिता का देहांत हो गया। जिससे मामा श्री एल. संपत ने इनका पालन पोषण किया। इन कठिनाइयों के कारण बालक करपत को ऊंची शिक्षा नहीं मिल सकी थी।

श्री आर. करपत 1922 में वेरुलम से खंडाला एस्टेट में निवास के लिये आ गये। यहां पर उन्होंने दो पौंड मासिक की फेरी करने की नौकरी स्वीकार कर ली। यद्यपि यह नौकरी बहुत मामूली थी पर श्री करपत अपनी लगन ओर बुद्धिमता से व्यापारी अनुभव पाने लगे। 1928 में उन्होंने स्वतंत्र रूप से व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश किया और दिनों-दिन अच्छी तरक्की करने लगे। आज वे अच्छे व्यापारी बन गये हैं।

आर्थिक स्थिति सुधरने पर श्री आर. करपत ने सार्वजनिक

जीवन में भी भाग लेना शुरु किया। 1929 में वे स्थानीय हिन्दू यंग मेन सोसायटी के कोषाध्यक्ष बने। फिर वे 1931 में खंडाला स्टेट हिन्दू संगठन के कोषाध्यक्ष बने। फिर तो वे इस संस्था में उत्तरोत्तर अधिक भाग लेने लगे। सन् 1936 में इसके प्रधान निर्वाचित हुए। आज इस संस्था के वे प्राण हैं। जब यह संस्था कर्ज के कारण बन्द हो जाने वाली थी तो श्री करपत ने श्री बी. एस. चैतू तथा श्री पी. चिरकृत के साथ इसे नीलाम होने से बचाया था। खंडाला स्टेट हिन्दू संगठन की तरफ से कन्या पाठशाला स्थापित करने में भी श्री करपत का बड़ा हाथ रहा है। वे इसके एक ट्रस्टी हैं। अपने घर पर एक हिन्दी पाठशाला भी चलाते हैं जिसमें 50 बच्चे पढ़ते हैं। श्री करपत मित्र नाटक मंडल तथा खंडाला स्टेट श्मशान के सभापति हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा कार्यकारिणी उपसमिति के सभापति हैं। अन्य कई संस्थाओं में भी सक्रिय भाग ले रहे हैं।

श्रीमान् बी. परमेश्वर

श्री बी. परमेश्वर भारतीय व्यापारियों में ऊंचा स्थान रखते हैं। साथ ही सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों में भी अग्रगण्य हैं। श्री बी. परमेश्वर का जन्म डरबन में सन् 1878 में हुआ था। अंग्रेजी की शिक्षा पाने के बाद ये व्यापारी क्षेत्र में उतर आये। सर्वप्रथम ग्रेविल में साझे में मिनरल वाटर वर्क्स का धन्धा चालू किया। इसी तरह एस.ए. स्वीट मेन्युफैक्चरिंग लिमिटेड कम्पनी खोली। इन दोनों क्षेत्रों में खूब आगे बढ़े और अच्छा पैसा कमाया। दूसरे व्यवसायों

में भी पूंजी लगाकर व्यापार बढ़ाते रहे।

सन् 1933 में श्री बी. परमेश्वर ने भारत वर्ष की यात्रा की और वहां कई आर्य संस्थाओं की मुलाकात ली। वहां से लौटकर अनेक आर्य संस्थाओं में कार्य करने लगे। कई संस्थाओं के ट्रस्टी और होद्देदार हैं। गांधी-टागोर-लेक्चरशिप ट्रस्ट में सक्रिय कार्य कर रहे हैं।

श्री बी. परमेश्वर भारतीय संस्कृति के प्रेमी हैं और आर्य समाज के प्रति उन्हें अगाध श्रद्धा है। समय-समय पर अनेक सामाजिक संस्थाओं को उदारता से दान देते आये हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के ट्रस्टी बने हैं। हिन्दी शिक्षा संघ के आजीवन संरक्षक हैं। आर्य समाज, वेस्टबिल, 1948-49 में आर्थिक संकट में आ गया था तब इन्होंने उसे उदार हृदय से दान देकर बचा लिया। श्री बी. परमेश्वर को भगवान ने विपुल धनराशि दी है। समाज को उनसे बड़ी आशाएं हैं। उनके बड़े पुत्र श्री सुखदेवानन्द भी उदार हृदय हैं। वे हिन्दी शिक्षा संघ के कोषाध्यक्ष हैं।

पं. राम सुन्दर पाठक

पं. राम सुन्दर पाठक उत्तर नाताल में आर्य समाज के मुख्य प्रचारक रहे हैं। पंडित जी आर्य समाज, डेनहाउज़र के सभापति कई वर्ष से रहे हैं। इसके पूर्व हिन्दी प्रचारिणी सभा के सभापति थे। लेडीस्मिथ में हुई द्वितीय वैदिक परिषदके वे स्वागताध्यक्ष थे। आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से लेडीस्मिथ की जेल में धर्मोपदेश का कार्य करते रहे हैं। सभा के पुरोहित भी नियुक्त हैं। लगन से आर्य समाज के प्रचार का कार्य कर रहे हैं।

श्रीयुत् आर. देवदत्त

श्री आर. देवदत्त का जन्म केटी मेनर में 12 अगस्त 1899 में हुआ। उस समय यहां शिक्षा की व्यवस्था न होने से इधर-उधर से कुछ पढ़ लिया। पं. पुदन महाराज से हिन्दी का अक्षर ज्ञान हुआ। बाद में अपने परिश्रम से अध्ययन करने लगे। श्री देवदत्त पुरातन रुढ़िवाद के अनुयायी थे परन्तु जब पं. ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार आर्य युवक सभा की तरफ से यहां प्रचार कर रहे थे तो पंडित जी के व्याख्यानों ने इनके जीवन को पलट दिया। फिर तो वे पक्के आर्य समाजी बन गये।

अपने मित्र स्व. एस. पदारथ के सहयोग से श्री आर. देवदत्त ने सन् 1921 में श्री सत्य वैदिक धर्म जिज्ञासा सभा (वर्तमान नाम-पेटो मेनर आर्य समाज) की स्थापना की इनके ही नेतृत्व में यह संस्था फूली फली। आज कई वर्षो से श्री देवदत्त इस आर्य समाज के प्रधान हैं और उसकी उन्नति में लगे रहते हैं। इनकी पत्नी तथा पुत्र आदि सारा परिवार वैदिक धर्म का अटल अनुयायी रहा है। श्री आर. देवदत्त इस समय आर्य प्रतिनिधि सभा के एक उपप्रधान भी हैं।

श्रीमान विट्ठल लाला

श्री विट्ठल लाला का जन्म भारतवर्ष के सूरत जिले के कडोद गांव में सन् 1888 में हुआ था। वे सन् 1895 में दक्षिण

अफ्रीका आकर लेडीस्मिथ में रहने लगे। लेडीस्मिथ में आर्य समाज का प्रचार कार्य करने में श्री विट्ठल भाई का भीबड़ा हाथ रहा है। लेडीस्मिथ आर्य समाज की स्थापना से उसके सदस्य रहे। तीन वर्ष तक सभापति भी निर्वाचित हुए। इस समय समाज के ट्रस्टी हैं।

सन् 1921 में इन्होंने लेडीस्मिथ में गुजराती-हिन्दी पाठशाला की स्थापना की और उसके संचालन में मुख्य हिस्सा लेते रहे। लेडीस्मिथ में 1925 में हुई द्वितीय वैदिक परिषद को सफल बनाने में इन्होंने बड़ा परिश्रम किया था। लेडीस्मिथ की अन्य कई संस्थाओं में भी अच्छा कार्य कर रहे हैं। वैदिक धर्म के प्रचार में आज तक दत्तचित्त हैं।

पंडित बी. तुलसीराम जी

पं. बी. तुलसीराम जी का जन्म ता. 15 सितम्बर 1903 को हुआ। पंडित जी के परिवार की आर्थिक हालत अच्छी न होने से इनकी पढ़ाई का अच्छा बन्दोबस्त नहीं हो सका। इसी कारण 12 वर्ष की उम्र में इन्हें नौकरी कर लेनी पड़ी। पं. अयोध्या प्रसाद से घर पर ही पं. तुलसीराम जी ने हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा पायी। प. भगवानदीन महाराज की पुत्री से सन् 1923 में इनका विवाह हुआ।

श्री सत्यदेवजी की प्रेरणा से पं. तुलसीरामजी ने आर्य समाज के क्षेत्र में काम करना शुरु किया। इन्हें धार्मिक कार्यों में श्रद्धा पैदा हुई। वे साप्ताहिक सत्संग में भाग लेने लगे। पंडित जी ने संस्कार

विधि का अध्ययन किया और वैदिक संस्कार शुद्ध रीति से कराने लगे। आर्य युवक सभा ने पंडित जी को संस्कृत और संस्कार की पद्धति सिखाने के काम पर नियुक्त किया। रात्रि के समय वे यह कार्य करते थे। पंडित जी का हिन्दी पर भी प्रेम है और कई युवकों को हिन्दी की शिक्षा देते रहे हैं।

पं. तुलसीराम जी ने कई संस्थाओं को अपनी सेवाएं दी हैं। केटो मेनर आर्य समाज के दो वर्ष मंत्री रहे। आर्य समाज, सिडनम के पुरोहित हैं। इन्होंने क्लेरस्टेट आर्य समाज की स्थापना की। इस समाज का साप्ताहिक सत्संग तथा हिन्दी पाठशाला अपने घर पर चलाते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा के पुरोहित है और उसकी पुरोहित समिति में मंत्री हैं। वैदिक संस्कार, वैदिक कथाएं और शुद्धियां पंडित जी के हाथों से जब तक होती रहती हैं। इन्होंने अन्त्येष्टि संस्कार पर विचार, सत्य सनातन धर्म क्या है? और वैदिक सन्ध्या नामक तीन पुस्तिकाएं स्वपरिश्रम से तैयार करके आर्य समाज, सिडनम के नाम से वितरित की हैं।

elibrary.theaaryasamaj.org

श्रीमान जी. मेढई

श्री जी. मेढ़ई आर्य समाज के पुराने कार्यकर्ता हैं। प्रो. भाई परमानन्द जी के आगमन समय से धार्मिक कार्यों में रस लेते रहे हैं। क्लेस्टेट में हिन्दी आर्य आश्रम की स्थापना स्वामी भवानी दयाल जी ने की थी। श्री मेढई इसके ट्रस्टी थे। वहां की वेद धर्म सभा में भी कार्य करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों में भी सदा

सहयोग देते आये हैं। उसके लिये चन्दा इकट्ठा करने में साथ देते रहे हैं। खुद भी सभा के एक ट्रस्टी हैं। श्री मेढई ने अपने एक पुत्र श्री हरिशंकर को यहां से गुरुकुल कांगड़ी पढ़ने के लिये भेजा था। वे वहां से आयुर्वेदालंकार की उपाधि लेकर स्नातक हुए हैं। यहां पर दो साल तक रहकर श्री हरिशंकर पुनः भारत में विद्याध्ययन के लिये गये हुए हैं।

स्व. आर. के. केपिटन

स्व. आर. के. केपिटन का जन्म गुजरात प्रांत के नवसारी शहर में सन् 1892 में हुआ था। सन् 1904 में श्री केपिटन स्वदेश से व्यापार करने के लिए परिवार सहित इस देश में आये। उन्होंने डरबन में अपना होटल खोला। इससे उन्हें अच्छा धन प्राप्त हुआ। श्री केपिटन के हृदय में आर्य समाज और स्वामी दयानन्द के प्रति गहरी भक्ति पैदा हुई। अपने बड़े पुत्र श्री हरिश्चन्द्र को गुरुकुल कांगड़ी में तथा दो पुत्रियों को जालन्धर कन्या महाविद्यालय में शिक्षा पाने के लिए भेजा।

इस देश में भी केपिटन आर्य समाज के कार्यों में सक्रिय सहयोग देने लगे। ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव के वे स्वागताध्यक्ष थे। प्रतिनिधि सभा की स्थापना में उनसे बड़ी मदद मिली। वे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी निर्वाचित हुए थे। कई वर्षों तक सभा के कोषाध्यक्ष पद पर रहे। सभा भवन के लिये जब भूमि खरीदनी थी तो श्री केपिटन ने ही अपना उदार हाथ सर्वप्रथम

बढ़ाया था। धार्मिक और सामाजिक कार्यों में वे समय-समय पर आर्थिक सहायता देते रहते थे।

सन् 1934 में बड़ौदा के आर्य कन्या महाविद्यालय की छात्राएं पं. आनन्द प्रियजी के नेतृत्व में यहां आयी थीं। तब उनकी व्यवस्था और प्रचार यात्रा की जिम्मेदारी श्री केपिटन के कन्धों पर ही थीं। उस समय वे अपने रोजगार को भी छोड़कर उन्हें हर प्रकार की सहायता पहुंचाते रहे। प्रो. यशपाल के आतिथ्य सत्कार का भार भी श्री केपिटन ही उठाकर सभा को चिन्ता मुक्त किया था। सन् 1936 में श्री केपिटन जोहानसबर्ग में अपना होटल संभालने चले गये थे। ता. 20 जून 1940 को श्री केपिटन का अकाल अवसान हो गया। उनके निधन से दक्षिण अफ्रीका में आर्य समाज को गहरी क्षति हुई है। श्री केपिटन निडर और उत्साही आर्य सज्जन थे। वे विधर्मियों की धमकियों के वश न होकर अपने काम में डटे रहते थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिश्चन्द्र भी आर्य समाज के कार्यों में रस लेते हैं। वे प्रतिनिधि सभा के ट्रस्टी भी बने हैं।

स्व. वासुदेव बोधासिंह

स्व. बासुदेव बोधासिंह का जन्म सन् 1893 में हुआ था। ये श्री बोधासिंह के तीसरे पुत्र थे। श्री वासुदेव ने डरबन के हाई ग्रेड स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। फिर वे अपने पिता को कृषि-कार्य में मदद देते रहे। श्री बोधासिंह गन्ने की खेती करने वाले भारतीयों मे एक मुख्य कृषिकार थे। स्टेंगर में इनकी विशाल

जमीन है। श्री बासुदेव उसकी निगरानी करने लगे।

सन् 1937 में श्री बासुदेव डरबन में रहने के लिये आये और वे आर्य समाज के कार्यों में हिस्सा लेने लगे। सन् 1938 में आर्य प्रतिनिधि सभा के सभापति भी निर्वाचित हुए। इनकी अध्यक्षता में जो वैदिक परिषद हुई थी उसमें हिन्दू महासभा को पुनरुजीवित किया गया था। प्रतिनिधि सभा ने अपनी भूमि खरीदी थी, उसका कर्ज था, इस कर्ज को अदा करने के लिये श्री बी. बोधा सिंह ने काफी यत्न किया था। बाद में व्यवसाय के लिये उन्हें पुनः स्टेंगर चला जाना पड़ा। वहां से भी वे सभा के कार्यों में रस लेते रहे थे। सन् 1939 में हृदय की गति रुक जाने से श्री बी. बोधा सिंह का स्वर्गवास हो गया। इससे आर्य संसार को गहरा धक्का लगा। परन्तु अपने पीछे वे अपने परिवार में धार्मिक श्रद्धा छोड़ गये। इसी के फल स्वरूप श्री आर. बोधा सिंह आज सभा के प्रधान के पद पर स्थित हैं।

स्व. बाबू रघुनाथ सिंह

उत्तर नाताल के कार्यकर्ताओं में स्व. बाबू रघुनाथ सिंह का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बाबू जी लेडीस्मिथ के निवासी थे। ता. 16 अप्रैल 1916 में यहां नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित हुई थी जो बाद में आर्य समाज, लेडीस्मिथ के रूप में बदल गयी। बाबू रघुनाथ सिंह जी कई वर्ष तक इस संस्था के सभापति रहे।

द. अ. ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव में हुई प्रथम

वैदिक परिषद के सभापति श्री रघुनाथ सिंह थे। इस उत्सव में महायज्ञ हुआ था, उसका सारा व्यय इन्होंने दिया था। बाबू जी के प्रयत्नों से ही लेडीस्मिथ में दूसरी वैदिक परिषद हुई थी। उसका भी सम्पूर्ण व्यय इन्होंने उठाया था। लेडीस्मिथ में पं. भवानी दयाल जी के उद्योग से सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन सन् 1916 में हुआ था। इसके स्वागताध्यक्ष बाबू रघुनाथ सिंह थे। इनके प्रयत्न से वह सम्मेलन सफल हो सका था। बाबू जी प्रतिनिधि सभा की तरफ से जेल प्रचारक का कार्य भी करते रहे। हृदय की गति के रुक जाने से बाबू जी का स्वर्गवास हो गया। आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने मे बाबू जी का प्रयत्न स्मरणीय रहा है।

स्व. बी. सुखदेव सिंह

स्व. बी. सुखदेव सिंह डरबन निवासी हैं। इनकी प्रतिभा व्यापार में खूब चमकी थी। प्रारम्भ में वे अपने भाईयों के साथ व्यापार करने लगे थे उसके बाद स्व. बी. एम. सिंह के साझीदार हुए। उनके स्वर्गवास होने पर स्व. सुखदेव सिंह सारे व्यापार के मालिक हो गये। अपनी प्रतिभा और परिश्रम से व्यापार में अधिकाधिक उन्नति करने लगे।

व्यापार के साथ ही स्व. सुखदेव सिंह सामाजिक कार्यों में भी भाग लेने लगे। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्य में रस लेते थे। उसके ट्रस्टी भी बने। आर्य अनाथाश्रम के संचालन में इनका अच्छा सहयोग मिला है। शक्ति अनुसार विभिन्न सस्थाओं को दान भी देते

आये हैं। आर्य समाज, केटोमेनर को भवन के लिये जमीन का टुकड़ा खरीद कर दिया है, पर अभी उसकी रजिस्ट्र नहीं हुई है। यहां पर आर्य समाज का भवन बनाने के लिये भी आपने बिल में लिखा है। जिसके लिये 2000 पौंड का दान ट्रस्टियों के विचाराधीन है। श्री सुखदेव सिंह के स्वर्गवास से आर्य समाज की बड़ी क्षति पहुंची है।

स्व. आर. रामकैलास

श्री आर. रामकैलास का जन्म मेरित्सबर्ग में हुआ था। वहीं पर शिक्षा पायी। फिर वहां से डरबन आ गये। डरबन में छोटी मात्रा में व्यापार करना शुरू किया। तब ये अंग्रेजी और हिन्दी का भी अभ्यास करते रहे थे । पं. ईश्वरदत्त जी विद्यालंकार ने इनका विवाह संस्कार करवाया था। पंडित जी के व्याख्यानों से आर्य समाज के प्रति गहरी रुचि हुई और सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे।

आर्य युवक सभा के द्वारा श्री रामकैलास ने अपना सार्वजनिक जीवन शुरू किया था। कई वर्ष तक इस सभा के मंत्री रहे और चार वर्ष तक सभापति भी रहे थे। वैदिक सिद्धान्तों के अच्छे प्रेमी थे और उत्साही कार्यकर्ता थे। हृदय की गति रुकने से इनका अवसान हुआ और वे अपने कार्यों की स्मृति छोड़कर चल बसे।

स्व. बी. बेचू

एक निर्धन कुटुम्ब में 19 जनवरी 1892 के दिन एक बालक का जन्म हुआ। इस बालक के पढ़ने, लिखने की कोई सुविधा न थी और बचपन से ही मजदूरी गले पड़ी थी। यह बालक श्री बी. बेचू था। जिसने बड़े होने पर आर्य समाज के क्षेत्र में अच्छा नाम पैदा किया। श्री बेचू के परिवार के लोग शिवनारायण पंथी थे। स्वपरिश्रम से और लगन से स्व. बी. बेचू ने यहां वहां से हिन्दी और अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त कर ली। साथ ही मजदूरी करते हुए वे भवन निर्माण कला में भी निपुण हो गये और वे भारतीय कारीगर और ठेकेदार हो गये। इसमें उन्हें अच्छी ख्याति मिली।

रायकोपिस में आकर श्री बी. बेचू विद्या प्रचारिणी सभा के सदस्य हो गये। यहां उन्हें सत्यार्थ प्रकाश और अन्य वैदिक साहित्य पढ़ने का सुयोग हुआ। जिससे वे पक्के आर्य समाजी बन गये। अध्ययन और परिश्रम से उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का तथा हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। वे हिन्दी में कविता भी करने लगे थे। साहित्य प्रचार की ओर उनकी रुचि निरन्तर बढ़ती गयी। इन्होंने श्री बी. बेचू वैदिक साहित्य प्रचार निधि कायम की थी। इस निधि से वैदिक साहित्य का प्रचार होता था। भिन्न-भिन्न विषयों पर ट्रैक्ट छापकर लागत दाम से बांटे जाते थे। आर्य समाज के क्षेत्र में यहां यह एक पहला प्रयत्न था।

श्री बी. बेचू केटोमेनर आर्य समाज के प्रधान तथा ट्रस्टी रह

चुके थे। प्रतिनिधि सभा के भी ट्रस्टी व पुरोहित थे। गांधी-टागोर-लेक्चरशिप-ट्रस्ट के भी एक सदस्य रहे थे। श्री बी. बेचू ने विभिन्न संस्थाओं को यथा शक्ति उदार हृदय से दान भी किया है। ता. 14 सितम्बर 1947 को उनका निधन हो गया। आर्य समाज ने अपना एक उत्साही कार्यकर्ता खो दिया।

स्व. हंस मेघराज

श्री हंस मेघराज का जन्म 31 मार्च 1909 को डरबन में हुआ। शिक्षा पाने के बाद दलाली का धन्धा करने लगे। इसमें इन्होंने शनैः शनैः बहुत तरक्की कर ली और छोटी उम्र में काफी द्रव्योपार्जन किया। श्री हंस कई वर्ष तक यंग मेन आर्य समाज के मंत्री रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री रहकर भी सेवा कार्य करते रहे। सभा के भवन के लिये भूमि खरीदने में इनका प्रयत्न बहुत रहा है। ता. 4 दिसम्बर 1944 के दिन अकस्मान् हृदय की गति रुक जाने से इनका अवसान हो गया। इनसे समाज को बड़ी आशाएं थीं।

स्व. बाबू पद्म सिंह

स्व. भाई परमानन्द जी दक्षिण अफ्रीका में सर्व प्रथम प्रचारक के रूप में 1905 में आये थे। उनके आगमन से भी पूर्व

कई आर्य सज्जन यहां बसने के लिये आ चुके थे। उनमें से बाबू पद्म सिंह एक थे। ये मेरित्सबर्ग में रहते थे। यहां पर कई सज्जनों की मदद से बाबू पद्म सिंह ने गुलजार सभा की स्थापना की थी। 1904 में इस सभा का नाम परिवर्तित कर आर्य समाज, मेरित्सबर्ग रखा गया था। यह आर्य समाज दक्षिण अफ्रीका का सर्वप्रथम आर्य समाज था। स्वामी शंकरानन्दजी ने बाद में इस समाज का नाम वेद धर्म सभा रखा, जोकि आज भी जीवित जाग्रत संस्था है।

बाबू पद्म सिंह इस आर्य समाज के सभापति थे। वेद धर्म सभा के भी वे प्रधान कार्यकर्ता रहे थे। सभा की तरफ से ''वैदिक आश्रम'' स्थापित किया गया था। उसमे बाबू जी परिवार सहित रहकर कार्य करते थे। इसी आश्रम में द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन 1917 मे हुआ था। जिसके लिये बाबू पद्म सिंह ने बहुत परिश्रम किया था।

उसके बाद बाबू पद्म सिंह भारत चले गये थे। वहां कई वर्ष रहकर पुनः इस देश में आये और डरबन में सपरिवार रहने लगे। यहां के डरबन आर्य समाज के सभापति थे। सन् 1942 की वैदिक परिषद का उद्घाटन बाबू जी ने ही किया था । ता. 14 अगस्त 1948 को उनका देहान्त हो गया और अपने सदाचारी, धार्मिक जीवन का असर छोड़कर चले गये।

अध्याय चौदहवाँ

– + –

उपसंहार

इस इतिहास का प्रारम्भ करते हुए हमने लिखा था कि सन् 1834 का वर्ष भारतवर्ष के लिये बड़े दुर्भाग्य का था। पुस्तक के अन्त में हम लिखना चाहते हैं, उस वर्ष को हम लोग भारतीयों के इतिहास में सौभाग्य के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं। प्राचीन भारत में प्राय: सभी देशों में हमारे पूर्वज गये। उन्होंने वहां पर हमारी संस्कृति और विद्या फैलायी। मध्यकाल में परदेश गमन बंद हो गया। सन् 1834 में दूसरे ही रूप में भारतीय संतान परदेशों में पहुंची।

हमारा यह इतिहास बतलाता है कि हम अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में कैसे परिवर्तित कर सकते हैं। ऐसा करना हमारे अपने हाथ में है। संसार में जहां-जहां भारतीय लोग बसे हैं यदि यह संकल्प कर लें कि हम अपनी आर्य संस्कृति और भारतीय सभ्यता की रक्षा करेंगे और उस पर अमल करेंगे तो यह कार्य सहज हो सकता है। आज दुनिया स्वतंत्र भारत से नया सन्देश चाहती है। उपनिवेशों में बसे हुए हम भारतीय उसके सन्देश वाहक हो सकते हैं। यदि भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति का श्रेष्ठ स्वरूप प्रकट करेंगे तो संसार में पुन: पूर्व की ज्योति फैलती नज़र आवेगी। सभी उपनिवेशों के भारतीय लोगों में पुर्नजागरण हो रहा है। दक्षिण

अफ्रीका में भी यह जागरण हुआ है। उसी जागरण का यह संक्षिप्त इतिहास दिया गया है।

हमारे इस जागरण के प्रयत्नों में क्या-क्या कमियां रही हैं और किन-किन बातों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उसका हम यहां दिग्दर्शन कराना चाहते हैं। ये बातें दक्षिण अफ्रीका के लिये हैं, परन्तु कम या अधिक मात्रा में सभी उपनिवेशों के सम्बन्ध में भी लागू हो सकती है।

आर्थिक समस्या

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न आर्थिक है। कोई भी योजना, कोई भी कार्यक्रम या कोई भी सूचना हो उसके लिये धन की बहुत आवश्यकता रहती है। विदेशों में बसे हुए भारतीय लोगों के पास पैसा है। इस सम्बन्ध में वे भारत देश की जनता से अच्छी स्थिति में हैं। फिर भी उपनिवेशों का साधारण वर्ग अपने यहां की जीवन तुला के अनुसार गरीब ही कहा जावेगा। ऐसी दशा में यहां का पैसा यहीं के धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में लगना चाहिये। साधारणतः आज तक यह हुआ है कि भारत से अनेक संस्था, पाठशाला, धर्म स्थान और धर्मशाला के लोग तथा प्रचारक यहां आये और चंदा करके ले गये। इसका परिणाम यह हुआ कि यहां का कार्य बहुत पिछड़ गया। उपनिवेशों के भारतीय संस्कृति, शिक्षा, धर्म, धर्मस्थान आदि में इतने पिछड़े हुए हैं कि यहां का द्रव्य यहीं पर खर्च होना चाहिये। यहां से भारत को चंदा जाना एकदम बंद हो जाना चाहिये। सिर्फ विदेशों में प्रचार की योजनाओं के लिये ही यहां से द्रव्य देना चाहिये। उपनिवेशों में मातृभाषा की पाठशालाओं की, धर्मस्थानों

की, पुस्तकालयों और वाचनालयों की, धर्मशालाओं की अनाथाश्रमों की तथा योग्य अध्यापकों एवं प्रचारकों को रखने की कितनी बड़ी आवश्यकता है। यहां का पैसा यहां के ऐसे ही कार्यों में लगना चाहिये। इसके लिये भारत से आने वाले महानुभावों, संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की तथा यहां के लोगों को भी गम्भीर रूप से ध्यान देने की जरूरत है। भारत से सुदूर इन प्रदेशों में अपनी संस्कृति, सभ्यता मातृभाषा और धर्म की रक्षा के लिये यहां बसे हुए भारतीयों को भी उदारता से धन देना चाहिये। धर्म की रक्षा तप, त्याग और बलिदान पर ही निर्भर है।

भवन की आवश्यकता

भावी कार्यक्रम को सोचते हुए सार्वजनिक भवनों की बहुत जरूरत है। हर एक बस्ती में एक ऐसा भवन खड़ा करना चाहिये जहां सार्वजनिक कार्य हो सके। एक बस्ती की दो-तीन संस्थाएं मिलकर भी ऐसा भवन बना सकती हैं। यह भवन चाहे वेद मंदिर हो, चाहे अन्य मंदिर या चाहे पाठशाला हो, इसमें सभी तरह की सुविधाएं होनी चाहिये। जैसे सार्वजनिक सभा के लिये हॉल हो। मातृभाषा की पढ़ाई के लिये व्यवस्था हो। पुस्तकालय-वाचनालय के लिये सुविधा हो। यज्ञ, पूजा आदि के लिये एवं अतिथिशाला के लिये हो सके तो पृथक् कमरे हों। हर एक संस्था को अपनी पूरी कोशिश से ऐसा भवन बना लेना चाहिये। तभी स्थिरता से प्रचार का एवं पाठशाला का काम हो सकेगा। इसी के साथ किराये पर दिया जा सके, ऐसा मकान भी हो तो अधिक अच्छा होगा। उससे आवश्यक खर्च निभ सकेंगे। द्रव्य की चिंता कम हो जावेगी और

elibrary.theaaryasamaj.org

प्रचार पर ध्यान दिया जा सकेगा। निरन्तर के प्रयत्न, श्रद्धा एवं सेवा भाव से यह कार्य हो सकता है।

मातृभाषा की पाठशाला

स्वसंस्कृति और धर्म की रक्षा के लिये मातृभाषा की पढ़ाई की कितनी आवश्यकता है इस पर लिखने की जरूरत नहीं है। हर एक संस्थाको ऐसी पाठशाला चालू करनी चाहिये। जहां सम्भव हो नवयुवकों के लिये रात्रि पाठशाला तथा बहनों के लिये स्त्री पाठशाला का भी प्रबंध किया जावे। आज तो सारे देश में मातृभाषा की माध्यमिक श्रेणियों की पढ़ाई की व्यवस्था करने वाली एक भी पाठशाला नहीं है। कितनी बड़ी कमी है यह।

प्रचारक

प्रचार का बहुत कुछ कार्य प्रचारकों पर निर्भर है। प्रचारक धर्म का अच्छा ज्ञाता, मातृभाषा का विद्वान् एवं सेवाभावी होना चाहिये। ऐसे प्रचारक को पूरा वेतन मिलना चाहिये। जिससे वह अपना कार्य बिना दूसरी चिन्ता के कर सके। यह प्रचारक पुरोहित, अध्यापक और ग्रंथपाल का कार्य कर सकता है। आज तो ऐसे विद्वान प्रचारकों का एकदम अभाव है। सब संस्थाएं भारतवर्ष से प्रचारक नहीं बुला सकतीं। इसके लिये केन्द्रीय संस्था को देश से योग्य विद्वान बुलाकर नवयुवकों के लिये वर्ग चलाकर आवश्यक प्रचारक तैयार करने चाहिये। इस तरह यह कमी दूर हो सकती है।

पुस्तकालय और वाचनालय

हर बस्ती में एक छोटा-मोटा पुस्तकालय होना चाहिए। जिसमें मातृभाषाओं की तथा अंग्रेजी की चुन चुनकर पुस्तकें रखी

जानी चाहिए। इनमें धार्मिक, सामाजिक जीवन-चरित्र, बाल-साहित्य, इतिहास आदि विषयों की पुस्तकें रखी जावें। इसी तरह योग्य समाचार पत्र मंगाए जाने चाहिए। आज तो ऐसे पुस्तकालय और वाचनालय कहीं नहीं हैं। स्वाध्याय, अध्ययन और पठन के बिना सच्चा ज्ञान कहां?

इसी के साथ केन्द्रीय संस्थाओं (जैसे आर्य प्रतिनिधि सभा, हिन्दू महा सभा आदि) के पास बृहद् पुस्तकालय होने चाहिए। जिसमें सभी तरह की पुस्तकें मिल सकें। आज तो किसी विषय के अनुशीलन के लिए या प्रमाण के लिए कोई पुस्तक चाहिए तो सारे दक्षिण अफ्रीका में खोजने पर भी शायद ही कोई अच्छी पुस्तक मिल सके। यह कमी अवश्य दूर होनी चाहिए।

पुस्तिकाएं (ट्रेक्ट) तथा पत्र-पत्रिकाएं

प्रचार का एब बहुत बड़ा साधन पुस्तिकाओं (ट्रेक्ट) का प्रकाशन है। सामान्य जनता में जिस विचार धारा को फैलाना हो, उस पर मातृभाषाओं में तथा अंग्रेजी में छोटी-छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित करनी चाहिए। भिन्न विषयों पर ऐसी पुस्तिकाओं के प्रकाशन से जन समाज को जाग्रत रख सकते हैं। आज के युग में समाचार-पत्र एक प्रधान शक्ति है। उसके महत्व को जानते हुए भी भारतीय जनता का एक भी दैनिक न होना या मातृभाषा के पत्र का अभाव अखरने वाली चीज है।

भजन मंडल

जहां सम्भव हो भजन मंडल का संगीत मंडल बनाए जावें। संगीत भी प्रचार का अच्छा साधन है। भारतीय संगीत ने विदेशों में

अपनी संस्कृति की रक्षा में अच्छा सहयोग दिया है। संगीत, भजन आदि की तरफ लोगों की भी अच्छी रुचि होती है। अच्छे भजनों के संग्रह प्रकाशित किये जाने चाहिए। संवाद, नाटक और अभिनय द्वारा भी जन जागृति में काफी सहायता मिलती है। सिनेमा या चल चित्रों के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु उपनिवेशों में जहां की भारतीय जनता स्वदेश के दर्शन नहीं करने पायी है, उसके रीति रिवाज, पहिनावे और उठने-बैठने के ढंग से भी अपरिचित है। वहां सिनेमाओं ने भारतीयता को कायम करने में बड़ा सहयोग दिया है। हिन्दी को जिलाने और लोकप्रिय बनाने में सिनेमा का बहुत बड़ा हिस्सा है। योजना पूर्वक सिनेमा द्वारा अच्छा लाभ मिल सके इस पर विचार होना चाहिये।

व्यायामशाला

बालकों और नवयुवकों में व्यायाम के प्रचार की बहुत आवश्यकता है। आर्यवीर दल या महावीर दल की योजनाएं होनी चाहिये। हमारी सभाओं में,उत्सवों और प्रदर्शनों में निमंत्रण और शिस्त (डिसीप्लीन) की कितनी कमी होती है। इसके लिये योग्य स्वयं सेवक भी नहीं मिलते। व्यायामशाला की प्रवृत्ति से यह कमी दूर हो सकती है।

त्योहार, सत्संग तथा धार्मिक कार्य

जातीय जीवन की उन्नति में त्योहारों और महापुरुषों की जयन्तियों का बहुत बड़ हिस्सा है। त्योहार संगठित रूप से मनाने चाहिये, पर साथ ही घर-घर में, प्रत्येक परिवार में उसे मनाने की प्रवृत्ति हो ऐसी योजना होनी चाहिये। जिससे जन समाज यह समझ

सके कि यह हमारी विशेषता है और हम अपना धार्मिक कार्य कर रहे हैं। इसी तरह साप्ताहिक सत्संग, रामायण, महाभारत की कथाएं उपनिषद के प्रवचन गीता, जयन्ती आदि का प्रचलन बढ़ाना चाहिये। इनसे धार्मिक जीवन जाग्रत रहता है।

सेवा के कार्य

सेवा की महिमा बहुत है। उसका प्रभाव भी अनोखा है। सेवा के लिये क्षेत्र भी बहुत है। दीन दु:खियों की मदद करना,अवलाओं को सहायता देना, अनाथ बच्चों का रक्षण करना, उनकी शिक्षा की व्यवस्था करना, होनहार बच्चों को छात्रवृत्ति देना, बालकों के लिये खास नि:शुल्क दवाखाने चालू करना, सार्वजनिक अस्पतालों में रोगियों को मदद पहुंचाना और उनके स्वास्थ्य के लिये कामना करना आदि अनेक कार्य हैं जिन्हें संस्थाएं, प्रचारक और स्वयं सेवक दल कर सकते हैं।

स्त्री शिक्षा

भावी समाज के निर्माण में तथा योग्य नागरिकों को तैयार करने में स्त्रियों को तैयार करने में स्त्रियों की जिम्मेदारी बहुत बड़ी रहती है। जहां का स्त्री समाज उन्नत नहीं, वहां अच्छे समाज की कल्पना भी नहीं हो सकती। यदि स्त्रियां अपने घरों में, कुटुंबियों में स्वधर्म, रीति रिवाज और मातृभाषा का व्यवहार रखे तो जातीय जीवन में इनका नाश नहीं हो सकता। इसलिए स्त्रियों को शिक्षा देने की बहुत आवश्यकता है। प्राय: सभी बस्तियों में स्त्री समाज, महिला मंडल, कन्या पाठशाला या ऐसी संस्थाएं होनी चाहिये।

वे बाते हैं जिन पर हमारी भावी उन्नति निर्भर है। इनसे हमारा

जातीय जीवन सुरक्षित और स्थिर रह सकता है। यह संभव नहीं है कि हर एक संस्था इन कार्यक्रमों का तुरन्त अमल करना शुरू कर देवे। पर इस तरफ बहुत गम्भीरता से ध्यान देने की जरूरत है। आज भी कई संस्थाएं हैं जो इन बातों पर ध्यान देती हैं और अपनी शक्ति के अनुसार कार्य कर रही हैं। सभी को इस ओर विशेष सजग रहना चाहिये।

कार्यकर्ता

इन कार्यक्रमों के प्रचार के लिये कार्यकर्ताओं को तत्पर रहना चाहिये। कार्यकताओं के प्रसार के झगड़े और कलह प्रगति मे बाधक है। बड़े बनने की इच्छा और पदाधिकारी होने का लोभ झगड़ों का एक कारण है। कार्यकर्ता तो जनता के सेवक हैं इसलिये पदाधिकारी बनने में गौरव नहीं अपितु सच्चे सेवक बनने में गौरव है। झगड़े प्रायः सर्वत्र होते हैं उन्हें टालने की कोशिश करनी चाहिये। तथा व्यक्तिगत झगड़ों को संस्था में नहीं खींच लाना चाहिये। एक ही व्यक्ति कई संस्थाओं में कई पद पर बैठ जाता है। इससे एक तो वह सब ओर ध्यान नहीं दे सकता दूसरे उत्साही युवकों को आगे बढ़ने से रोकता है। ऐसे लोभ को भी छोड़ना चाहिये। कई बार पदाधिकारियों के आलस्य से प्रायः बहुत से काम रुक जाते हैं। एक बार किसी पद को स्वीकार किया जो अपने कर्त्तव्य को, उत्तरदायित्व को सच्चे रूप से निभाना चाहिये।

यहां के भारतीयों में मतमतान्तरों के एवं प्रादेशिक विभागों के झगड़े भी प्रायः खड़े होते रहते हैं। इनसे भी बचना चाहिये। एक बात समझ लेनी चाहिये, कि मतभेद प्रायः सर्वत्र देखा जाता है

इसको दूर करने का उपाय परस्पर सहिष्णुता और सहयोग है। विरोधी को दुर्वचन और क्रोध से नहीं जीता जा सकता। धार्मिक मन्तव्यों के मतभेद भी समझदारी से दूर करने की कोशिश हानी चाहिये। अध्ययन, स्वाध्याय और अनुभव से ऐसे मतभेद दूर हो जाते हैं। फूंक मारकर उन्हें उकसाना नहीं चाहिये। इसी तरह प्रांतीय और प्रादेशिक मतभेदों को भी भुलाना चाहिये। विदेशों मे बसे हुए भारतीय सब एक मातृभूमि के निवासी हैं। वे सब भारतीय हैं। पंजाबी, बिहारी,आन्ध्रवासी या तमिलनाडु वासी अथवा गुजराती आदि के अपने भेद दूर करने चाहिये। एक के दोष से सारी जाति को कोसने की प्रथा आम है इससे बचना चाहिये। इसी में हमारा कल्याण है।

आर्य प्रतिनिधि सभा की रजत जयन्ती का शुभ अवसर है। प्रतिनिधि सभा के सदस्य तो आर्य जाति के इस इतिहास पर एवं भावी कार्यक्रम पर गम्भीरता से विचार करेंगे ही, साथ ही अन्य लोग भी इसका मनन करेंगे और अपने समाज की, धर्म की तथा संस्कृति की रक्षा के लिये प्रयत्नशील रहेंगे।

-:+:-